स्त्रीजातक
खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई

राजज्यौतिषिकपण्डितवर्यश्रीश्यामलालसंगृहीतम् एवं
श्यामसुन्दरीहिन्दीटीकया समलंकृतम्

स्त्रीजातकम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

ग्रन्थारम्भोद्देशः

नाथ क्षितौ प्रचलितास्तव संगृहीता
ग्रंथा मुदे कृतधियां विलसंति नूनम् ।
तानाकलय्य पुरुषोपकृतौ समर्थान्स्त्री-
जातकं रचयितुं नवमस्मि याचे ॥१॥
येन स्त्रियाः सुभगदुर्भगतावबोधः
सम्यग्भवेत्तदुपकारविधौ पटीयान् ।
इत्थं प्रियानिगदितं वचनं निशम्य
श्रीश्यामलाल उपजातमतिस्तदर्थे ॥२॥
प्राह प्रियां प्रणयिनीं प्रणयेन नूनं
क्रीतोऽस्मि ते कृतपरोपकृतौ प्रयत्नात् ।
यच्चासि तत्स्मर समर्थमभीप्सितार्थ-
पूर्तौ स्मरामि खलु देवमहं सदीढ्यम् ॥३॥
यस्त्रातुं किल गोपवृंदमभितो दर्पं दलज्जैष्णवं
वर्षोप्लवतो नगेन्द्रमखिलं गोवर्द्धनं लीलया ।
उत्तोल्याधिकनिष्ठकं दधदसावासीदहःसप्तकं
पर्य्याप्तो नितरामभीप्सितकृते ते सोस्तु देवः प्रिये ॥४॥

भूमिका

ज्योतिर्विनोदरसिकान्विज्ञापयामि

श्रीकृष्णचन्द, आनंदकन्द, नन्दनन्दन भक्तनहितकारी, असुरसंहारी, इन्द्रमदहारी, श्रीगोवर्द्धनधारी मुरारी के चरणकमल का ध्यान करके पहले आर्यावर्तनिवासी परम कृपालु विद्वानों के पादारविन्दों को नमस्कार हाथ जोड़कर करता हूं। अब देखना चाहिये कि, परब्रह्म परमेश्वर ने इस असार संसार में कैसी कैसी अद्‌भुत विद्यायें जगद्धितार्थ बनाई हैं कि, जिनके जानने से इन पंचतत्वोंकरके रचित मनुष्य का शरीर ब्रह्मदेवकृत चौरासी लाख में अग्रणीय गिना जाता है और बहुधा इन विद्याओं के ज्ञाता मनुष्य में भी देवताओं के समान पूजनीय हो जाते हैं और राजा महाराजा उनका अधिक सन्मान किया करते हैं। इस समय अन्य विद्याओं के वर्णन करने का कुछ प्रयोजन नहीं है। केवल संसार के हित करनेवाले संपूर्ण धर्मों की मूल ज्योतिषविद्या के विषय में निवेदन किया जाता है। जिस होराशास्त्र के जानने से त्रिकालदर्शी हर एक प्राणीमात्र का शुभाशुभ फल तीनों जन्म का बतलाया करते हैं और इस विद्या के नियमों पर चलनेवाले सत्पुरुषों को कोई भी दुःख नहीं होता है इसमें सिद्धांत, संहिता, होरा जातक, ताजक, प्रश्न, मुहूर्त इत्यादि अनेक भेद वर्णन किये हैं तिनमें जातकभाग को सब संसारी मनुष्य सबसे अच्छा मानते हैं क्योंकि जातक द्वारा मनुष्य का भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान तीनों समय का यथोचित फल कहा जाता है, उसके दो भेद हैं। एक मनुष्यजातक, दूसरा स्त्रीजातक, सो

पहिले मनुष्यजातक विषय का 'ज्योतिषश्यामसंग्रह' नामक ग्रंथ पुरुषों की जन्मपत्र के फल के हितार्थ संवत् १९५३ में नवीन बनाकर श्रीसेठ गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी के कल्याण, बम्बई "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" यन्त्रालय में छपाकर प्रकाशित कर चुका हूँ। अब स्त्रियों के फलहितार्थ श्रीमन्महाराजाधिराज वीरशिरोमणि धर्मधुरन्धर कहलूरदेशाधिपति विलासपुराधीश श्री १०८ महाराज विजयचन्द्रजू देव की सहायता से ये **'स्त्रीजातक'** नामक ग्रंथ वसिष्ठ, वृद्धयवन, शौनक, गर्ग, पितामह, नरपति, श्रीपति, स्कन्द, वराहमिहिर, गुणाकर, बलभद्रसूरि, ढुंढिराज, भृगु, भारद्वाज, देवकीर्ति, नारद, गणेशदैवज्ञ, रामदैवज्ञ, वर्तमानश्याम-दैवज्ञ इत्यादि पूर्वाचार्यों के प्रणीत ग्रंथों से संग्रह करके "श्यामसुंदरी" नाम हिन्दीटीकासहित द्वितीय ग्रन्थ रचनाकर प्रकाशित करता हूं। क्योंकि इस संसार में मनुष्य के शरीर के सुख का कारण स्त्री ही है, और पूर्वाचार्यों ने भी स्त्री को त्रिवर्गसाधिनी कहा है। जिन पुरुषों के घर में सुशीला स्त्रियां होती हैं वे मनुष्य चिंतारहित संसारी सर्व-सौख्योंसहित यावज्जीव जगत् में यश पाते हैं और जिन पुरुषों के घर में दुःशीला कर्कशा स्त्रियां होती हैं वे मनुष्य अहर्निश अनेक प्रकार के दुःख जन्मभर भोगा करते हैं और सदैवकाल लोक में अपकीर्ति के भागी रहते हैं, क्योंकि ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है। श्लोक– **"सुलक्षणैः सुचरितैरपि मंदायुषं पतिम् । दीर्घायुषं प्रकुर्वंति प्रमदाः प्रमदास्पदम् ॥१॥ अतः सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणैः । लक्षणानि परीक्ष्यादौ हित्वा दुर्लक्षणान्यपि ॥२॥** अर्थात् जो नारी अच्छे लक्षणों करके सुचरित्रों करके थोड़ी उमर के पति को भी दीर्घायु करती है और दुष्टलक्षणा कुचरित्रों करके दीर्घायु मनुष्यों को भी अल्पायु करती है। १ इस कारण

से सुलक्षणवती स्त्री को चतुर मनुष्य विवाहे। लक्षणों को पहिले परीक्षा करके दुर्लक्षणा कन्या का त्याग करना चाहिये। २ इस कारण से जहाँ तक हो सके विवाह के पहले अपने वर्ण की कुलवान् मनुष्यों के घर की कन्या के जन्मपत्र द्वारा उसका स्वरूप, शील, गुण, सौभाग्य, संतान, सतीत्वादि विषयों का विचार किसी बुद्धिमान् पंडित से इस बालवर्णी जातक के द्वारा कराकर सम्बन्ध करे। जो मनुष्य विवाह के पहले इस ग्रन्थ द्वारा विचार कराकर सम्बन्ध करेंगे अथवा कोई दोष कन्या के जन्मपत्र से मालूम होय तो उसकी शांति इस ग्रन्थ के लिखे अनुसार विवाह के समय करके परिणयन करेंगे वे मनुष्य जन्मभर तक स्त्रीयुक्त दु:ख को स्वप्न में भी नहीं प्राप्त होंगे। आजन्म इस जगत् में स्त्रीपक्ष के सर्वसौख्य भोगकर–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पद को भी पावेंगे। अब कन्या के पिता को चाहिये कि धन का लोभ छोड़कर जैसे कुयोग कन्यापक्ष में कहे हैं वैसे ही पुरुषपक्षीय जातकग्रन्थों से वरकी कुंडली के दोषों को भले प्रकार विचार कराकर उसके गुण अवगुणों को देखकर वर की आयु इत्यादिकों का निर्णय कराकर अच्छे निरोगी स्वरूपवान् कुलवान् कन्या के वय से ड्योढ़ी उमर के वर के साथ कन्या का विवाह करे। इसके विपरीत करने से कन्या के माता, पिता वा ज्येष्ठ भ्राता अथवा जिनको कन्यादान का अधिकार है वे सम्पूर्ण नरक के भागी होते हैं। आजकल पुरोहित तथा पाधा लोगों ने ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि, वरकन्या की कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, ज्ञातिच्युति, म्लेच्छ, अन्य दुर्योगों को कन्या का पिता किसी अच्छे गणमैत्री, भकूट, नाड़ी इन आठ बातों को अट्टसट देख लिया और निर्भय

कन्यावर के पिता से कह दिया कि, कुण्डली बहुत अच्छी मिलती है। परन्तु जो बातें कन्यावर की कुंडली में देखना चाहिये उनको कोई भी पाधाजी नहीं ध्यान करते हैं—जैसे आयु, कुष्ठादि, राजरोग, प्रव्रज्या, ज्ञातिच्युति, म्लेच्छ, अन्य दूर्योगों को कन्या का पिता किसी अच्छे विद्वान से वर की कुंडली का विचार करा ले और वर का पिता कन्या की कुंडली में वैधव्य, निरपत्यता, दुःशील, उन्माद, व्यभिचार, राजरोगादि अनेक दुर्योग दिखाकर तब सम्बन्ध करे। नहीं तो कन्यावर को जन्मभर दुःख सहना पड़ता है और उस पाप के भागी वही पंडित होंगे, जिन्होंने विवाह के पूर्व कुंडली का मेल न करा है परन्तु वर कन्या की कुण्डली शुद्ध इष्ट की होनी चाहिये, जन्मपत्र के अशुद्ध होने का कारण यही कन्या वर के परस्पर दुःख का मूल है। जब मनुष्य के संतान उत्पन्न होने का समय आवे तो मनुष्य को चाहिये कि बालक के जन्म से पहले किसी अच्छे गणितज्ञ को बुलाकर बैठा लें, जिससे उत्पत्तिकाल की लग्न नहीं बिगड़ने पावें और विवाह के पहले किसी सद्विद्वान् से कुंडली का मेलन तथा विवाह लग्न का शोधन करावे, जिससे ये मानस वंश का दुःख जन्भ भर सहना न पड़े। सो संसार में ऐसा अन्धकार छा रहा है चाहे कुंडली शुद्ध बने या न बने, चाहे कन्या दुःख पावे, चाहे वर परन्तु यजमान उन्हीं अनभिज्ञ नक्षत्रसूची पाधाओं को बुलाकर सब निश्चय करा लेते हैं। शोक ! शोक ! शोक !! शोक !!! सन्तान के उत्पत्तिसमय और वर कन्या के विवाह के विषय में दीन से दीन मनुष्य सैंकड़ो रुपया रण्डी भाँड आतिशबाजी इत्यादि कामों में वृथा खर्च कर देते हैं, परन्तु ये किसी से न होता है कि दस बीस रुपये किसी बुद्धिमान् ज्योतिषी को देकर जन्मपत्र शुद्ध बनवावें या कुंडली का मेलन विवाह

की लग्न को शोधन करावें। इसी कारण से उन पुरुषों की सन्तान को जन्मभर अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। आजकल बहुधा ऐसा देखा गया है कि, पंडितजन स्त्रियों की जन्मकुण्डलीका फलादेश पुरुषजातकादिग्रन्थों से कहा करते हैं। ये सर्वथा ठीक नहीं है। विद्वानों को चाहिये कि पुरुष की जन्मकुण्डली का सब शुभाशुभ फलादेश पुरुषजातक बृहज्जातकादिग्रंथों से कहना चाहिये और स्त्रियों की जन्मपत्र का फल स्त्रीजातकादि ग्रंथों से विचार करना चाहिये। केवल स्त्रीपुरुष की आयुनिर्णय तथा दशागणित एक ही प्रकार से करना उचित है और स्त्रियों के जन्मपत्र में जो राजयोगादि भाग्य कारक योग हो वह स्त्री के पति को कहना अवश्य है। अब जो पंडितजन स्त्रीजातक को तलाशकर देखते हैं तो स्त्रीजातक के पच्चीस तीस श्लोक से ज्यादे कहीं नहीं मिलते हैं इसलिये मैंने बालवर्णी जातक नाम का एक नवीन ग्रन्थ बहुत से प्राचीन आचार्यों के कहे हुए वाक्यों की सम्मति लेकर बहुत बड़ा स्त्रियों के फलहितार्थ संग्रह करके बनाया है। जो पंडितजन स्त्रियों की जन्मपत्री का सम्पूर्ण शुभाशुभ फल विचारकर भूत-भविष्यत्-वर्तमान इस ग्रंथ के द्वारा कहेंगे वह समयानुसार ठीक ठीक मिलेगा और जो भारतवर्ष निवासी विवाह के पहिले कन्या के जन्मपत्र को विचार करवाकर इस ग्रंथ के द्वारा सब कन्या के लक्षणों को देखकर विवाह करेंगे वह मनुष्य परमेश्वर की कृपा से आजन्म स्त्रीपक्ष के कष्ट को स्वप्न में भी न पावेंगे। प्रायः पुत्रपौत्रादि सहित सर्व सौख्यलाभ पावेंगे, मैं आशा करता हूं परम कृपालु पंडितवर मेरी चपलता को देखकर क्षमा करेंगे। किंतु मुझ चरण सेवक को आशीर्वाद देकर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे। और इस ग्रंथ में किसी प्रकार की अशुद्धि होय तो उसको

अभिमान छोड़कर शुद्ध कर लेंगे। इस ग्रंथ की "श्यामसुन्दरी" नाम हिन्दी टीका सरल वाणी में करी है और इस ग्रंथ को अठारह अध्याय से सुशोभित किया है। अध्याय–प्रथम जिसमें कन्या के सामान्य लक्षण वर्णन किये हैं। अध्याय–दूसरा इसमें नख से लेकर चोटी पर्य्यंत छयासठ (६६) अंगों के लक्षण और उनका सब शुभाशुभ फल सविस्तार वर्णन किया है। अध्याय–तृतीय जिसमें कन्या के सर्वाङ्ग के तिलमशकादि चिह्नों के लक्षण और उनका फल कहा है। अध्याय–चतुर्थ जिसमें कन्या की जन्मकुण्डली से त्रिंशांश का विचार वर्णन किया है। अध्याय–पंचम जिसमें अनेक प्रकार के ग्रहों के योग और सप्तमभाव स्थित नवांश से सूर्य्यादि ग्रहों का फल तथा कन्या की मृत्यु के कारण वा प्रव्रज्यादि पतिसौख्य के अनेक योग बनाये हैं। अध्याय–छठा जिसमें स्त्रियों के राजयोग कुण्डलीसहित सचक्र उदाहरण के बनाये हैं। अध्याय–सप्तम जिसमें प्रतिपदा से लेकर पौर्णमासी पर्य्यन्त कन्या के जन्म की तिथियों का फल कहा है। अध्याय–अष्टम इसमें कन्या के जन्मकाल में सूर्यादि सातों वारों का फल कहा है। अध्याय–नवम इसमें अश्विनी से लेकर रेवतीपर्य्यंत २७ सत्ताईस नक्षत्रजातफल कहा है। अध्याय–दशम इसमें विष्कुंभादियोगों का फल कुमारी के जन्मसमय में वर्णन किया है। अध्याय–ग्यारहवां इमसें बवादिक कारणजातफल कहा है। अध्याय–बारहवाँ इसमें मेषादिलग्न जातफल कहा है। अध्याय–तेरहवां इसमें चंद्रराशिजातफल कहा है। अध्याय–चौदहवाँ इमसें सूर्यादि राहु पर्यंत भावस्थित फल कहा है। अध्याय–पंद्रहवाँ इसमें अभुक्तमूलजात-विचार और उसका विधान वर्णन करा है। अध्याय–सोलहवाँ इसमें पूर्वोक्त मूल जातशांति बनाई है। अध्याय सत्रहवाँ इसमें आश्लेषा मूल,

त्रिविधगण्डांत, गण्डदोष, नक्षत्रजाति, दान, ज्येष्ठाशांति, रेवती, गण्ड, ज्येष्ठापादजातफल, दुष्टयोगजातशांति, व्यतीपात, वैधृति, संक्रांतिजात कुहू,सिनीवाली, दर्शशांति,कृष्णचतुर्दशीजातशांति,एकनक्षत्राजननशांति त्रीतरशांति, प्रसवविकारशांति, सूर्यचंद्रग्रहणजननशांति वर्णन करी है। इनकी शांति करने से कन्या के दुष्टफल दूर होते हैं और शुभफल की प्राप्ति होती है। अध्याय–अठारहवाँ इसमें ग्रंथकर्ता के वंश का वर्णन है। प्रार्थना–जो कहीं इस ग्रंथ में हस्तदोष अथवा छापे के दोष से भूल हो गई होय उसको पंडितवर सुधार लेंगे और सदैवकाल मुझ चरणसेवक पर कृपा करते रहेंगे। और जिस किसी सत्पुरुष को इस ग्रंथ के विषय में कुछ भी प्रश्न करना होय तो पत्र द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजकर कृतार्थ करेंगे।

ब्राह्मणों का कृपाभिलाषी-राजज्योतिषी पंडित श्यामलाल शर्मा,

ठिकाना–" बाँसबरेली

श्रीः

अथ स्त्रीजातकस्थविषयानुक्रमणिका

**

अथ पंचदशोऽध्यायः १५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः

इति स्त्रीजातकस्थविषयानुक्रमणिका सम्पूर्णा

श्रीः

अथ स्त्रीजातकम्

श्यामसुन्दरीहिन्दीटीकासमेतम्

गोवर्द्धनधराधारं प्रणम्य पितरौ मुदा ।
स्त्रीजातकं श्यामलालः कुर्वे वामावशंवदः ।।१।।

अर्थ—मैं जो श्यामलाल हूं सो स्त्रीबालवर्णी के वशीभूत होकर "स्त्रीजातक" नाम ग्रंथ को करता हूं। गोवर्द्धन पर्वत के धारण करनेवाले श्रीगोवर्द्धननाथजी को प्रणाम करके और गौरीनाम्नी माता और बलदेवप्रसादनामक पिता को हर्ष से प्रणाम करके।।१।।

अथातः संप्रवक्ष्यामि कन्यादोषानशेषतः ।
यान्विज्ञाय सुधीः क्वापि न मज्जेद्दुःखसागरे ।।२।।
तस्मात्परीक्ष्य मतिमान्कन्यां लक्षणसंयुताम् ।
विवाहेत यथा न स्यात्सर्वथानर्थभाजनम् ।।३।।
यस्माद्धर्मार्थकामानां साध्वी चेत्साधनं भवेत् ।
तस्माल्लक्षणं नारीणां तथा लग्नमतो ब्रुवे ।।४।।

अर्थ—इसके अनंतर कन्याओं के अशेष दोष कहता हूं। जिन लक्षणों को जानकर बुद्धिमान कोई पुरुष दुःखसागर में स्नान न करे।।२।। तिसकारण से लक्षणसंयुक्त कन्या की परीक्षा करके जिससे विवाह करने से हमेशा दुःख के भागी न होय।।३।। पतिव्रता स्त्रियों के धर्म अर्थ

कामनादिक फलों का साधन पुरुष को होता है तिस कारण से स्त्रियों के लक्षण तथा लग्न का विचार कहते हैं।।४।।

अथ स्त्रीणां लक्षणविशेषमाह व्यासः

मार्जारपिंगला नारी विषकन्येति कीर्त्तिता ।
सुवर्णपिंगला नारी नातिदुष्टा परे जगुः ।।५।।
कृष्णजिह्वा च लंबोष्ठी पिंगाक्षी घर्घरस्वरा ।
त्याज्या यस्याश्च पादौ च कुचावोष्ठौ च रोमशौ ।।६।।
विरलांगुलिदंता च कुचगंडबृहत्कचा ।
कृष्णतालुः परित्याज्या व्यंगांगा पितृमातृतः ।।७।।
कनिष्ठानामिका यस्या यदि मध्यमिका तथा ।
भूमिं न स्पृशते सा स्त्री विज्ञेया व्यभिचारिणी ।।८।।

अर्थ–बिल्ली की तरह पीले वर्ण की स्त्री विषकन्या होती है, वो पति को नाश करती है और सोने की तरह पीले वर्ण की स्त्री अत्यंत दुष्ट नहीं होती है किन्तु मध्यम होती है, ऐसा कोई कोई आचार्य कहते हैं।।५।। जिस औरत की काली जीभ, लंबे होठ, पीले वर्ण के नेत्र, आवाज जिसकी घर्राट की और जिस औरत के पैरों में, कुचों में, होठों में रोम हों वह स्त्री अवश्य त्याग करने लायक होती है।।६।। जिस स्त्री की अंगुली तथा दांत छिदरे हों और कुचों के ऊपर तथा गालों के ऊपर बहुत बाल हों जिसका तालू काला हो माँ बाप के समान हो या अधिकांगी हो सो स्त्री जरूर २ त्याग करने लायक होती है।।७।। जिस स्त्री के पैर की कनिष्ठा अंगुली अनामिका और मध्यमा अंगुली धरती को न छूती हो सो स्त्री अवश्य व्यभिचारिणी अर्थात् पर-पुरुषगामिनी होती है।।८।।

पादे प्रदेशिनी यस्या अंगुष्ठं समतिक्रमेत् ।
न सा भर्तृगृहे तिष्ठेत्स्वच्छंदा कामचारिणी ।।९।।
उदरे श्वशुरं हंति ललाटे हंति देवरम् ।
स्फिजौ पतिं लंबमाने धनं कूर्म्मोदरी हरेत् ।।१०।।
पृष्ठावर्ता पतिं हंति नाभ्यावर्ता पतिव्रता ।
कटयावर्त्ता तु स्वच्छंदा स्कंधावर्तार्थभागिनी ।।११।।
सुस्वरा च सुवेषा च मृद्वंगी चारुभाषिणी ।
प्रशस्ता सुगतिः कन्या या च दृङ्मानसप्रिया ।।१२।।

अर्थ–जिस औरत के पैरों के अंगुठे के पास की अंगुली अंगूठे से बड़ी होय वह नारी अपने पति के घर में नहीं रहती है अपनी मर्जी के माफिक कामचारिणी होती है।।९।। और जिस नारी का पेट लंबा हो वह स्त्री श्वशुर का नाश करती है और जिस स्त्री का माथा लंबा हो वह देवर का नाश करती है और जिस स्त्री का पेडू लंबी होय वह नारी पति का नाश करती है और जिस औरत का पेट कछुए के माफिक हो वह धन को नाश करती है।।१०।। जिस औरत के पीठ में रोमावली का चक्र हो वह नारी पति का नाश करती है और जिस औरत के टूडी में रोमावली चक्र हो वह नारी पतिव्रता होती है और जिस नारी के कमर में रोमावली का चक्र होवे वह नारी इच्छानुसार चलनेवाली होती है और जिस औरत के कंधे पर रोमावली का चक्र होवे वह नारी धनभोग करनेवाली होती है।।११।। जिस औरत की आवाज अच्छी हो अच्छे भेशवाली कोमल शरीरवाली अच्छी वाणी बोलनेवाली अच्छी चाल चलनेवाली जिसे देखने से आंखें और मन प्रसन्न हों वह नारी अतिश्रेष्ठ होती है।।१२।।

मंडूककुक्षिका नारी न्यग्रोदपरिमण्डला ।
एवं जनयते पुत्रं स तु राजा भविष्यति ।।१३।।
मध्यांगुलीं या मणिबंधनोत्था
रेखा गता पाणितलेंगनानाम् ।
ऊर्ध्वं गता पाणितलेथवा या
पुंसोथवा राजसुखाय सा स्यात् ।।१४।।
कनिष्ठिकामूलगताथवा या
प्रदेशिनीमध्यमकांतराला ।
करोति रेखा परमायुषः स्यात्प्रमाण-
हीनाथ तदूनमायुः ।।१५।।
अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखा
पुत्रा बृहत्यः प्रमदाश्च तन्व्यः ।
अच्छिन्नदीर्घाश्च चिरायुषां ताः
स्वल्पायुषश्छिन्नलघुप्रमाणाः ।।१६।।

अर्थ–जिस स्त्री की कोख मेंडक के समान और वट वृक्ष के माफिक ऊपर से बहुत विस्तार हो जिसके ऐसी कोख से उत्पन्न हुआ पुत्र राजा होता है।।१३।। जिस स्त्री के कलाई से लेकर मध्यमांगुली तक हथेली में रेखा होवै वह नारी महारानी होती है और जो पुरुष के हाथ वही रेखा होवे तो वह मनुष्य राजा होता है।।१४।। और जिस नारी के हाथ में कनिष्ठिका अंगुली के मूल से पैदा भई रेखा और वह रेखा मध्यमांगुली और प्रदेशिनी अंगुली के अन्त तक चली गई होय तो वह नारी (१२०) एक सौ बीस वर्ष से कुछ कम उमरवाली होती है।।१५।। और जिस स्त्री के अँगुठे के मूल से पैदा भई रेखा बहुत बड़ी होवै तो पुत्रदात्री होती है और छोटी बारीक होवे तो कन्या होती है और वही रेखा बिना

टूटी लंबी होय तो दीर्घायुवाले पुत्र होते हैं। टूटी होय तो अल्पायुवाले पुत्र होते हैं और वही रेखा बारीक लम्बी होवे तो कन्या दीर्घायुवाली होती है और टूटी होय तो अल्पायुवाली कन्या होती है।।१६।।

कलत्रकांतयोः सख्यं जीविताख्यकनिष्ठयोः ।
मध्ये विचिन्तयेद्दक्षे वामहस्ते नरस्त्रियोः ।।१७।।
अरेखं बहुरेखं वा येषां पाणितलं नृणाम् ।
ते स्युरल्पायुषो निस्वा दुःखिता नात्र संशयः ।।१८।।
क्लेशसंपल्लवो रेखा कुर्याच्छिन्नायुषः क्षयम् ।
मणिबंधोन्मुखा वृद्ध्यै विपदोंगुष्ठसंमुखा ।।१९।।
मत्स्यः करतले यस्य स स्त्रियो बहुकोशयुक् ।
भाग्यरेखा सुतीक्ष्णाग्रा शुभाछत्राकृतिस्तथा ।।२०।।
श्लिष्टान्यंगुलिमध्यानि द्रव्यसंचयहेतवे ।
तानि चेच्छिद्रयुक्तानि त्यागशीलकराणि च ।।२१।।

अर्थ–उमर की रेखा और कनिष्ठ अंगुली के बीच में पुरुष स्त्री के प्रेम परस्पर करनेवाली रेखा होती है सो रेखा मनुष्य के दहिने हाथ में और नारी के बांये हाथ में देखना चाहिये।।१७।। और जिस स्त्री पुरुष के हाथ में रेखा कोई न होय अथवा बहुत रेखा होय उन स्त्रीपुरुष को अल्पायु कहना चाहिये और धनहीन और दुःखित होते हैं इसमें संशय नहीं है।।१८।। और जिसके हाथ पत्तों की माफिक रेखा कलाई के सामने होय तो वह स्त्री पुरुष क्लेश के भागी और दुःखित होते हैं और जो रेखा कटी होय तो उमर का क्षय करती है कलाई के सामने रेखा वृद्धि की होती है और अंगूठे के सामने रेखा आपदा की होती है।।१९।। और जिसकी हथेली में मछली के समान रेखा होय वह प्राणी अधिक धनवान् होता है और जिसके हाथ में छतरी के समान तीक्ष्ण पहुँचे के पास होवे

उसका नाम भाग्यरेखा है वह श्रेष्ठ होती है।।२०।। और जिसके हाथ का अंगुलियों का बीच का हिस्सा परस्पर मिला होवे सो धन इकट्ठा करती है और जिसकी अंगुलियों के बीच में छेद रहे वह धन खर्च करती है उसके पास धन ठहरता नहीं है।।२१।।

मिलद्भ्रूयुग्मिका काणा लंबोष्ठी शूर्पकर्णिका ।
वक्त्रास्यनासिका चातिमौना त्याज्याति भाषिणी।२२।
यस्याः केशांशुकस्पर्शान्म्लायंति कुसुमस्त्रजः ।
स्नानांभसि विपद्यंते बहवः क्षुद्रजंतवः ।।२३।।
धीयंते मत्कुणा यस्यास्तथा यूकाश्च वाससि ।
चौर्य्यान्नभक्षिणी शौचहीना त्याज्या नितंबिनी ।।२४।।

इति श्रीवंशावरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डित-श्यामलालसंगृहीतेस्त्रीजातके स्त्रीलक्षणवर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ।।१।।

अर्थ–जिस स्त्री की दोनों भौंहे परस्पर मिली होवें अथवा कानी होवे, जिसके ओठ लंबे होवें और कान सूप के समान होवे जिसका मुख टेढ़ा हो नाक टेढ़ी हो अत्यंत चुपकी रहे वा बहुत बोलनेवाली हो ऐसी स्त्री सर्वथा त्याग करना चाहिये।।२।। जिस स्त्री के बाल और कपड़ों के स्पर्श करने से फूलों की माला कुम्हलाय जावे और जिस स्त्री के स्नान के जल में बहुत छोटे जीव मर जावें।।२३।। और जिस स्त्री के बाल और कपड़ों में जुयें बहुत होवें और जो नारी चुरायकर अन्न खावे और पवित्रताहीन हो वह नारी जरूर त्याग करनी चाहिए।।२४।।

इति श्रीवंशावरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीहिन्दी-टीकायां स्त्रीलक्षणवर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ।।१।।

अथ स्कंदपुराणांतर्गतकाशीखंडे स्त्रीलक्षणे विशेषमाह

अथ स्त्रीलक्षणकारणमाह–

स्कंद उवाच

सदा गृही सुखं भुक्ते स्त्री लक्षणवती यदि ।
अतः सुखसमृद्ध्यर्थमादौ लक्षणमीक्षयेत् ॥१॥

अर्थ–स्कंदजी महाराज कहते हैं कि, हे अगस्त्य! जिस गृहस्थी के घर में अच्छे लक्षणवाली स्त्री होती है वह पुरुष हमेशा सुख भोग करता है इस कारण से सुखप्राप्ति की इच्छा रखनेवाले मनुष्य के लिये पहिले स्त्रीलक्षण कहता हूं॥१॥

अथाष्टधालक्षणभूमिकामाह

वपुरावर्तगंधाश्च छाया सत्यं स्वरो गतिः ।
वर्णश्चेत्यष्टधा प्रोक्ता बुधैर्लक्षणभूमिका ॥२॥

अर्थ–शरीर, चक्र, गंध, छाया, पराक्रम, आवाज, चाल, रंग, ये आठ प्रकार की भूमिका के लक्षण विद्वानों ने कहे हैं॥२॥

अथ लक्षणप्रकारः

आपादतलमारभ्य यावन्मौलिरुहं क्रमात् ।
शुभाशुभानि वक्ष्यामि लक्षणानि मुने श्रृणु ॥३॥

अर्थ–पैरों के तलुओं से आरंभ करके सिर के बालों तक क्रम करके अच्छे बुरे स्त्री के लक्षण मैं कहता हूं हे अगस्त्य! तुम सुनो॥३॥

अथ लक्षणक्रमः

आदौ पादतलं रेखा ततोंगुष्ठांगुलीनखाः ।

पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिर्जंघारोमाणि जानुनी ।।४।।
ऊरू कटी नितंबस्फिग्भगो जघनबस्तिके ।
नाभिः कुक्षिद्वयं पार्श्वोदरमध्यवलित्रयम् ।।५।।
रोमाली हृदयं वक्षो वक्षोजद्वयचूचुकम् ।
जत्रुस्कंधांसकक्षौ द्विमणिबंधकरद्वयम् ।।६।।
पाणिपृष्ठं पाणितलं रेखांगुष्ठांगुलीनखाः ।
पृष्ठिः कृकाटिका कंठश्चिबुकं च हनुद्वयम् ।।७।।

अर्थ–पहले पैरों के नीचे की रेखा कहते हैं १ फिर अंगूठा २ अंगुली ३ नाखून ४ पैरों की पीठ ५ गट्टे दोनों ६ दोनों एड़ी ७ जंघा दोनों ८ रोम के लक्षण ९ दोनों जानू के लक्षण १० दोनों ऊरू ११ कमर १२ चूतर १३ पेंडू १४ भग १५ जंघों के १६ टूड़ी के नीचे १७ पेडू के ऊपर १८ टूडी १९ दोनों कोंख २० दोनों पसली २१ पेट की तीन वलयों के लक्षण २२ २३।२४ रोमावली २५ हृदय के २६ छाती के २७ छाती की ऊंचाई २८ दोनों चूँचियों के २९/३० बगल ३१ नीचे स्थान को जत्रु कहते हैं अर्थात् बगल तिसके ३२ मुट्ठी के ३३ कंधों के अंसों के ३४ कलाई दोनों ३५ दोनों हाथों के ३६ दोनों हाथों के पीठ के ३७/३८ दोनों हथेलियों के ३९ हाथों की रेखा के ४० अंगूठे के ४१ अंगुलीयों के ४२ नाखूनों के ४३ पीठ के ४४ नीचे के भाग को कृकाटिका कहते हैं तिसके ४५ गले के ४६ ठोड़ी के ४७ दोनों हनूके ४८ ।।४–७।।

कपोलौ वक्त्रमधरोत्तरोष्ठौ द्विजजिह्वकाः ।
घंटिका तालु हसितं नासिका क्षुतमक्षिणी ।।८।।
पक्ष्मभ्रूकर्णभालानि मौलिसीमंतमौलिजाः ।
षष्टिः षडुत्तरा योषिदंगलक्षणसत्खनिः ।।९।।

अर्थ–दोनों गालों के ४९ मुख के ५० दोनों होठ के ५१ दांतों के ५२

जीभ के ५३ काग के ५४ तालूके ५५ हसने के ५६ नाक के ५७ छींक के ५८ नेत्रों के ५९ पलकों के ६० भौंहके ६१ कानों के ६२ माथे के ६३ सिर के ६४ मांग के। ६५ सिर के बालों के ६६ छियासठ स्त्रियों के अंगों की लक्षणों की भूमिका वर्णन करी है।।८-९।।

अथ पादतललक्षणमाह

स्त्रीणां पादतलं स्निग्धं मांसलं मृदुलं समम् ।
अस्वेदमुष्णमरुणं बहुभोगोचितं स्मृतम् ।।१०।।
रूक्षं विवर्णं परुषं खंडितं प्रतिबिंबकम् ।
शूर्पाकारं विशुष्कं च दुःखदौर्भाग्यसूचकम् ।।११।।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों के तलुए चिकने मांसकर के सहित मुलायम बराबर पसीना रहित गरम लाली लिये हों वह स्त्री बहुत भोग करने लायक होती है।।१०।। और जिस नारी के पैरों के तलुए रूखे फटे हुए कठोर खंडित जिसके पैरों के चिह्न से धरती खंडित दिखाई पड़े सूप के समान आगे से चौड़े विशेष करके सूखे होय वह स्त्री दुःख और दारिद्रय के करनेवाली होती है।।११।।

अथ पादतलरेखालक्षणमाह

चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ।
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपांगना ।।१२।।
भवेदखंडभोगायोर्ध्वमध्यांगुलिसंयुता ।
रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्रयसूचिका ।।१३।।

अर्थ–जिस स्त्री के पैर के तलुएँ में चक्र, स्वस्तिक, शंख, कमल, ध्वजा, मीन, छत्र के समान रेखा के चिह्न होवे वह नारी राजा की रानी होती है।।१२।। और जिस नारी के पैर के तलुएँ में बीच की अंगुली तक अखंडित ऊर्ध्वरेखा होवे वह स्त्री भोग के लिये उत्तम होती

है और जिसके पैर में चूहे, सर्प, कौआ के समान रेखा होवे वह नारी दुःख दारिद्र्य के देनेवाली होती है॥१३॥

अथ पादांगुष्ठलक्षणमाह

उन्नतो मांसलोङ्गुष्ठो वर्तुलोतुलभोगदः ।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपटः सुखसौभाग्यभंजकः ॥१४॥
विधवा विपुलेन स्याद्दीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा ।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों का अंगूठा ऊंचा और मांससहित गोल होवे तो वह नारी बहुत सुख की देनेवाली होती है और जिस स्त्री के पैर का अँगूठा टेढ़ा और छोटा और चिपटा होवे वह नारी सौभाग्य के नाश करनेवाली॥१४॥ और बहुत बड़े अँगुठेवाली स्त्री विधवा होती है और लंबे अंगूठेवाली दुर्भगा होती है॥

अथ पादाङ्गुलीलक्षणमाह

मृदवोङ्गुलयः शस्ता घनावृत्ताः समुन्नताः ॥१५॥

अर्थ–जिस कन्या की अँगुली कोमल और घनी गोल श्रेष्ठ ऊंची होवे हैं वह नारी शुभ होती है॥१५॥

दीर्घांगुलीभिः कुलटा कृशभिरतिनिर्धना ।
ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥१६॥
चिपटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ।
परस्परं समारूढ़ाः पादांगुल्यो भवंति हि ॥१७॥
हत्वा बहूनपि पतीन्परप्रेष्या तदा भवेत् ।
यस्याः पथि समायांत्या रजो भूमेः समुच्छलेत् ॥१८॥
सा पांसुला प्रजायेत कुलत्रयविनाशिनी ।
यस्याःकनिष्ठिकाभूमिं न गच्छंत्याःपरिस्पृशेत् ॥१९॥
सा निहत्य पतिं योषा द्वितीयं कुरुते पतिम् ।

अनामिका च मध्या च यस्या भूमिं न संस्पृशेत् ।।२०।।
पतिद्वयं निहंत्याद्या द्वितीया च पतित्रयम् ।
पतिहीनत्वकारिण्यौ हीने ते द्वे इमे यदि ।।२१।।
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठाद्व्यतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा सस्याद्दोष एष विनिश्चयः ।।२२।।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों की अंगुली अधिक लंबी हो वह कुलटा होती है और पतली अंगुलियोंवाली धनहीन होती है और बहुत छोटी अंगुलियोंवाली थोड़ी उमर पाती है छोटी बड़ी अंगुलियोंवाली कुटिनी कपट करनेवाली होती है।।१६।। और चपटी अंगुलियों वाली दासी होती है और छिदरी अंगुलियोंवाली दरिद्रिणी होती है और जिस स्त्री की पैर की अंगुली एक के ऊपर एक चढ़ी होय।।१७।। वह स्त्री बहुत से पतियों को मारकर अन्य स्त्री की कुटिनी होती है और जिस औरत के चलने से धरती की बहुत धूरि उड़े।।१८।। सो स्त्री व्यभिचारिणी वेश्या के समान पिता नाना और पति के इन तीनों कुल का नाश करती है और जिस स्त्री के धरती में चलने से कनिष्ठिका अंगुली पृथिवी को स्पर्श न करे।।१९।। सो स्त्री विवाहित पति को नाश करके दूसरे को पति करती है और जिस स्त्री की अनामिका अंगुली धरती को स्पर्श न करती होय।।२०।। वह नारी आदि के दो पतियों का नाश करके तीसरा पति करती है और जिस स्त्री की मध्यमांगुली धरती को स्पर्श न करे वह नारी तीन पति को मारकर चौथा पति करती है और जिस स्त्री की कनिष्ठ और अनामिका दो अँगुली हीन होवे वह नारी पतिहीन होती है।।२१।। और जिस स्त्री की अंगूठे के पास की अंगुली अंगूठे से बड़ी होय तो वह नारी बिना व्याही अवश्य करके व्यभिचारिणी होती है।।२२।।

अथ पादनखलक्षणमाह

स्निग्धाः समुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों के नाखून चिकने ऊंचे लाली लिये गोल होवें वह नाखून शुभदायक होते हैं।

अथ पादपृष्ठलक्षणमाह

राज्ञीत्वसूचकं स्त्रीणां पादपृष्ठं समुन्नतम् ।।२३।।
अस्वेदमशिराढ्यं च मसृणं मृदु मांसलम् ।
दरिद्रा मध्यभग्नेन शिरालेन सदाध्वगा ।।२४।।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों की पीठ ऊंची होवे वह नारी राजपत्नी होती है।।२३।। और जिस नारी के पैरों की पीठ पसीनारहित नाड़ियों रहित मुलायम चिकनी मांस से भरपूर होवे वह शुभ होती है और जिस औरत के पैरों की पीठ बीच में टूटी हो वह नारी दरिद्रिणी होती है और जिसके पैरों की पीठ बहुत नसेंवाली हो वह नारी हमेशा रास्ता चलनेवाली होती है।।२४।।

अथ पादग्रंथिलक्षणमाह

रोमाढ्येन भवेद्दासी निर्मांसेन च दुर्भगा ।
गूढ़ौ गुल्फौ शिवायोक्तावशिरालौ सुवर्तुलौ ।।२५।।
स्थपुष्टौ शिथिलौ दृश्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकौ ।

अर्थ–जिस स्त्री के पैरों के गट्टे रोमसहित हों वह दासी होती है और जिसके गट्टे मांसरहित हों वह नारी दुर्भगा होती है और जिसके पैरों के गट्टे मांसकर के छीपे होंय नसों करके हीन होय, गोल होय वे शुभ होते हैं।।२५।। और जिसके गट्टे बड़े मोटे शिथिल होवे वह स्त्री दुर्भाग्यवती होती है।।

अथ पादपश्चाद्भागलक्षणमाह

समपार्ष्णिः शुभा नारी पृथुपार्ष्णिश्चदुर्भगा ।।२६।।
कुलटोन्नतपार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्चदुःखभाक् ।।

अर्थ–जिस औरत के पैरों के पीछे का भाग बराबर होवे वह शुभ होती है और मोटी पार्ष्णि होय तो दुर्भगा होती है।।२६।। जिस औरत की पार्ष्णि उन्नत हो वह कुलटा होती है और बड़ी होय तो दुःख भोगती है।

अथ पिंडलीलक्षणमाह

रोमहीने समे स्निग्धे यज्जंघे क्रमवर्तुले ।।२७।।
सा राजपत्नी भवति विसरे सुमनोहरे ।।२८।।
एकरोमा राजपत्नी द्विरोमा च सुखावहा ।
त्रिरोमा रोमकूपेषु भवेद्वैधव्यदुखभाक् ।।२९।।

अर्थ–जिस औरत के पिंडी रोमोंरहित समान चिकनी गोल होवे।।२७।। वह राजा की पत्नी होती है। जिसकी पिंडली नसेंरहित सुन्दर होय वह श्रेष्ठ होती है।।२८।। जिसकी पिंडली एक रोमवाली होय वह रानी होती है। दो रोमवाली सुख भोगती है और जिसके तीन रोम रोमे के छिद्र में होयँ वह विधवा दुःख भोगनेवाली होती है।।२९।।

अथ जानुलक्षणमाह

वृत्तं पिशितसंलग्नं जानुयुग्मं प्रशस्यते ।
निर्मांसं स्वैरचारिण्या दरिद्रायाश्चविश्लथम् ।।३०।।

अर्थ–जिस नारी के दोनों जानु गोल मांसकरके सहित होवें वह श्रेष्ठ होती है और जिसके मांसरहित होवें वह नारी स्वैरिणी अर्थात्

व्यभिचारिणी होती है और जिसके जानु ढ़ीले होवें वह दरिद्रणी होती है।।३०।।

अथ जंघालक्षणमाह

विशिरैः करभाकारैरुरुभिर्मसृणैर्घनैः ।
सुवृत्तै रोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभाः ।।३१।।
वैधव्यं रोमशैरुक्तं दौर्भाग्यं चिपिटैरपि ।
मध्यच्छिद्रैर्महादुःखं दारिद्र्यं कठिनत्वचैः ।।३२।।

अर्थ–जिस स्त्री की जंघा नाड़ियों से रहित ऊंट के समान हाथी की सूंड के समान दोनों आपस में स्पर्श करती हों और श्रेष्ठ गोलाई लिये रोमहीन होवें वह राजा की प्यारी होती है।।३१।। और रोमसहित हो तो विधवा होती है। चपटी जंघों वाली दुर्भगा होती है और बीच में छेदवाली बड़े दुःख को पाती है और सख्त चमड़ेवाली जंघा की स्त्री दारिद्रिणी होती है।।३२।।

अथ कटिलक्षणमाह

चतुर्भिरंगुलैः शस्ताः कटिर्विंशतिसंयुतैः ।
समुन्नतनितंबाढ्या चतुरस्रा मृगीदृशाम् ।।३३।।
विनता चिपटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः ।
ह्रस्वा रोमयुता नार्या दुःखवैधव्यसूचिका ।।३४।।

अर्थ–जिस औरत की कमर चौबीस अंगुल ऊंची कमर ऊंचे चूतरसहित विस्तारवाली होय वह शुभ होती है।।३३।। नम्र हुई चिपटी लंबी मांसरहित कठोर छोटी रोमसहित कमर होवे वह नारी दुःख भोगनेवाली विधवा होती है।।३४।।

अथ नितंबलक्षणमाह

नितंबबिंबो नारीणामुन्नतो मांसलः पृथुः ।

महाभोगाय संप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मणे मतः ।।३५।।

अर्थ–जिन स्त्रियों के चूतड़ ऊँचे मांसरहित मोटे होवे वह नारी अतिभोग के लायक होती है। इससे विपरीत होने से नष्ट होती है।।३५।।

अथ मांसपिंडलक्षणमाह

कपित्थफलवद्वृत्तौ मृदुलौ मांसलौ घनौ ।
स्फिजौ बलिविनिर्मुक्तौ रतिसौख्यविवर्द्धनौ ।।३६।।

अर्थ–जिस नारी के चूतड़ के मांस के पिंड कैथ के फल के समान गोल मुलायम मासंसहित घने पुष्ट होवे तो रतिसौख्य के बढ़ानेवाले होते हैं।।३६।।

अथ योनिलक्षणमाह

शुभःकमठपृष्ठाभो गजस्कंधोपमो भगः ।
वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रः ी दक्षिणोन्नतः ।।३७।।
आखुरोमा गूढमणिः सुश्लिष्टः संहतः पृथुः ।
तुंगः कमलवर्णाभः शुभश्चाश्वत्थदलाकृति ।।३८।।
कुरंगखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः ।
रोमशो विवृतास्यश्च दृश्यनासोतिदुर्भगः ।।३९।।
शंखावर्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ।
चिपिटः खर्पराकारः किंकरीपददो भगः ।।४०।।
वंशवेतसपत्राभो गजरोमोच्चनासिकः ।।
विकटः कुटिलाकारो लंबगल्लस्तथा शुभः ।।४१।।
भगस्य भालं–

अर्थ–जिस औरत की योनि कछुए की पीठ की तरह हाथी के कन्धों

के समान और बाईं तरफ से ऊंची होवे वह नारी कन्यासंतान पैदा करती है और पूर्वोक्त विशिष्ट भग दक्षिण की तरफ से ऊंची होय तो वह नारी पुष्ट औलाद पैदा करती है।।३७।। और जिस कन्या की भग चूहों के समान रोमावली वाली छिपा हुआ ठिहुना जिसका शोभायमान मजबूत मोटी ऊंची कमल के दल के समान शुभ पीपल के पत्ते की सी आकारवाली योनि शुभ होती है।।३८।। हरिण के खुर के माफिक चूल्हे के से आकारवाली बहुत रोम करके सहित घड़े के मुख के समान नाकवाली भग अत्यंत बुरी होती है।।३९।। और जिसकी भग शंख के समान बलयवाली हो वह गर्भ नहीं धारण करती है और चपटी, खिपड़े के समान भगवाली स्त्री दूती होती है।।४०।। और जिस नारी की योनि बांस के पत्ते के समान और हाथी के से बाल जिसके ऊपर हों और ऊंची नाकवाली भयंकर कुटिल लंबी गलेवाली अशुभ होती है। इस प्रकार का भग का माथा नेष्ट कहा है।।४१।।

अथजघनलणमाह

–जघनं विस्तीर्णं तुङ्गमांसलम् ।
मृदुलं मृदुरोमाढ्यं दक्षिणावर्तमोडितम् ।।४२।।
वामावर्तं च निर्मांसं भुग्नं वैधव्यसूचकम् ।
संकटस्थं पुटं रूक्षं जघनं दुःखदं सदा ।।४३।।

अर्थ–जिस नारी के जघन विस्तार किये हुए ऊचे मांस सहित कोमल मुलायम बालों करके युक्त दाहिनी तरफ को आवर्त्त हो जिसका ऐसा होवे वह शुभ होती है और बाईं तरफ को आवर्त्त मांसरहित हो तो कुटिल विधवा करती है जिसके पुट संकोचित रुख हो वह नारी हमेशा दुःख पाती है।।४२।।४३।।

अथ बस्तिलक्षणमाह

बस्तिः प्रशस्ताः विपुला मृद्वी स्तोकसमुन्नता ।
रोमशा च शिराला च रेखांकानैव शोभना ।।४४।।

अर्थ–नाभि के नीचे के भाग का नाम बस्ति है जिस नारी का बस्तिस्थल बड़ा विस्तारवाला कोमल थोड़ा ऊंचा हो वह शुभ कहा है और जो बस्तिस्थल रोमन से रेखाओं करके युक्त होवे वह नारी अशुभ होती है।।४४।।

अथ नाभिलक्षणमाह

गंभीरदक्षिणावर्त्ता नाभिः स्यात्सुखसंपदे ।
वामावर्त्ता समुत्ताना व्यक्तग्रंथिर्न शोभना ।।४५।।

अर्थ–जिस नारी की टूडी गंभीर (गहरी) दक्षिणावर्त हो वह सुखसंपदा देनेवाली होती है और जिसकी टूडी वामावर्त्त ऊपर को उठी ग्रंथिवाली होय वह अशुभ होती है।।४५।।

अथ कुक्षिलक्षणप्रकारः

सूते सुतान्बहूनारी पृथुकुक्षिः सुखास्पदम् ।
क्षितीशं जनयेत्पुत्रं मंडूकाभेन कुक्षिका ।।४६।।
उन्नतेन वलीभाजा सावर्तेनापि कुक्षिणा ।
वन्ध्या प्रव्रजिता दासी क्रमाद्योषा भवेदिहि ।।४७।।

अर्थ–जो स्त्री भारी कुक्षियोंवाली होय वह पुत्र पैदा करती है और बहुत सौख्य देती है और जिसकी कोख मेंढ़क के समान होवे उस कोख से पैदा हुआ पुत्र राजा होता है।।४६।। और ऊंची बलवाली कोख की औरत बांझ होती है और बलवान् कोखवाली स्त्री सन्यासिनी होती है और घूमी हुई कमरवाली स्त्री दासी होती है, ये क्रम करके जानना।।४७।।

अथ पार्श्वलक्षणमाह

समैःसमांसैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिः शुभैः ।
पार्श्वैःसौभाग्यसुखयोर्निधानं स्यादसंशयम् ॥४८॥
यस्या दृश्यशिरे पार्श्वे उन्नते रोमसंयुते ।
निरपत्या च दुःशीला सा भवेद्दुःखशेवधिः ॥४९॥

अर्थ–जिस स्त्री की पसली बराबर मांसयुक्त कोमल छिपी हुए से हाड़वाली होय वे शुभ और सौभाग्यसंपदा के स्थान निःसंदेह होती है॥४८॥ और जिसके पसलियों में नसें दीख पड़ें और दोनों तरफ से ऊंची हों, रोम करके सहित हों वह नारी संतानरहित दुष्ट स्वभाव की दुःख की समूह होती है॥४९॥

अथोदरलक्षणानि

उदरेणातितुच्छेन विशिरेण मृदुत्वचा ।
योषिद्भवति भोगाढ्या नित्यं मिष्टान्नसेविनी ॥५०॥
कुम्भाकारं दरिद्राया जठरं च मृदंगवत् ।
कूष्माण्डाभं यवाभं च दुःपूरं जायते स्त्रियाः ॥५१॥
सुविशालोदरी नारी निरपत्या च दुर्भगा ।
प्रलंबजठरा हंति श्वशुरं चापि देवरम् ॥५२॥
मध्यक्षमा च सुभगा भोगाढ्या सवलित्रया ।
ऋज्वी तन्वी च रोमाली यस्याः सा शर्मनर्मभूः ॥५३॥
कपिला कुटिला स्थूला विच्छिन्ना रोमराजिका ।
चौरवैधव्यदौर्भाग्यं विदध्यादिह योषिताम् ॥५४॥

अर्थ–जिस स्त्री का पेट छोटा नाड़ियोंरहित कोमल त्वचा करके सहित होवे वह स्त्री भोग के करने लायक होती है और नित्य ही मिष्टान्न भोजन करती है॥५०॥ और जिसका पेट घड़े के समान हो वह

नारी दरिद्रिणी होती है और जिसका पेट मृदंग वा कुह्माड़े या यव के समान होवे वह बड़े दु:ख से भरा जाता है।।५१।। और बड़े पेटवाली स्त्री नि:संतान दुर्भगा होती है। बड़े लंबे चौड़े पेटवाली स्त्री अपने ससुर वा देवर का नाश करती है।।५२।। और जिसका पेट बीच में सूक्ष्म होवे वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवाली होती है और जिसके पेट में तीन वलय पड़े वह नारी भोगवती होती है। जिसके पेट पर सीधी बारीक रोम की रेखा होय वह नारी सर्वकल्याणदात्री होती है।।५३।। और जिस नारी के पेट में पीलाई लिये तिरछी छेद की रोमों की पंक्ति होवे सो चोरी करनेवाली विधवा दुष्टभाग्यवाली होती है।।५४।।

अथ हृदयलक्षणमाह

निर्लोमं हृदयं यस्याः समं निम्नत्ववर्जितम् ।
ऐश्वर्यं चाप्यवैधव्यं प्रियप्रेम समालभेत् ।।५५।।
विस्तीर्णहृदया योषा पुंश्चली निर्दया तथा ।
उद्भिन्नरोमहृदया पतिं हंति विनिश्चितम् ।।५६।।
अष्टादशांगुलततमुरः पीवरमुन्नतम् ।
सुखाय दुःखाय भवेद्रोमशं विषमं पृथु ।।५७।।

अर्थ–जिस नारी का हृदय बालों से रहित बराबर निम्नतारहित होता है वह नारी ऐश्वर्ययुक्त पति को प्यारी पति के प्रेम में तत्पर होती है।।५५।। और बड़े विस्तारवाले हृदयवाली स्त्री व्यभिचारिणी दयाहीन होती है और जिसके हृदय में बहुत रुगटे होवे वह नारी पति का नाश करती है।।५६।। और जिस स्त्री की छाती अठारह अंगुल की पुष्ट और ऊंची होवे वह नारी सुख देनेवाली होती है और जिस स्त्री की छाती विषम हृदयवाली रुगटों करके युक्त होवे वह नारी दु:ख देनेवाली होती है।।५७।।

अथ कुचलक्षणमाह

घनौ वृत्तौ दृढौ पीनौ समौ शस्तौ पयोधरौ ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ वामोरूणां न शर्मदौ ॥५८॥
दक्षिणोन्नतवक्षोजा पुत्रिणीष्वग्रणीर्मता ।
वामोन्नतकुचा सूते कन्यां सौभाग्यसुंदरीम् ॥५९॥
अरघट्टघटीतुल्यौ कुचौ दौःशील्यसूचकौ ।
पीवरास्यौ सांतरालौ पृथुप्रान्तौ न शोभनौ ॥६०॥
मूलस्थूलौ क्रमकृशौ वक्त्रे तीक्ष्णपयोधरौ ।
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यंतदुःखदौ ॥६१॥

अर्थ–जिस स्त्री के कुच घने, गोल और पुष्ट दोनों बराबर होवें वह श्रेष्ठ होते हैं और आगे से मोटे और विरले सूखे कुच स्त्रियों के श्रेष्ठ नही होते हैं॥५८॥ और जिस स्त्री का दहिना कुच ऊंचा होवे वह नारी पुत्र पैदा करती है और जिसका बाँया कुच ऊंचा होवे वह नारी कन्या पैदा करती है॥५९॥ और जिस नारी के स्तन जलघटी के समान होवें वह नारी कुशीला होती है और जिस स्त्री के स्तन ऊपर से मोटे मुखवाले आपस में दूर नीचे से बड़े मोटे हों वह नेष्ट है॥६०॥ और जिस नारी के कुछ नीचे से मोटे और क्रम करके ऊपर से दुर्वल जिनका अग्रभाग तीक्ष्ण होवे वह स्त्री पहिली उमर में सुख करती है और पीछे से बहुत दुःख पाती है॥६१॥

अथ कुचाग्रभागलक्षणमाह

सुदृशां चूचुकयुगं शस्तं श्यामं सुवर्तुलम् ।
अंतर्भग्नं च दीर्घं च कृशं क्लेशाय जायते ॥६२॥

अर्थ–जिस नारी के कुचों का अग्रभाग श्यामता लिये गोल होवे वह

शुभ होता है भीतर को छिदे हुवे दुर्बल लम्बे होने से क्लेशदायक होते हैं।।६२।।

अथ जत्रुलक्षणमाह

पीवराभ्यां च जत्रुभ्यां धनधान्यनिधिर्वधूः ।
श्लथास्थिभ्यांच निम्नाभ्यां विषमाभ्यांदरिद्रिणी ।।६३।।

अर्थ—जिस औरत के कोख की संधि मोटी हो वह नारी धन अन्न की स्थान होती है, ढ़ीले हाड़वाली नवी हुई अस्थियों वाली कमती बढ़ती अस्थियोंवाली दरिद्रिणी होती है।।६३।।

अथ स्कंधलक्षणमाह

अबद्धावनतौ स्कंधावदीर्घावकृशौ शुभौ ।
वक्रौ स्थूलौ च रोमाढ्यौ प्रेष्यवैधव्यसूचकौ ।।६४।।
निगूढ़संधी स्रस्ताग्रौ शुभावंसौ सुसंहतौ ।
वैधव्यदौ समुच्चाग्रौ निर्मांसावतिदु:खदौ ।।६५।।

अर्थ—जिस स्त्री के मुट्ठे अबद्ध नीचे लंबे नहीं होवे और मोटे होवे तो श्रेष्ठ होते हैं, और टेढ़े बहुत मोटे रुगटों करके सहित हों तो वह दूती विधवा होती है।।६४।। और जिस स्त्री के दोनों कंधे छिपे हुये मांस से मिले हुये श्रेष्ठ होते हैं और ऊंचे को उठे हुए विधवा करते हैं और मांसहीन अर्थात् खाली कंधे दु:ख देते हैं।।६५।।

अथ कक्षालक्षणमाह

कक्षे सुसूक्ष्मरोमे च तुङ्गे स्निग्धे च मांसले ।
शस्ते न शस्ते गंभीरे शिराले स्वेदमेदुरे ।।६६।।

अर्थ—जिस स्त्री की दोनों कक्षा महीन रुगटेवाली मांस सहित चिकनी ऊंची होवे वह शुभ होती है और वही संधि कक्षा की गंभीर नाड़ियों करके रहित पसीने सहित होवे तो नेष्ट होते हैं।।६६।।

अथ भुजालक्षणमाह

स्यातां दोषौ तु निर्दोषौ गूढ़ास्थी ग्रंथिकोमलौ ।
विशिरौ च विरोमाणौ सरलौ हरिणीदृशाम् ॥६७॥
वैधव्यं स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ दौर्भाग्यसूचकौ ।
परिक्लेशाय नारीणां परिदृश्यशिरौ भुजौ ॥६८॥

अर्थ–जिस औरत की बाहें दोष रहित छिपी हुई हाड़वाली कोमल बिना ग्रंथि के नाड़ी और रोगटेरहित होती है वह शुभ होते हैं॥६७॥ और जिसकी बाहों में मोटे रुगटे होवे वह विधवा होती है और जिसकी दोनों बाहें छोटी होवे वह स्त्री दुर्भागा होती है और जिसकी बाहों में नसें दीख पड़ें वह नारी क्लेश पाती है॥६८॥

अथ हस्तांगुष्ठलक्षणमाह

अंभोजमुकुलाकारमंगुष्ठांगुलिसंमुखम् ।
हस्तद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगप्रदायकम् ॥६९॥

अर्थ–जिस औरत के हाथ की अंगुली और अंगूठा कमल के डांडेके सी सीधी बँधी होवे ऐसे हाथवाली नारी बहुत भोग के योग्य होती है॥६९॥

अथ पाणितलस्य लक्षणमाह

मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ।
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभश्रियम् ॥७०॥
विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रता ।
भिक्षुकी तु शिराढ्येन नारीकरतलेन वै ॥७१॥

अर्थ–ज़िस औरत के हाथ की हथेली कोमल बीच में ऊंची छेदरहित श्रेष्ठ रेखायुक्त होवे थोड़ी रेखावाली शुभ होती है॥७०॥ बहुत

रेखाकरके सहित हो तो विधवा होती है और रेखाहीन हाथवाली कन्या दरिद्रिणी होती है और जिसके हाथों में नसें दीखती होवें वह नारी भिखारिन होती है॥७१॥

अथ करपृष्ठलक्षणमाह

विरोम विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधव्यहेतु रोमाढ्यं निम्नं शिरायुतं त्यजेत् ॥७२॥

अर्थ–जिस स्त्री के हाथों की पीठ रुगटेंरहित नाड़ियों से हीन होवे ऊंची होवे वह शुभ होती है और रुगटों सहित नीची नसोंवाली हाथों की पीठ जिसकी होवे वह नारी विधवा होती है उसको त्याग करना चाहिये॥७२॥

अथ हस्तरेखालक्षणमाह

रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ।
कररेखाङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥७३॥
मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा ।
पद्मेन भूपतेर्नारी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥७४॥
चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नद्यावर्तः प्रदक्षिणः ।
शंखातपत्रकमठा नृपमातृत्वसूचकाः ॥७५॥
तुलामानाकृती रेखा वणिक्पत्नी तु सा भवेत् ।
गजवाजिवृषाकाराः करे वामे मृगीदृशाम् ॥७६॥

अर्थ–जिस स्त्री के हाथ में लालवर्ण रेखा प्रगट और चिकनी पूरी टूटी न होवे गोलाई लिये होवे वह नारी भाग्य करके शुभ होती है॥७३॥ और जिसके हाथ में मछली के समान रेखा होवे वह नारी सुभगा होती है और जिसके हाथ में तिरकटी रेखा होवे वह धनवती होती है और जिसके हाथ में कमल के समान रेखा होवे वह नारी रानी

होती है उसकी कुक्षी से उत्पन्न हुआ बालक राजा होता है।।७४।। जिसके हाथ में नंद्यावर्त अर्थात् नंदी के समान दहिनावर्त रेखा होवे वह स्त्री चक्रवर्ती राजा की रानी होती है और जिसके हाथ में शंख छतरी कछुए के समान रेखा होवे वह नारी राज-माता होती है।।७५।। और जिसके हाथ में तराजू की डंडी के समान रेखा होवे वह नारी धनवान् वैश्य की स्त्री होती है और हाथी, घोड़ा, बैल के समान बाँये हाथ में रेखा होने से राजपत्नी होती है।।७६।।

रेखा प्रासादवज्राभा ब्रूयुस्तीर्थकरं सुतम् ।
कृषीवलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ।।७७।।
चामरांकुशकोदंडै राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ।
अङ्गुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ।।७८।।
यदि सा पतिहंत्री स्याद्दूरतस्तां त्यजेत्सुधीः ।
त्रिशूलासिगदाशक्तिदुंदुभ्याकृतिरेखया ।।७९।।
नितंबिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीतले ।
कंकमंडूकजम्बूकवृकवृश्चिकभोगिनः ।।८०।।
रासभोष्ट्रबिडालाः स्यु करस्था दुःखदाः स्त्रियाः ।।

अर्थ–जिस औरत के हाथ में पूर्वोक्त रेखा और मकान के समान व्रज के तुल्य होवे वह नारी बड़े भाग्यशाली शास्त्रकर्त्ता और तीर्थ करनेवाले पुत्र को पैदा करती है और जिसके हाथ में गाड़ी और गाड़ी के दुडंडी अथवा जुआ के समान रेखा होवे वह नारी खेती करनेवाले बड़े आदमी की स्त्री होती है।।७७।। और जिसके हाथ में चमर, अंकुश, धनुष के समान रेखा होवे वह नारी राजा की रानी होती है और जिसके हाथ में अँगूठे के जड़ से रेखा चलकर कनिष्ठिका पर्यंत चली जाय।।७८।। वह नारी पति को मारनेवाली होती है उसको दूर से ही त्याग करना

चाहिये और जिसके हाथ में त्रिशूल, गदा, तलवार, शक्ति, नगाड़े के समान रेखा होवे।।७८।। वह नारी त्यागकर के अर्थात् दान देने से धरती के ऊपर बड़ी यशवान होती है और परंदक, मेंड़क वा गीदड़ वा भेड़िया व बिच्छू वा सर्प।।८०।। गधे के समान वा ऊंट के वा बिल्ली के समान रेखा जिस नारी के हाथ में होवे वह दुःख देनेवाली होती है।।

अथ हस्तांगुष्ठलक्षणमाह

शुभदः सरलोंगुष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदुः ।।८१।।

अर्थ–जिसके हाथ के अँगूठे सीधे गोल होवे वह शुभ होते हैं और स्त्रियों के हाथ के अँगूठे के नाखून गोल नखों वाले कोमल शुभ होते हैं।।८१।।

अथागुंलिलक्षणमाह

अंगुल्यश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः क्रमात्कृशाः ।
चिपिटाः स्थपुटा रूक्षाः पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ।।८२।।
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विरला रोमहेतुकाः ।
दुःखायांगुलयः स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः ।।८३।।

अर्थ–सुंदर पोरुओंवाली गोल क्रम करके आगे से दुर्बल शुभ होती हैं और चिपटी मोटी रूखी पीठ में जिनके रुगटें ऐसी अंगुली अशुभ होती हैं।।८२।। और ज्यादे छोटी पतली टेढ़ी रुगटेंवाली विरली बहुत गांठवाली अंगुली स्त्रियों को दुःख देनेवाली होती हैं।।८३।।

अथांगुलीनखलक्षणमाह

अरुणाः सशिखास्तुंगाः करजाः सुदृशां शुभाः ।
निम्ना विवर्णाःशुक्त्याभाःपीता दारिद्रयदायकाः।।८४।।

नखेषु बिंदवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियाः ।
पुरुषा अपि जायंते दुखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥८५॥

अर्थ–लालवर्ण के चोटीदार ऊंचे नखवाली स्त्री शुभ होती है मुलायम और फैले हुए सीप के माफिक पीले ऐसे नखवाली स्त्रियां दरिद्रिणी होती है॥८४॥ और जिन औरतों के नाखूनों में सफेद बिंदे होवे वो स्त्री अक्सर अपने मन के माफिक घूमनेवाली होती हैं और जिन मनुष्यों के नाखूनों में सफेद बिंदे अर्थात् छीटे हों वह पुरुष भी दुःख पाते हैं॥८५॥

अथ पृष्ठलक्षणमाह

अंतर्निमग्नवंशास्थिः पृष्ठिः स्यान्मांसला शुभा ।
पृष्ठेन रोमयुक्तेन वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥८६॥
भुग्नेन विनतेनापि सशिरेणापि दुःखिता ।

अर्थ–जिस औरत की पीठ भीतर को नीची और बांस के माफिक टेढ़ी हाड़वाली और मांसकरके पुष्ट ऐसी पीठवाली औरत शुभ होती है और जिस नारी की पीठ रुगटों करके सहित हो वह विधवा होती है॥८६॥ और जिसकी पीठ कुटिल नीची नसों करके सहित हो वह नारी दुःखित होती है॥

अथ कृकाटिकालक्षणमाह

ऋज्वी कृकाटिका श्रेष्ठा समांसा च समुन्नता ॥८७॥
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिला शुभा ॥

अर्थ–जिस औरत की काठी सुधी मांस के सहित ऊंची हो वह श्रेष्ठ होती है॥८७॥ और जिस औरत की काठी सूखी नसों करके सहित रुगटों वाली ऊंची कुटिल होवे उसको अशुभ जानिये॥

अथ कण्ठलक्षणमाह

मांसलो वर्तुलः कण्ठः प्रशस्तश्चतुरंगुलः ॥८८॥
शस्ता ग्रीवा त्रिरेखाङ्का त्वव्यक्तास्थिः सुसंहता ।
निर्मांसा चिपिटा दीर्घा स्थपुटा न शुभप्रदा ॥८९॥
स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किङ्करी ।
वंध्या हि चिपिटग्रीवा ह्रस्वग्रीवा च निःसुता ॥९०॥

अर्थ–जिस स्त्री का कंठ मांसकरके सहित गोलाकार चार अंगुल का होवे वह शुभ होता है॥८८॥ और जिसका गला तीन रेखाओं करके अंकित छिपी हुई अस्थियोंवाला होवे वह शुभ होता है और जिस नारी का गला मांसरहित चिपटा बड़ा लंबा नीचा होवे वह शुभ नहीं होता है॥८९॥ और जिस नारी की गर्दन मोटी होय वह विधवा होती है और टेढ़ी गर्दनवाली दासी होती है और चपटी गर्दनवाली बांझ होती है छोटी गर्दनवाली संतानहीन होती है॥९०॥

अथ चिबुकलक्षणमाह

चिबुकं द्व्यंगुलम् शस्तं वृत्तं पीनं सुकोमलम् ।
स्थूलं द्विधा संविभक्तमायतं रोमशं त्यजेत् ॥९१॥

अर्थ–जिस औरत की ठोडी दो अंगुल सुंदर गोल मोटी मुलायम शुभ होती है और पुष्ट मोटी दो भागवाली चौड़ी रोमवाली अशुभ होती है॥९१॥

अथ हनुलक्षणमाह

हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा ।
वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदा ॥९२॥

अर्थ–जिस नारी के ठोडी के ऊपर का स्थान रोमरहित सुंदर घन

होय वह शुभ होता है और टेढ़ा मोटा दुर्बल छोटा रोमसहित हो तो नेष्ट होता है।।९२।।

अथ कपोललक्षणमाह

शस्तौ कपोलौ वामाक्ष्याः पीनवृत्तौ समुन्नतौ ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ परिवर्जयेत् ।।९३।।

अर्थ–जिस स्त्री के गाल मोटे गोल ऊंचे होय तो शुभ होते हैं और रुगटोंसहित कठोर नीचे मांसरहित नेष्ट होते हैं।।९३।।

अथ मुखलक्षणमाह

सम समांसं सुस्निग्धं स्वामोदं वर्तुलं मुखम् ।
जनितृवदनच्छायं धन्यानामिह जायते ।।९४।।

अर्थ–जिस औरत का मुख मांसयुक्त चिकना सुगंधियुक्त, गोलाकार और उसके पिता के मुख के समान होवे ऐसी स्त्रियां संसार में धन्य होती हैं।।९४।।

अथ अधरोष्ठलक्षणमाह

पाटलो वर्तुलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः ।
सीमंतिनीनामधरो धराजानिप्रिया भवेत् ।।९५।।
कृशः प्रलंबः स्फुटितो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः ।
श्यावः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रियः ।।९६।।

अर्थ–जिस औरत के नीचे के ओष्ठ गुलाब के फूल के समान और चिकने गोल और रेखाओं करके शोभायमान है मध्यस्थल जिसका, इस प्रकार की नारी राजा की प्यारी होती है।।९५।। और दुर्बल लंबे स्फुटित अर्थात् फटे रूखे ओष्ठ दौर्भाग्य करनेवाले होते हैं और पीलाई लिये मोटे ओष्ठवाली स्त्री होती है और विधवा लड़ाई जिसको प्यारी ऐसी होती है।।९६।।

अथोद्ध्वौष्ठलक्षणमाह

मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः ।
किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमा विपरीतो विरुद्धकृत् ॥९७॥

अर्थ–जिस औरत के ऊपर के ओष्ठ नसोंरहित चिकने होवें वह भोग देते हैं और कुछ बीच में ऊंचा रोगटेंहीन शुभ होता है और जो ऊपर की लौटा होय तो नेष्ट जानो॥९७॥

अथ दंतलक्षणमाह

गोक्षीरसन्निभाः स्निग्धा द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः ।
अधस्तादुपरिष्टाश्च समास्तोकसमुन्नताः ॥९८॥
पीताः श्यावाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा पंक्तयः ।
शुक्त्याकाराश्च विरला दुःख दौर्भाग्यकारणम् ॥९९॥
अधस्तादधिकैर्दन्तैर्मातरं भक्षयेत्स्फुटम् ।
पतिहीना च विकटैः कुलटा विरलैर्भवेत् ॥१००॥

अर्थ–जिस स्त्री के दांत गौ के दूध के माफिक सफेद चिकने बत्तीस दांत शुभ होते हैं और नीचे के दांतों से ऊपर के दांत समान कुछ एक ऊंचे होवें तो शुभ होते हैं॥९८॥ और पीले वर्ण के वा बंदर के वर्ण के समान मोटे लंबे दो पंक्तिवाले सीपी की समान छिदरे इस प्रकार के दांत दुःख और दौर्भाग्य के बतानेवाले होते हैं॥९९॥ और जिस औरत के नीचे के दांतों से ऊपर के दांत अधिक होवे वह स्त्री माता को नाश करती है और फटे हुये विकराल दांतवाली स्त्री पति को नाश करती है और छिदरे दांतवाली नारी कुलटा होती है॥१००॥

अथ जिह्वालक्षणमाह

जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा मृद्वी तथा सिता ।
दुःखाय मध्यसंकीर्णा पुरोभागसविस्तरा ॥१०१॥

सितया तोयमरणं श्यामया कलहप्रिया ।
दरिद्रिणी मांसलया लंबयाऽभक्ष्यभक्षिणी ॥१०२॥
विशालया रसनया प्रमदातिप्रमादभाक् ।

अर्थ–जिस औरत की जीभ सुर्ख मुलायम हो वह नारी इष्ट मिष्ट पदार्थ भोजन करती है तैसे ही सफेद वर्ण की आगे से विस्तारवाली बीच में संकुचित जीभवाली स्त्री दुःख भोगती है॥१०१॥ और सफेद जीभवाली नारी जल के दुःख से मरती है और काली जीभवाली स्त्री को लड़ाई प्यारी होती है और मोटी जीभवाली स्त्री दरिद्रिणी होती है लंबी जीभवाली स्त्री न खाने योग्य चीज को खाती है॥१०२॥ और बड़े विस्तारवाली जीभ की औरत बहुत झूंठ बोलनेवाली मदमाती होती है॥

अथ तालुलक्षणमाह

स्निग्धं कोकनदाभासं प्रसक्तं तालु कोमलम् ॥१०३॥
सिते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत् ।
कृष्णेऽपत्यवियोगार्ता रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी ॥१०४॥

अर्थ–जिस औरत का तालू स्निग्ध चिकना कमल के समान लाली लिये होय तो वह नारी कोमल तालुवाली उत्तम होती है॥१०३॥ और जिस नारी का सफेद तालू होय तो विधवा होती है और पीले तालूवाली सन्यासिनी होती है और काले तालूवाली संतान के वियोग से दुःखी होती है और रूखे तालुवाली बहुत कुटुंबवाली होती है॥१०४॥

अथ घंटिकालक्षणमाह

कंठे स्थूला सुवृत्ता च क्रमतीक्ष्णा सुलोहिता ।
अप्रलंबा शुभा घंटा स्थूला कृष्णा च दुःखदा ॥१०५॥

अर्थ–जिस औरत के कंठ के भीतर का काग मोटा गोल क्रम करके तीक्ष्ण लाली लिये शुभ होता है और लंबा मोटा काला होय तो अशुभ होता है।।१०५।।

अथ हसनलक्षणमाह

अलक्षितद्विज किंचित्किंचित्फुल्लकपोलकम् ।
स्मितं प्रशस्तं सुदृशामनिमीलितलोचनम् ।।१०६।।

अर्थ–जिस औरत के हँसने के समय थोड़े दाँत दीखें और गाल थोड़े ऊंचे उठे और आँखे बंद न होवैं इस प्रकार का हँसना जिस औरत का होवे वह श्रेष्ठ होती है।।१०६।।

अथ नासिकालक्षणमाह

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभावहा ।
स्थूलाग्रा मध्यनिम्ना च न प्रशस्ता समुन्नता ।।१०७।।
आंकुचितारुणाग्रा च वैधव्यक्लेशदायिनी ।
परप्रेष्या च चिपटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया ।।१०८।।

अर्थ–जिस औरत की नाक बराबर गोल दोनों नथने जिसके और छोटे छेदवाली नाक जिसकी वह शुभ होती है और जिसकी नाक आगे से मोटी बीच में नीची और पीछे ऊंची ऐसी हो वह शुभ नहीं होती है।।१०७।। जिसकी नाक आगे से सकुची आगे से लाल होवे वह विधवा क्लेशदायक होती है और चिपटी नाकवाली दूती होती है और बहुत छोटी या बहुत बड़ी नाकवाली औरतको लड़ाई प्रिय होती है।।१०८।।

अथ च्छिक्कालक्षणमाह

दीर्घायुः कृत्क्षुतं दीर्घं युगपद्धि त्रिपिण्डितम् ।

अर्थ–जिस औरत के लंबे श्वास करके दो तीन छींक आवें वह नारी बड़ी आयुष्य पाती है।।

अथ चक्षुर्लक्षणमाह

ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके ।।१०९।।
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी ।
उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ।।११०।।
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना ।
कामगृहीता नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्वृता ।।१११।।
पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी ।
कोटरानयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना ।।११२।।
पुंश्चली वामकाणाक्षी वंध्या दक्षिणकाणिका ।
मधुपिंगाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभाक् ।।११३।।

अर्थ–जिस औरत के नेत्र लाली लिये काली पुतलीवाले हों वे शुभ होते हैं।।१०९।। गौ के दूध के समान सफेदी लिये विशाल चिकने काली पुतलियोंवाले शुभ होते हैं और ऊंचाई करके हीन नेत्रवाली बड़ी उमर पाती है और गोल नेत्रवाली कुलटा होती है।।११०।। मेंढ़केसे व भैंसके से गिंगचेके से नेत्रवाली शुभ नहीं होती है और गौ के समान पिङ्गलवर्ण के नेत्रवाली सदैव कामकला में तत्पर होती है।।१११।। और कबूतरके से नेत्रवाली खोटे स्वभाववाली होती है लाल नेत्रवाली स्वामी का घात करती है और कोटरा नेत्रवाली दुष्टा होती है हाथी के नेत्रवाली शुभ नहीं होती है।।११२।। और बांई आंख से कानी औरत वेश्या होती है और दाहिनी आंखसे कानी औरत बांझ होती है और सहतेके समान पीले वर्णके नेत्रवाली औरत धनधान्य अनेक समृद्धियों सहित होती है।।११३।।

अथपक्ष्मलक्षणमाह

पक्ष्मभिः सुघनैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः सुभाग्ययुक् ।।
कपिलैर्विरलैः स्थूलैर्निंद्या भवति भामिनी ।।११४।।

अर्थ–जिस स्त्री के पलक घने चिकने श्यामता लिये सूक्ष्म होंय वे अच्छे भाग्य को करते हैं और कपिलवर्ण के विरले मोटे जिस नारी को होंय वह निंदित होती है।।११४।।

अथ भ्रूलक्षणमाह

भ्रुवौ सुवर्तुले तन्व्याः स्निग्धे कृष्णे असंहते ।
प्रशस्ते मृदुरोमाणौ सुभ्रुवः कार्मुकाकृती ।।११५।।
खररोमा च पृथुला विकीर्णा सरला स्त्रियाः ।
नभ्रूः प्रसस्ता मिलिता दीर्घरोमा च पिङ्गला ।।११६।।

अर्थ–जिस औरत की भौंहें चिकनी काली आपस में एक से एक मिली न होवें कमान की तरह गुलाई लिये शुभ होती हैं, और कोमल रोमवाली धनुष्य के समान आकृतिवाली शुभ होती हैं।।१५।। और कठोर रोमवाली या गधेके से बालवाली मोटी फैली हुई सूधी आपस में मिली हुई बहुत लंबी पिङ्गलवर्ण की शुभ नहीं होती है।।११६।।

अथ कर्णलक्षणमाह

लंबौ कर्णौ शुभावर्तौ सुखदौ च शुभप्रदौ ।
शष्कुलीरहितौ निंद्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ ।।११७।।

अर्थ–जिस औरत के लंबे कान गुलाई लिये सुख के देनेवाले हो वे शुभ होते हैं चौड़ाई रहित बहुत नसेंवाले दुर्बल कुटिल अशुभ होते हैं।।११७।।

अथ भाललक्षणमाह

भालः शिराविरहितो निर्लोमार्धेन्दुसन्निभः ।
अनिम्नस्त्र्यङ्गुलोनार्याःसौभाग्यारोग्यकारणम्।।११८।।
व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसंपदे ।
प्रलंबं मस्तकं यस्या देवरं हंति सा ध्रुवम् ।।११९।।

रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी मता ।।१२०।।

अर्थ–जिस औरत का कपाल नसों रहित रोमहीन अर्द्धचन्द्र के समान तीन अंगुल ऊंचा होय वह नारी सौभाग्यवती निरोगिणी होती है।।११८।। और जिसके ललाट में प्रकाशमान् कल्याणकारिणी रेखा होय वह राज्यसंपदादायक जानो और जिसका लंबा माथा होय वह नारी अपने देवर का नाश करती है।।११९।। और जिसके माथे में रुगटे और नसें होंवे तथा लंबे मस्तकवाली रोगिणी होती है।।१२०।।

अथ सीमंतलक्षणमाह

सीमंतः सरलः शस्तो–

अर्थ–जिस औरत की मांग सीधी होवे वह शुभ होती है।

अथ शीर्षलक्षणमाह

मौलिः शस्तः समुन्नतः ।
गजकुंभनिभो वृत्तः सौभाग्यैश्वर्यसूचकः ।।१२१।।

अर्थ–जिसका शिर ऊंचा हाथी के मस्तक के समान गोल होवे वह सौभाग्य ऐश्वर्यदायक होती है।।१२१।।

अथ मूर्द्धलक्षणमाह

स्थूलमूर्द्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बंधकी ।
विशालेनापि शिरसा भवेद्दौर्भाग्यभाजनम् ।।१२२।।

अर्थ–जिस औरत का चोटी का स्थान मोटा होय वह विधवा होती है।। और बड़ा चोटी का स्थान होने से पापिनी होती है और बड़े शीसवाली औरत दुष्टभागिनी होती है।।१२२।।

अथ केशलक्षणमाह

केशा अलिकुलच्छायाः सूक्ष्माः स्निग्धाः सुकोमलाः ।
किंचिदाकुंचिताग्राश्च कुटिलाश्चातिशोभनाः ।।१२३।।

परुषाः कुटिलाग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः ।
पिङ्गला लघवो रूक्षा दुःखदारिद्र्यबंधनाः ।।१२४।।

अर्थ–जिस औरत के बालों की पंक्ति घूंघरवाले बारीक चिकने कोमल आगे से कुण्डल के समान होवे कुटिल श्याम होवें वह केश अतिशुभ होते हैं।।१२३।। जिसके बाल आगे से कुटिल छिदरे पिङ्गलवर्ण के छोटे रूखे वे बाल दुःख दारिद्र्य बंधन को देते हैं।।१२४।।

तस्मात्परीक्ष्य मतिमान्कन्यां लक्षणसंयुताम् ।
विवहेत यथा न स्यात्सर्वथानर्थभाजनम् ।।१२५।।

इति श्रीवंशावरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डित-श्यामलालविरचिते स्त्रीजातके षट्षष्टिलक्षणवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

अर्थ–पहिले बुद्धिमान् पुरुष पूर्वोक्त लक्षणों में से कहे हुए श्रेष्ठ लक्षणोंवाली कन्या को परीक्षा करके विवाह करे जिससे विवाह करने से क्लेश को नहीं पाता है।।१२५।।

इति श्रीवंशावरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिपण्डित-श्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीहिन्दीटीकायां षट्षष्टिलक्षणवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

अथातः संप्रवक्ष्यामि तिलमशकादिलक्षणम् ।
येन विज्ञानमात्रेण न मज्जेद्दुःखसागरे ।।१।।

अर्थ–अब स्कंदजी कहते हैं–हे अगस्त्य! अब तिल मस्सा लहसन इत्यादि के लक्षण मैं कहता हूं जिनके जानने मात्र करके मनुष्य दुःखसागर में नहीं डूबता है।।१।।

अथ भ्रूमध्ये तिलमशकलक्षणमाह

भ्रुवोरंतर्ललाटे वा मशको राज्यसूचकः ।

अर्थ–जिस औरत के भौंह के बीच में या माथे में मस्सा होवे तो वह नारी अपने कुल के अनुसार राज्य को प्राप्त होती है और राजकन्या के होय तो वह बहुत बड़े राज्य को प्राप्त होती है।।

अथ वामकपोले रक्तमशकचिह्नमाह

वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः स्मृतः ।।२।।

अर्थ–जिस औरत के बायें गाल में लाली लिये मस्से का चिह्न हो वह नारी मिष्टान्न का भोग भोगती है।।२।।

अथ हृदये तिलादिचिह्नमाह

तिलकं लांछनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम् ।

अर्थ–जिस औरत के हृदय में तिल का चिह्न होवे वह नारी सौभाग्य को प्राप्त होती है।।

अथ दक्षिणस्तने रक्तचिह्नमाह

यस्या दक्षिणवक्षोजे शोणे तिलकलाञ्छने ।।३।।
कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयम् ।।

अर्थ–जिस औरत के दहने स्तन में लाल तिल वा मस्सा का चिह्न होवे।।३।। वह नारी चार कन्या और तीन पुत्र पैदा करती है।।

अथ वामस्तने तिलादिचिह्नमाह

तिलकं लांछनं शोणं यस्या वामस्तने भवेत् ।।४।।
एकं पुत्रं प्रसूयादौ ततः सा विधवा भवेत् ।।

अर्थ–जिस औरत के बाँये कुच पर तिल वा मस्से का लाल चिह्न होवे।।४।। वह नारी एक पुत्र पैदा होने के बाद विधवा होती है।।

अथ दक्षिणगुह्ये तिलचिह्नमाह

गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलकं यदि योषितः ।।५।।
तदाक्षितिपतेः पत्नी सूते वा क्षितिपं सुतम् ।।

अर्थ–जिस औरत के गुह्यस्थान अर्थात् भग के दहिने भाग में तिल होवे वह नारी ।।५।। राजा की रानी होती है अथवा राज्य करनेवाले पुत्र को पैदा करती है।।

अथ नासाग्रे तिलचिह्नमाह

नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ।।६।।
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्याश्च प्रकीर्तितः ।।

अर्थ–जिस औरत के नाक के अग्रभाग में लाल मस्सा होय वह नारी रानी होती है।।६।। और वही मस्सा काले वर्ण का होवे वह नारी स्वामी का नाश करनेवाली व्यभिचारिणी होती है।।

अथ नाभेरधस्तात्तिलचिह्नमाह

नाभेरधस्तात्तिलकं मशको लांछनं शुभम् ।।७।।

अर्थ–जिस औरत के नाभि के नीचे तिल मस्सा लहसन सा कोई चिह्न होवे तो वह शुभ होता है।।७।।

अथ गुल्फे तिलचिह्नमाह

मशकस्तिलकं चिह्नं गुल्पदेशे दरिद्रकृत् ।।

अर्थ–जिस नारी के गुल्फ याने जांघों में तिल मस्सा लहसन होवे तो दरिद्रकारक जानो।।

अथबाह्वंगे चिह्नमाह

करे कर्णे कपोले वा कंठे वामे भवेद्यदि ।।८।।
एषां त्रयाणामेकं तु प्रागगर्भे पुत्रदं भवेत् ।।

अर्थ–जिस नारी के हाथ कान गाल कंठ बांयें अंग में तिल लहसन मस्सा इन तीनों में से एक भी होय तो वह नारी पहिले पहिले पुत्र पैदा करती है।।८।।

अथ भाले त्रिशूलचिह्नमाह

भालगेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयंभुवा ॥
नितंबिनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदाप्नुयात् ॥९॥

अर्थ–जिस औरत के माथे में त्रिशूल का चिह्न ब्रह्मा ने बनाया होय वह नारी एक हजार स्त्रियों की स्वामिनी होती है॥९॥

अथ दंतघर्षणलक्षणमाह

सुप्ता परस्परं या तु दन्तान्किटिकिटायते ।
सुलक्षणा प्यशस्ता सा या किंचित्प्रलपेत्तथा ॥१०॥

अर्थ–जो नारी सोते के बीच में दाँतों को आपस में किड़किड़ावे अथवा घिसे वह नारी अच्छे लक्षणोंसहित भी होवे तो भी नेष्ट होती है॥१०॥

अथ रोमावर्तचक्रलक्षणमाह

पाणौ प्रदक्षिणावर्तो धन्यो वामो न शोभनः ।

अर्थ–जिस नारी के हाथों में दक्षिणावर्त चक्र होवे अथवा हाथों की पीठ पे रोमावली का दक्षिणावर्त चक्र होवे वह चक्र शुभ होता है वामावर्त अशुभ होता है॥

अथ नाभौ चक्रलक्षणमाह

नाभौ श्रुतावुरसि वा दक्षिणावर्त ईडितः ॥११॥

अर्थ–जिस नारी के टूडी व कान हृदय पर रोमावली का दक्षिणावर्त्त चक्र होवे वह शुभ होता है वामावर्त अशुभ होता है॥११॥

अथ पृष्ठे चक्रलक्षणमाह

सुखाय दक्षिणावर्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ।

अर्थ–जिस स्त्री की पीठ के दहने भाग में रोमावली का दक्षिणावर्त्त चक्र होवे वह शुभ होता है।

अथ षष्ठे वर्तुलाकारचक्रमाह

अतः पृष्ठे नाभिसमो बह्वायुः पुत्रवर्द्धनः ।।१२।।

अर्थ–और जिसकी पीठ में गोलाकार नाभि के समान बीचोबीच में चक्र होवे वह नारी बडी उमरवाले पुत्रों की वृद्धि करती है।।१२।।

अथ भगललाटे चक्रमाह

राजपत्न्याः प्रदृश्येते भगमौलिप्रदक्षिणः ।
स चेच्छकटभंगः स्याद्बहुपुत्रसुखप्रदः ।।१३।।

अर्थ–और जिस स्त्री के भग के माथे पर दक्षिणावर्त्त चक्र हो वह नारी राजपत्नी होती है और जो टूटे हुए शकल की तरह भग के ऊपर चिह्न होवे तो वह नारी बहुत पुत्रों का सुख पाती है।।१३।।

अथ कटिगुह्यस्थलेचक्रमाह

कटिगो गुह्यकावर्तः पत्यपत्यविनाशिनी ।

अर्थ–और जिसके कमर में वा गुह्यस्थल में रोमावली का चक्र होवे वह नारी पति और पुत्रों का नाश करती है।।

अथ पृष्ठोदरे चक्रमाह

स्यातासुदरवेधेनं पृष्ठावर्तौ न शोभनौ ।।१४।।
एकेन हंति भर्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ।

अर्थ–जिस नारी के पेट और पीठ में दोनों रोमावली का चक्र होवे तो वह नारी शुभ नहीं होती है।।१४।। जो एक चक्र होवे तो स्वामी का नाश करे और दोनों चक्र होवें तो वह नारी व्यभिचारिणी होती है।।

अथ कण्ठे चक्रलक्षणमाह

कंठगो दक्षिणावर्तो दुःखवैधव्यहेतुकः ।।१५।।

अर्थ–और जो कण्ठ में रोमावली का चक्र होवे तो वह नारी अनेक प्रकार व्याधियुक्त विधवा होती है।।१५।।

अथ सीमांतललाटे चक्रमाह

सीमंतेथ ललाटे वा त्याज्या दूरे प्रयत्नतः ।
सा पतिं हन्ति वर्षेण यस्या मध्ये कृकाटिकाम् ।।१६।।

अर्थ–जिस नारी के मांग में या माथे में या काठी में रोमावली का चक्र होवे वह नारी एक वर्ष के भीतर ही पति को नाश करती है। उसको दूर से ही त्याग करना चाहिए।।१६।।

अथ शिखास्थाने चक्रमाह

प्रदक्षिणो वा वामो वा रोम्णामावर्त्तकः स्त्रियाः ।
एको वा मूर्द्धनि द्वौ वा वामे वामगती अपि ।।१७।।
आदशाहं पतिघ्नौ तौ त्याज्यौ दूरात्सुबुद्धिना ।

अर्थ–जिस औरत के दक्षिणावर्त और वामावर्त में रोमावली का चक्र चोटी के स्थान में एक अथवा दो हो तो वामावर्त चक्र नेष्ट है।।१७।। वह नारी दश दिन के भीतर पति को नाश करती है उसको बुद्धिमान् दूर से त्याग करे।।

अथ कटिचक्रमाह

कट्यावर्ता च कुलटा–

अर्थ–जिसके कमर में रोमावली का वामावर्त्त चक्र होवे, वह कुलटा होती है।

अथ नाभौ चक्रलक्षणमाह

–नाभ्यावर्ता पतिव्रता ।।१८।।

अर्थ–जिसके टूडी में चक्र होवे वह पतिव्रता होती है।।१८।।

अथ पृष्ठे चक्रमाह

पृष्ठावर्ता च भर्तृघ्नी कुलटा वाथ जायते ।।१९।।

अर्थ–जिसकी पीठ में वामावर्त चक्र होवे वह पति को नाश करनेवाली व्यभिचारिणी होती है।।१९।।

स्कंद उवाच

अथ सुलक्षणावतीत्याज्यत्वमाह

सुलक्षणापि दुःशीला कुलक्षणशिरोमणिः ।

अर्थ–अब स्कंदजी कहते हैं जो स्त्री सर्वलक्षणसंपन्न हो और दुःशीला व्यभिचारिणी होय उसको सर्वथा त्याग करना चाहिए। वह नारी कुलक्षणवती स्त्रियों में शिरोमणि समझना चाहिए।।१९।।

अथ कुलक्षणवतीग्राह्यत्वमाह

अलक्षणापि या साध्वी सर्वलक्षणसंयुता ।।२०।।

अर्थ–जो स्त्री संपूर्ण कुलक्षणों करके संयुक्त हो और पतिव्रता होय वह नारी सर्वलक्षणवती स्त्रियों में अग्रणी गिनी जाती है।।२०।।

अथोत्तमस्त्रीप्राप्तियोगमाह

सुलक्षणा सुचारित्रा स्वाधीना पतिदेवता ।
विश्वेशानुग्रहादेव गृहे योषिदवाप्यते ।।२१।।

अर्थ–सर्वशुभलक्षणवती नारी शुभचरित्रों से युक्त अपने पति के अधीन निज पति है देव जिसके ऐसे स्त्री शिवजी की कृपा से घर में प्राप्त होती है।।२१।।

अथ स्त्रीणां सौंदर्यहेतुमाह

अलंकृताः सुवासिन्यो याभिः प्राक्तनजन्मनि ।
नानाविधैरलंकारैस्ताः सुरूपा भवंति हि ।।२२।।

सुतीर्थेषु वपुर्याभिः क्षालितं वा विहाय तत् ।
ता लावण्यतरंगिणो भवंतीह सुलक्षणाः ।।२३।।

अर्थ–जिस नारी ने पूर्वजन्म में क्वाँरी कन्या वा ब्राह्मण की स्त्रियों को अनेक वस्त्र और आभूषणों करके अलंकृत किया है वह नारी इस जन्म में सुंदर रूपवती होती है।।२२।। जिस स्त्री ने पूर्व जन्म में अच्छे तीर्थों में शरीर को स्नान कराया अथवा उत्तम तीर्थों में देह का त्याग किया है वह नारी श्रेष्ठ रूपवती सर्वलक्षण संपन्न स्त्रियाँ होती है।।२३।।

अथ पतिवश्यमाह

अर्चिता जगतां माता याभिर्मृडवधूरिह ।
ता भवन्ति सुचारित्रा योषाः स्वाधीनभर्तृकाः ।।२४।।
स्वाधीनपतिकानां च सुशीलानां मृगीदृशाम् ।
स्वर्गापवर्गावत्रैव सुलक्षणफलं हि तत् ।।२५।।

अर्थ–जिन स्त्रियों ने इस जन्म में पार्वती वा दुर्गा भवानी का पूजन किया है सो नारी सर्वगुणसंपन्न अच्छे चरित्रों वाली पति को वश में करनेवाली होती हैं।।२४।। और जिन स्त्रियों के वश में पति है और सुन्दर है स्वभाव जिनका उन स्त्रियों को स्वर्ग तथा मोक्ष इसी जगह है। ये श्रेष्ठ लक्षणोंवाली स्त्रियों का निश्चय करके फल जानना।।२५।।

अथ साध्वीप्रसंगाद्दीर्घायुष्यमाह

सुलक्षणैः सुचरितैरपि मंदायुषं पतिम् ।
दीर्घायुषं प्रकुर्वंति प्रमदाः प्रमदास्पदम् ।।२६।।

अतः सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणः ।
लक्षणानि परीक्ष्यादौ हित्वा दुर्लक्षणान्यपि ॥२७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज–
राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके–
तिलमशकादिलक्षणवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

अर्थ–अच्छे लक्षणों करके उत्तम चरित्रों करके थोड़े आयुष्यवाले पति को आनंद करके दीर्घायु कर देती है॥२६॥ इस कारण से विवाह के पहिले लक्षणों की परीक्षा करके और दुष्टलक्षणवती को त्याग करके सुलक्षणवती स्त्री को बुद्धिमान विवाह करे॥२७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज–
राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी
हिन्दीटीकायां तिलमशकादिवर्णनो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

*प्राहुस्तुल्यं नरवनितयोर्जन्म होराविधिज्ञाः ।
किंतु स्त्रीणां फलमनुचितं तत्पतौ तत्प्रकल्प्यम् ॥

---

*वराहः–"यद्यत्फलं नरभवे क्षममङ्गनानां तत्तद्वदत्पतिषु वा सकलं विधेयम् तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु लग्नेंदुगः शुभगजास्तमये पतिश्च ॥१॥" तथाच–"लग्न शशांकेच वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैभवानि सुताख्यभावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेह ॥२॥ यज्जन्मकालाद्गदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव । स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥३॥" अन्यच्च ग्रंथांतर–"स्त्रीपुरुषयोः समानं योग्या दशा पूर्वोक्तम् । यद्यद्योग्यं पतिसौभाग्यं तत्तत्सर्व वदेत्स्वनाथषु"॥४॥

द्यूनाद्वाच्यःपतिशुभगते रंध्रगे भर्तृमृत्यु–
र्नीहारांशोरुदयगृहतस्तद्वपुश्चिंतनीयम् ।।१।।

अर्थ–जो फल पुरुषों के जन्मकाल में ज्योतिषशास्त्र जाननेवालों ने कहा है सो फल स्त्रियों को भी कहना चाहिए जैसे स्त्री पुरुष की परमायुदशा का विचार इत्यादि दोनों को बराबर कहना चाहिए और जो फल स्त्रियों के कहने लायक नहीं होयँ जैसे राजयोग अन्यकारकादि पति को सौभाग्यदायक सो योग स्त्री के पति को फलदायक कहना चाहिए और लग्न से वा चंद्रमा से सप्तम स्थान से पति का शुभ फल कहना चाहिए और लग्न वा चंद्रमा से अष्टमस्थान से भर्ता की मृत्यु का विचार करना और लग्न और चंद्रमा जिस स्थान में स्थित होय वहां से स्त्री के शरीर का विचार करना चाहिए।।१।।

अथस्त्रीणां वैधव्यसौभाग्य सुखसौंदर्य–
विचारस्थानमाह

वैधव्यं निधनगृहे पतिसौभाग्यं सुखं च यामित्रे ।
सौन्दर्यतां लग्नगृहे विचिन्तयेत्पुत्रसंपदं नवमे ।।२।।
एषुस्थानेषु युवत्यःसौम्याःशुभदाबलान्विताज्ञेयाः ।
क्रूरास्तुनेष्टफलदा भवनेशविवर्जिताः सदाचिंत्याः।।३।।

अर्थ–स्त्रियों के विधवायोग अष्टम स्थान से विचारना, और पति का सौभाग्य और पति का सुख सप्तम स्थान से विचार करना चाहिए और शरीर की खूबसूरती लग्न से देखना चाहिए और पुत्रसंपदा नवम स्थान से विचारना।।२।। जिन स्त्रियों के जन्मकाल में पहिले कहे हुए स्थानों में शुभ ग्रह बैठे होयँ तो शुभ फल देते हैं और पापग्रह इन स्थानों में स्थित होयँ तो नेष्ट फल देते हैं, केवल पुर्वोक्त स्थानों के स्वामी

पापग्रह अपने स्थान में स्थित होयँ तो उनको नेष्ट न कहना चाहिये किन्तु वे श्रेष्ठफलदाता होयँगे।।३।।

अथ पुरुषाकृतियोग:

पुरुषर्क्षे पुरुषांशे लग्नेन्द्वोः पापयुक्तयोर्जाता ।
पुरुषाकृतिशीलयुताभर्तुरयोग्यासमंजसाकन्या ।।४।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मलग्न में लग्न और चंद्रमा पुरुष राशि अर्थात् १।३।५।७।९।११ राशियों में स्थित होवे और इन्हीं राशियों के नवांश में स्थित होय और वहां लग्न चंद्रमा पापग्रहों करके युक्त वा दृष्ट होय तो वह कन्या पुरुष स्वभाववाली पति के लायक नहीं खराब होती है।।४।। तथा च गुणाकरः–**"पुंदेहशीलसहितान्यतमस्थयोश्च पापाः खलैर्गतिवृता युतदृष्टयोस्तु"।।**

अथ स्त्र्याकृतियोग:

समराशौ समभागे लग्नेन्द्वोः स्त्रीगुणान्विता कन्या ।
सौम्ययुते दृष्टे वा सुभगा साध्वी सुविख्याता ।।५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में समराशि अर्थात् २।४।६।८।१०।१२ इन राशियों में और इन्हीं के नवांश में लग्नचंद्रमा दोनों स्थित होवें तो वह नारी स्त्रियों की सी आकृतिवाली स्त्रीगुणोंसहित होती है। उन्हीं समराशिस्थित लग्न चन्द्रमा को शुभग्रह देखते होयँ वा युक्त होयँ तो वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवती पतिव्रता करके विख्यात संसार में होती है।।५।। वराहः–**"युग्मेषुलग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री सच्छीलभूषण युता शुभदृष्टयोश्च ।। ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा च पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना।।१।। गुणाकरः–"चन्द्राङ्गयोः समगृहे प्रकृति स्थितास्त्रीरूपान्विता शुभनिरीक्षितयोः सुशीला ।।"**

अथ मिश्राकृतियोगः

लग्नेन्दू विषमर्क्षगौ शुभयुतौ सौम्यग्रहालोकितौ
नारी मिश्रगुणाकृतिस्थितिगतिप्रज्ञावती जायते ।
युग्मागारगतौ तु पापसहितौ पापेक्षितौ वा तथा
तद्राशीशयुतेक्षितग्रहबलादायुः समस्तं विदुः ।।६।।

अर्थ–जिस नारीके जन्मकाल में चंद्रमा विषमराशि विषम नवांशाके स्थित होय और शुभग्रहों करके युक्त वा दृष्ट होय वह नारी मध्यम गुणोंवाली मिश्रचाल बुद्धिमती होती है और वही लग्न चंद्रमा समराशि समनवांशा में स्थित पाप ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय तो वह नारी मिश्रस्वभाववाली मिश्र गुणी होती है अथवा लग्नचंद्र राशीश को जो ग्रह देखते होयँ, उनका बल देख के संपूर्ण स्त्री की आयुष्य कहनी चाहिए।।६।।

अथ त्रिशांशबलविचारः

लग्नेंद्वोर्यो बलवांस्तस्य त्रिंशांशकैः फलं वाच्यम् ।
त्रिंशांशे बलवांस्तत्प्रोक्तफलानि निसर्गतो यान्ति ।।७।।

अर्थ–स्त्रियों के जन्मकाल में जन्मलग्न वा चंद्रमा इनमें से जो अधिक बलवान् होय तिसके त्रिंशांश से फल कहना। त्रिंशांश के बलते स्वाभाविक फल कहता हूँ।।७।।

अथ त्रिशांशवशात्फलमाह

अथ भौमगृहे लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशव शात्क्रमात्फलम्

लग्नेथवेन्द्रोकुजराशिपातेत्रिंशांशकस्थेकुजपूर्वकाणाम् ।
कन्यैवदुष्टासुशठाथसाध्वीदुर्वृत्तियुक्ता भवतीहदासी।।८।।

अर्थ–जिस स्त्री का लग्न और चंद्रमा मंगल के मेष या वृश्चिकराशि

में प्राप्त होय और पहिले मंगल के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह स्त्री विवाह के पहिले परपुरुष से भोग करती है और वही राशिस्थित लग्न चंद्रमा बुध के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह स्त्री शठ माया रचनेवाली होती है, और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पति के त्रिंशांश में स्थित होय तो पतिव्रता होती है और शुक्र के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या खोटी जीविका करनेवाली अतिनिंद्य होती है और वही लग्न चंद्रमा १ वा ८ राशि स्थित शनैश्चर के त्रिंशांश में होय तो वह कन्या दासी होती है॥८॥

तथा च वराहः—"कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वीसमा या कुचरित्रयुक्ता ॥ भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंशकेषु वक्रार्किजीवेन्दुजभार्गवाणाम् ॥१॥" तथा चः—"लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य खाग्नयंशके कन्या स्यादतिनिन्दिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् ॥। दुष्टा भूतनयस्य ननमुदिता सौम्यस्य मा याविनी दासी तिग्ममरी चिसूनुगगनाग्न्यंशे फलानि क्रमात् ॥" तथा च होरारत्ने:—"भौमर्क्षे भौमांशे कन्या मृतसुतगुणैर्हीना मन्दांशस्था प्रेष्याः दुःशीला बहुविधा नारी ॥१॥ पुत्रवती जीवांशे बहुव्ययार्ता पतिव्रता कन्या सौम्यांशे बहुमाया मलिनाचाराल्पप्रसूतिः स्यात् ॥२॥ कन्याजननी कन्या शुक्रांशे जारभोगसंतुष्टा ॥ भानोरप्येवं त्रिंशांशफलं समादेश्यम् ॥३॥"

अथ बुधभवने त्रिंशांशवशात्फलम्

तारानायकपुत्रभेऽवनिसुते त्रिंशल्लवेकार्पटा
शौक्रे हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ।
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितांतं तथा
खाग्यन्यंशेऽर्कसुतस्यसानिगदिताक्लीबस्यभार्याबुधैः ॥९॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न और चंद्रमा बुध की राशि ३।६ में स्थित मंगल के त्रिशांश में स्थित होय तो वह कन्या छली होती है। और वही लग्न चंद्रमा शुक्र के त्रिंशांश में स्थित हो तो वह कन्या रतिक्रीड़ा मे हीन होती है और वही लग्नचंद्रमा बुध के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या बहुत गुणों करके युक्त होती है और वही लग्नचन्द्रमा बृहस्पति के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या निरंतर पतिव्रता होती है और वही लग्न चन्द्रमा शनि के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या नपुंसक अर्थात् हिजड़ा की स्त्री होती है।।९।। **उक्तं च होरामकरंदे 'स्यात्कापटी गुणयुताथ सती बुधर्क्षे विक्षिप्तमन्मथमथो च नपुंसकश्च ।' तथा च वराहः–'स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ।।' वृद्धयवनः–''बुधभवने भौमांशे कन्या जारप्रियाल्प पुत्रा स्यात् ।।' मंदाशे क्लीबसमा मृतप्रजा वान्यभर्तृयुता ।।१।। साध्वी पति प्रिया वा जीवांशे क्षेत्रगते तुंगगे जीवे । सौम्यांशे च कुलाढ्या पशुधनभोगान्विता शुक्रे ।।२।।**

अथ गुरुभवने त्रिंशांशवशात्फलम्

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ।।
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवेन्नूनं
भानुसुतस्यचाल्पसुरताकांता बुधैःकीर्तिता ।।१०।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में लग्न वा चंद्रमा बृहस्पति की राशि में ९।१२ में स्थित मंगल के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी स्त्रियों में गुणवती होती है, और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पति के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी अनेक गुणों के गुणकरके विख्यात होती है और वही लग्न चंद्रमा बुध के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या उत्तम वैभव

करके संयुक्त होती है और शुक्र के त्रिशांश में लग्न चंद्रमा स्थित होय तो वह नारी पतिव्रता होती है और वही लग्नचन्द्रमा शनैश्चर के त्रिशांश में स्थित होय तो वह कन्या थोड़ी रति करनेवाली होती है। ऐसा पंडितजनों ने वर्णन किया है।। १०।। तथा च वराहः-"जीवर्क्षे भौमांशे कन्या व्यभिचारिणी सुविख्याता सौरांशे तु दरिद्रा कन्याजननी स्वतंत्रतानिरता ।।१।। जीवांशे तु धनाढ्या सौम्यांशे लोकपूजिता ललना । पुत्रवती शुक्रांशे षड्गुणयुक्ता पतिव्रता साध्वी ।।२।।" गुणाकरः-"गुणाढ्यैश्वर्यसंयुक्ता जीवर्क्षे गुणशालिनी ।। साध्वी स्वल्पगुणा प्रोक्ता भौमादीनामिहांशकैः ।।"

अथ भृगुभवने त्रिंशांशवशात्फलम्

दैत्याचार्यगृहे सुरेंद्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
लग्ने वाप्युडुनायके गुणवती भौमस्य दौष्ट्याधिका ।
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चञ्चद्गुणै-
र्युक्ताद्यैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ।।११।।

अर्थ-और जिस कन्या के जन्मकाल में लग्न और चंद्रमा शुक्र की राशि २।७ में स्थित होकर बृहस्पति के त्रिशांश में बैठे होंय वह कन्या स्त्रियों में गुणवती होती है और वही लग्न चंद्रमा मंगल के त्रिशांश में स्थित होवे तो वह कन्या दुष्ट होती है और बुध के त्रिशांश में स्थित होय तो वह कन्या समस्त चातुरीकला में कुशल होती है और वही लग्न चंद्रमा शुक्र के त्रिशांश में स्थित होय तो वह कन्या दीप्तिमान् गुणोंकरके युक्त होती है और वही लग्न चंद्रमा शनैश्चर के त्रिशांश में स्थित होय तो उस नारी के दो विवाह होते हैं।।११।। अथातः होरामकरन्देः-दुष्टा कलासु निपुणा गुणशालिनी च ख्याता गुणैर्भृगुगृहे वनिता पुनर्भूः' इति । अन्यच्च वृद्धयवन :-"सितभवने भौमांशे दुष्टा

खलप्रिया पतिद्वेष्या । मन्दांशे च पुनर्भूर्मृतप्रजा रोगसंयुता नित्यम् ।।१।। रूपान्विता गुणाढ्या जीवांशे भर्तृपुत्रसंपन्ना ।। कुचरित्रा सौम्यांशे काव्यकलागेयसंतुष्टा ।।२।। शुक्रांशे भोगवती विदग्धदयिता जगत्प्रिया ख्याता ।। पापयुते बलहीने त्रिंशांशनव पुष्टफलमेति ।।३।।"

अथ शनिभवने त्रिंशांशवशात्फलम्

मन्दालये खाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला । बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता सा वन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ।।१२।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शनैश्चर के १०।११ राशि में लग्न वा चंद्रमा स्थित होकर मंगल के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या दासी होती है और वही लग्न चंद्रमा बुध के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह स्त्री दुष्ट होती है और वही लग्नचंद्रमा बृहस्पति के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी पतिदेवता अर्थात् पतिव्रता होती है और वही लग्न चंद्रमा शुक्र के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी बांझ होती है और वही लग्नचंद्रमा शनैश्चर के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी नीच पुरुषों से गमन करनेवाली होती है।।१२।। गुणाकरः–दासी दुष्टा भर्तृभक्ता च वन्ध्या नीचासक्ता मन्दचंद्रांशतन्वोः ।। त्रिंशांशे तु क्ष्मासुतादिग्रहाणा-मुक्तं ज्ञेयं तत्फलं वीर्ययोगात् ।।" अन्यच्च ग्रन्थान्तरे– "मन्दर्क्षे भौमांशे दासी कुलटा मृतप्रजा कन्या ।। मन्दांशे संभूता नीचारातिश्च दुर्भागा वनिता ।।१।। भर्तृप्रिया च सुभगा जीवांशे नैकनामभिः ख्याता । भग्नव्रता च कुलटा बहुमाया सौम्यभस्यांशे । शुक्रांशे प्रभुशीला बंध्या चारित्रलोचना वनिता।। त्रिंशांशफलमेवं वक्तव्यं दैवविद्भिरबलायाः ।।३।।"

अथ सूर्यभवने त्रिंशांशवशात्फलम्

लग्ने वा विधुरर्कमंदिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यता शशिसुतस्यातीवदुष्टाशया ।
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः ।
पौंश्चल्याभिरताशनेरतितरांपुंवत्प्रगल्भाङ्गना ।।१३।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्न और चंद्रमा सूर्य के स्थान में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी अपनी इच्छाचारी विचरनेवाली होती है और वही लग्न चंद्रमा बुध के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी अत्यंत दुष्टा होती है और वही लग्न चंद्रमा वृहस्पति के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी राजपत्नी होती है और वही लग्नचन्द्रमा शुक्र के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह कन्या वेश्याकर्म में तत्पर होती है और वही लग्न चन्द्रमा शनि के त्रिंशाश में स्थित होय तो वह नारी पुरुष के समान प्रगल्भा होती है।।१३।। तथा च होरामकरन्दे **"स्वेच्छाचारा शिल्पिनी सद्गुणढ्या दुःशीला स्यात्कांतिहा चेंदुराशौ । वाचाटा च ब्रध्नभे पुंचरित्रा भौमे भार्यागस्यगा पुंश्चली च ।।१।।" अन्यच्चः–"वाचाटा रविभावे कुजभावे जारिणी विदेशरता ।। कुशला कुशीलदरिद्रा मंदांशे वल्लभा ज्ञेया ।।१।। पुरुषाकृतिशीलयुता सौम्यांशे कार्यचौरिणी कुलटा ।। कुपतिप्रियाल्पसुता शुक्रांशे नित्यरोगिणी भवति ।।२।।"**

अथ शशिभवने त्रिंशांशवशात्फलमाह

चंद्रागारे खाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्य
शिल्पे प्रवीणा । वाचां पत्युः सद्गुणा भार्गवस्य
साध्वी मंदस्य प्रियप्राणहंत्री ।।१४।।

अर्थ–जिस स्त्री के चंद्रमा के स्थान में ४ लग्न और चंद्रमा स्थित और

मंगल के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी अपने इच्छानुसार विचरनेवाली हो और वही लग्न चंद्रमा बुध के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी राजगिरी के काम में चतुर होती है और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पति के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी अच्छे गुणवाली होती है और वही लग्नचंद्रमा शुक्र के त्रिशांश में स्थित होय तो वह नारी पतिव्रता होती है और वही लग्नचंद्रमा शनैश्चर के त्रिंशांश में स्थित होय तो वह नारी अपने स्वामी के प्राणों को नाश करती।।१४।। अन्यच्च **ग्रंथांतरे उक्तं च–"शशिभवने भौमांशे स्वच्छंदा कामिनी विनष्टसुता ।। मंदांशे पतिहीना कृच्छ्रेणोपजीवनं लभते ।।१।। अल्पसुता क्षीणयुता जीवांशे शिल्पिनी बुधस्यांशे ।। वंध्या मृतप्रजा वा शुक्रांशेषु दुष्टतमा ।।२।।**

चन्द्रार्कस्फुटयोगात्त्रिशांशफलं विनिर्दिशेत्तस्याः ।
लग्नेंद्वोर्योगवशात्त्रिंशांशबलं विनिर्दिशेदथवा ।।१५।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थ गौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौति-षिकपंडितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके त्रिंशांशवशात्फलवर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अर्थ–चन्द्रमा और सूर्य के स्पष्ट योग से तिस औरत का त्रिशांश से फल कहना चाहिये अथवा लग्न चन्द्रमा के बलते त्रिशांश का फल कहे।।१५।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थ गौड़वंशावतंससश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-ज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीहिन्दी-टीकायां त्रिशांशफलवर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह सारावल्याम्

**शुक्रासितौ यदि परस्परभागसंस्थौ शौक्रेथ दृष्टि-
पथगावुदये घटांशः । स्त्रीणामतीव मदनाग्निमद-
प्रवृद्धः स्त्रीभिः समं च पुरुषाकृतिभिर्लभंते ॥१॥**

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र और शनैश्चर परस्पर नवांश में स्थित होवे अर्थात् शुक्र के नवांश में शनैश्चर और शनैश्चर के नवांश में शुक्र स्थित होय और अन्योन्य देखते होंय एको योगः । अथवा जन्मलग्न वृष वा तुला होय उसमें कुंभ के नवांश का उदय होय तो वह स्त्री अन्य स्त्री की जंघा में किसी वस्तु का लिंग बंधाकर उसको पुरुपाकृति बनायकर कामदेव की अग्नि को शमन करती है॥१॥ वराहः "दृक्संस्थावसितसितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवोंशः ॥ स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलं प्रदीप्तं संशांतिं नयति नराकृति स्थिताभिः ॥१॥" अन्यच्च होरामकरंदे "सवितृसुतसितौ स्तोन्योन्यभावं प्रयातौ यदि यदि भृगुराशौ लग्नगे कुंभभागे ॥ नरचरितरताभिः पंकजाक्षीभिरुच्चैः शमयति मदनाग्निं योगयुग्मेन योषा ॥२॥" जातकाभरणे "अन्योन्यभावेक्षणगौ सितार्कौ यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे ॥ कन्दर्पशांतिं कुरुते नितांतं नारी नराकारकराङ्गनाभिः ॥३॥"

अथ कापुरुषयोगः गर्गजातके

**शुद्धेऽस्ते दुर्बले यस्याः पापग्रहनिरीक्षिते ।
सौम्यग्रहदृशा हीने भर्ता कापुरुषो भवेत् ॥२॥**

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्मलग्न से सातवां स्थान में कोई ग्रह न होय और सप्तम स्थान निर्बल होय और सप्तम स्थान को पापग्रह देखता होय शुभग्रहों की दृष्टि से हीन होय तो उस स्त्री का पति

निरुद्यमी आलसी होता है॥२॥ **तथाच वराह :–"शून्ये कापुरुषो बलेस्तभवने सौम्यग्रहाऽवीक्षिते" तथा च ढुंढिराज :–"शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापूरुषः कीर्तितः ॥११॥" गुणाकर :–"शून्ये बले कापुरुषः पतिः स्यात्सौम्यैरदृष्टे स्मरभेऽथ युक्ते ॥१॥"**

अथ क्लीबपतियोग:

बुद्धमंदयुतेऽस्ते पतिः क्लीबसमो भवेत् ॥
वंध्या वा दुर्भगा वापि सा च नित्यं प्रवासिनी ॥३॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम स्थान में बुध, शनि स्थित होय उस स्त्रीका पति नपुंसक के समान होता है वह स्त्री बांझ वा दुष्टभाग्यवाली और नित्य ही परदेश में विचरनेवाली होती है॥३॥ **वराहः–"क्लीबोऽस्ते बुधमंदयोः" इति । होरामकरंदे–'स्मरभेथ युक्ते क्लीबो ज्ञशन्योः' इति। जातकाभरणे "जामित्रं बुधमंदयोर्यदि गृहं षंढो भवेन्निश्चितम् ॥१॥"**

अथ प्रवासशीलभर्तृयोग:

सप्तमे चरराशिस्थे तदीशे चरमांशके ।
भर्ता प्रवासशीलः स्यात्स्थिरभे स्वगृहे वसेत् ॥४॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में लग्न से सातवें स्थान में चरराशि १,४,७,१० होवे और सप्तमभाव का स्वामी भी चर राशि के नवांश में स्थित होवे तो उस कन्या का पति हमेशा परदेश में रहता है और जिसके सप्तम स्थान में स्थिर राशि स्थित होय और सप्तम भाव का स्वामी स्थिर नवांश में स्थित होय तो उस नारी का पति हमेशा घर ही रहता है और सप्तम ३,६,९,१२ राशि होवे और सप्तमेश इन्हीं राशियों के नवांश में स्थित होय तो उस नारी का पति परदेश और घर

दोनों जगह रहता है परंतु बुद्धिमान् पुरुष सप्तम भावस्थित राशि को और सप्तमेश के नवांशस्थित दोनों को देखकर फलादेश निजबुद्धिबल से कहै॥४॥ **बराह :-"चरगृहे नित्यं प्रवसान्वित:" ग्रंथांतरे "राशौ तत्र चरे विदेश निरतो द्व्यंगे च मिश्रा स्थिति:" तथाच "चरभे प्रवासी स्थिरे गृहस्थो द्विरुचिर्द्विभूता"॥**

अथ पतित्यागयोग:

अस्तगेऽर्कैररिभिर्दृष्टे तथोत्सृष्टा भवेत्स्वयम् ।

अर्थ-जिस औरत के जन्मकाल में, जन्मलग्न से सातवें घर में सूर्य स्थित होय वह शत्रुओं करके देखा गया होय तो वह कन्या पतिकरके त्यागी जाती है, **उक्तंच जातकाभरणे "सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता" होरामकरन्दे "त्यक्ता प्रियैर्गोमकरेस्तसंस्थे" बराह: "उत्सृष्टा रविणा"**

अथाक्षताया एव रंडायोग:

सप्तमस्थे धरासूनौ बाल्ये सा विधवा भवेत् ॥५॥

अर्थ-जिस स्त्री के सातवें स्थान में मंगल स्थित होय वह नारी बालविधवा होती है॥५॥ **बराह: "रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते" गुणाकर: "बाल्येपि भौमे विधवा प्रदिष्टा" ग्रंथांतरे-"क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये"इति बहूनि वाक्यानि ।**

अथ विवाहविहीनतायोग:

मन्दे सप्तमराशिस्थे तथा शत्रुनिरीक्षिते ।
कन्यैव विधवा भूत्वा सा जरामधिगच्छति ॥६॥

अर्थ-जिस कन्या के जन्मकाल में जन्मलग्न से सप्तम राशि में शनैश्चर बैठा होय तैसेही शत्रुग्रह देखते होंय तो वह कन्या ही बिना व्याही वृद्धता को प्राप्त होती है॥६॥ **तथा च "पापखगे च**

विलोकनयाते मंदगे च युवती जरती स्यात्" अन्यच्च "पापग्रहालोकन-वर्गपाते कन्यैव वृद्धा भवतीह भूमौं" उक्तंच "कन्यैवाशुभबीक्षितेकतनये द्यूने जरां गच्छति" ।

अथ विधवायोग:

अस्तगा: पापखेटाश्चेत्पापर्क्षे विधवा भवेत् ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल के सप्तम स्थान में पापग्रह बैठे होंय पापराशियों में हो तो वह नारी विधवा होती है **तथा च "वैधव्यं क्रूरखेटैर्मदनगृहगतैः"** बृहज्जातके **"आग्नेयैर्विधवास्तराशिसहितैः" अन्यच्च "कलत्रसंस्थैर्विबलैः खलाख्यैः सौम्यैरदृष्टैर्विभुना विमुक्ता । केचिन्मते"**

अथ पुनर्विवाहयोग:

द्यूने शुभाशुभैर्युक्ते पुनर्भूः सा भविष्यति ॥७॥

अर्थ–जिस औरत के सप्तमस्थान में शुभाशुभग्रह बैठे होंय वह कन्या दो बार विवाही जाती है॥७॥ **वराहः "मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत्" तथा मदनगृहगतैर्विमिश्रैःस्यात्पुनर्भूः" ग्रन्थातरे 'कांताविमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः'**

अत पतित्यक्तयोग:

बलहीनेस्तगे पापे सौम्यग्रहनिरीक्षिते ।
भर्त्रा वियुज्यते नारी नीचारिस्थे च स्वैरिणी ॥८॥

अर्थ–जिस औरत के जन्मकाल में बल करके रहित सप्तम स्थान में पापग्रह स्थित होय और उसको शुभ ग्रह नहीं देखते होय वह नारी पति करके त्याग करी जाती है और वही पापग्रह सप्तमभवन में नीचराशिस्थित वा शत्रुराशिस्थित होय तो वह व्यभिचारिणी होती है॥८॥ **गुणाकरः "पापेसौ वीर्ययुक्ते भवति परिहृता प्रेयसा सौम्यदृष्टे" वराहः "क्रूरे हीनबलेस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता" तथाच**

"कलत्रसंस्थेविबले खलाख्ये सौम्येन दृष्टे पतिना विमुक्ता ॥१॥"

अथ परपुरुषगामिनीयोगो गर्गजातके

अन्योन्यांशौ सितारौ चेज्जारसक्ता भवेद्वधूः ।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल शुक्र के नवांश में मंगल और मंगल के नवांश में शुक्र स्थित हो तो वह नारी परपुरुषगामिनी होती है यथा **"अन्योन्यांशस्थयोश्च क्षितिसुतसितयोर्बंधकी योषिदुक्ता" वराहः "अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्तांगना" होरामकरन्दे " अन्योन्यांशावस्थितौ भौम शुक्रौ स्यातां कांता संगतान्येन नूनम् ॥"**

अथ पत्याज्ञया दुश्चरीयोगः

तथैव सप्तमे चंद्रे दुश्चरी पत्युराज्ञया ॥९॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकाल में सप्तमस्थान में शुक्र चन्द्रमा मंगल स्थित होय वह नारी अपने पति की आज्ञा से परपुरुष में रत होती है॥९॥ **उक्तं च जातकाभरणे "चंद्रोपेतौ शुक्र वक्रौ स्मरस्थावाज्ञामेव स्वामिनश्चामनंति" अन्यच्च "चंद्रोवर्सिनुशुक्रौ यदि मदनगृहे प्रेयसोनुज्ञया तु" वराहः "द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया" इति वचनात् ।**

अथ वन्ध्यायोगः

मन्दाराकविलग्नस्थौ शशिशुक्रौ यदा तदा ।
वन्ध्या भवति सा नारी पंचमे पापदृग्युते ॥१०॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में शनि भौम रवि की राशि में जन्म लग्न होय उसमें शशि और शुक्र बैठे होंय जब पंचमस्थान पाप ग्रहों की दृष्टिसहित होय तो वह नारी वंध्या होती है॥१०॥

अथ योनिव्याधियोगः

अर्कराशिगते भौमे सूर्य्यारौ स्वांशगावपि ।

सौरे कुजे क्रमादृष्टे व्याधियोनिश्च दुर्भगा ॥११॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल सिंह के नवांश में सप्तम मंगल बैठा होय १ अथवा सूर्य मंगल अपने नवांश में सप्तम स्थित होंय २ वा सप्तम भाव में मंगल स्थित होवे वह शनैश्चरकरके युक्त वा दृष्ट होवे उस स्त्री की भग में रोग होता है और वह खोटे भाग्यवाली होती है॥११॥ तद्यथा **"स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाऽशुभांशे"** तथाच **"कौजेंशके मदगते शनिवीक्षिते च रुग्योनिरुत्तमदृशा सुभगाशुभांशे"** अन्यच्च **'कौजेस्त्तेंशेस्वैरिणीव्याधियोनिः'** इति।

चारुयोनियोगः

अस्तर्क्षे शुभदृष्टे च शुभस्यांशे शुभेक्षिता ।
चारुश्रोणी प्रिया भर्तुर्वल्लभा भवने वधूः ॥१२॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तमस्थान स्थित राशि को शुभ ग्रह देखते होंय १ एको योगः, अथवा सप्तम स्थान में शुभ ग्रह के नवांशा का उदय और उसको शुभग्रह देखते होंय तो उस स्त्रो की भग श्रेष्ठ, भर्ता के प्यारी, स्थान में वह नारी सबको प्रिय होती है॥१२॥ **"चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे"** इति।

अथ मात्रा सह व्यभिचारिणीयोगः

गुणाकरः

मंदारभे तनुगते ससुतोडुनाथो मात्रा सहैव कुलटाऽखिलखेटदृष्टे ॥१३॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में १०।११।१८ इन राशियों में बुधकरके सहित चंद्रमा जन्मलग्न में स्थिति होय पापग्रह देखते होंय तो वह नारी माता करके सहित व्यभिचारिणी होती है॥१३॥ वराहः

"सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बंधकी पापदृष्टे" जातकाभरणे "लग्ने सितेन्दू कुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जनन्या" इति।

अथ सप्तमभावगे स्वांशे सूर्यफलम्

अस्तेर्के स्वांशगे स्वर्क्षे भर्ता रतिपरो मृदुः ।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सूर्य अपनी राशि नवांश में स्थित जन्मलग्न से सप्तम बैठा होय उस कन्या का पति संभोग करने में मीठा होता है **वराहः "अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सिंहे भवति गृहेस्तमुपस्थितेंऽशकेवै" गुणाकरः "भानोरंशेथ राशौ मृदु रतिः" जातकाभरणे "भानोर्भं यदि वा लवाः स्मरगृहे संभो गमंदः पतिः"**

अथ सप्तमभावे स्वांशगे चंद्रफलम्

चन्द्रेस्ते स्वर्क्षगे स्वांशे मृदुः स्मरवशः पतिः ।।१४।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में अपनी राशि नवांश में चंद्रमा सप्तम स्थित होय तो उस नारी का पति काम के वश कोमल होता है।।१४।।
यथा "**चन्द्रस्यातिमदो मृदुः**" तथाच "**मदनवशगतो मृदुश्चन्द्रे**"

अथ सप्तमस्थे स्वांशगे भौमफलम्

भौमेस्ते स्वांशके क्षेत्रे स्त्रीलोलो निर्धनः पतिः ।

अर्थ–जिस स्त्री के सप्तमभवन में मंगल अपनी राशिनवांश में स्थित होय उस नारी का पति स्त्रियों को प्यारा धनहीन होता है यथा "क्षितिसुतस्य स्त्रीप्रियः क्रोधयुक्" तथाच "स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेयः" अन्यच्च "कुभुवः क्रोधनः स्त्रीषु लोलः"

अथ सप्तमस्थ स्वांशगे बुधफलम्

सौम्यंस्ते स्वांशके क्षेत्रे भर्ता विद्वान्भवेत्सुखी ।।१५।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम भाव में बुध अपनी राशि नवांश में स्थित होय तो उस कन्या का पति पंडित सुखी होता है।।१५।।

यथा "बौधे विद्वान्सुदक्षः" तथा च "विद्वाञ्ज्ञस्य" अन्यच्च "विद्वान्भर्ता नैपुणश्चैव बौधे" इति।

अथ सप्तमभावे जीवस्य राशिनवांशफलम्

जीवेस्ते स्वांशके स्वर्क्षे गुणवान्विजितेंद्रियः ।

अर्थ–जिस स्त्री के सप्तम स्थान में बृहस्पति की राशि नवांश का उदय होय उस कन्या का पति गुणवान् जितेंद्रिय होता है।। **अन्यच्च "गुरोर्वशी गुणयुतः" इति।**

अथ सप्तमभावे शुक्रस्य राशिनवांशफलम्

शुक्रेस्ते स्वांशके क्षेत्रे कन्येशोभाग्यवान्भवेत् ।।१६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में सप्तमभाव में शुक्र की राशि नवांश का उदय हो तो वह नारी का पति भाग्यवान् होता है।।१६।। **यथा "शौक्रे सौभाग्ययुक्ता" अन्यच्च "शुक्रस्य भाग्यान्वितः" तद्यथा "शौक्रे कान्तोऽतीव सौभाग्ययुक्तः "**

अथ सप्तमभावे शनिराशिनवांशफलम्

मंदेस्ते स्वांशके क्षेत्रे वृद्धो मूर्खो भवेत्पतिः ।
एवं सप्तमराशिस्थैर्ग्रहैर्नृणां वदेत्फलम् ।।१७।।

अर्थ–जिस स्त्री के सप्तम घर में शनैश्चर की राशि नवांश का उदय होय उस स्त्री का पति बूढ़ा और बेवकूफ होता है इस प्रकार सप्तमभावस्थित ग्रह और राशियों का फल स्त्रियों के जन्मकालमें कहै।।१७।।

अस्तराशिफलं प्रोक्तं लग्नराशिफलं तथा ।
भवत्येव हि दंपत्योर्ग्रहयोगबलाद्ध्रुवेत् ।।१८।।

अर्थ–सप्तमभावस्थित राशि का फल कहा इसी प्रकार पुरुष के लग्नराशि का फल जानो इस प्रकार स्त्री पुरुष के ग्रहों के योग के बल करके फल कहना चाहिये।।१८।।

अथ सप्तमराशिस्थितग्रहफलम्

शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्वितां
सौम्येंदू च कलासुखोत्तमगुणां शुक्रेन्दुपुत्रावथ ॥
चंचद्भाग्यकलाज्ञताभिरुचिरां सौम्यग्रहेंद्रास्तनौ
नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखां पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥१९॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र चंद्रमा सातवें घर में बैठे होंय वह नारी ईर्ष्यासहित सुख करके युक्त होती है और बुध चंद्रमा सप्तम स्थान में बैठे होंय तो वह नारी उत्तम कलाओं करके सहित श्रेष्ठ गुणवती होती है और जो सप्तमस्थान में शुक्र बुध स्थित होय तो वह नारी प्रकाशवान् भाग्य की चातुरी कलाओं की जाननेवाली शोभायमान होती है और जिस स्त्री के शुभग्रह जन्मलग्न में बैठे होंय तो वह नारी अनेक प्रकार के भूषण और वस्त्र उत्तम गुण और सुखों करके सहित होती है और जो पाप ग्रह लग्न में होय तो विपरीत फल नेष्ट देते हैं॥१९॥

यथा होरामकरन्दे **"शक्रेंदू चेत्तु लग्ने भवति सुखपरा स्त्री बुधेन्द्वोः कलाज्ञा सौख्योपेता गुणाढ्या भृगुसुतबुधयोश्चारुमूर्तिः प्रदिष्टा ॥ त्रिष्वप्येतेष्वनेकद्रविणसुखगुणैरन्विता सत्सुचैवम्"** इति। वाराहः **"ईर्ष्यान्वितासुखपरा शशिशुक्रलग्ने ज्ञेंद्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या ॥ शुक्रज्ञयोस्तु सुभगा रुचिरा कलाज्ञा त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥"**

अथ पितृगृह सौख्यवतीयोगः

सौम्यक्षेत्रोदये चन्द्रे युक्ता शुक्रेण सा वधूः ।
सुखी पितृगहे नारी नित्यमस्थिरचारिणी ॥२०॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल के बुध के क्षेत्र में चंद्रमा का उदय होय

शुक्रकरके युक्त होय तो वह नारी हमेशा पिता के घर में सुखी रहती है और नित्य ही चंचलचारिणी होती है॥२०॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोग:

चन्द्रज्ञौ यदि लग्नस्थौ कुलाढ्या ब्रह्मवादिनी ।
ज्ञशुक्रौ यदि लग्नस्थौ समस्थाने कुलढ्यता ॥२१॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में चन्द्रमा और बुध लग्न में स्थित होय वह नारी कुलाढ्या ब्रह्मविचार करनेवाली होती है और जिसके बुध शुक्र लग्न में स्थित होंय और समस्थान में होंय तो वह नारी ब्रह्मवादिनी कुलाढ्या होती है॥२१॥

तथा च होरामकरन्दे

सितारजीवेन्दुसुतेषु शक्त्या युक्तेषु लग्नेपि च युग्मराशौ ।
अनेकशास्त्रागमवेदिनीसास्त्रीब्रह्मवादिन्यवनौप्रसिद्धा॥२२॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र मंगल बृहस्पति बुध बलकरके सहित समराशि में लग्न में स्थित होय तो वह नारी अनेकशास्त्रों के जाननेवाली वेदवेदांत की वक्ता ब्रह्मवादिनी करके धरतीपै विख्यात होती है॥२२॥ **उक्तंच जातकाभरणे "समेस्त्लिग्ने यदि संस्थिता: स्युर्बलान्विता शुक्रबुधेंदुजीवा: स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञान विराजमाना ॥१॥" तथाच बृहज्जातके "जीवरास्फुजिदैंदवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्म वादि-न्यपि ॥१॥**

अथ बहुगुणान्वितयोग:

चांद्रिचंद्रसिता लग्ने बहुसौख्यगुणान्विता ।
जीवे लग्नेऽतिसंपन्ना पुत्रवित्तसुखान्विता ॥२३॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध चन्द्रमा शुक्र लग्न में स्थित होंय तो

वह नारी बहुत सुख गुणों करके युक्त होती है और बृहस्पति करके युक्त पूर्वोक्त ग्रह होय तो वह नारी पुत्र और धन सुखसहित होती है॥२३॥ **तथाच गुणाकर :—सौख्योपेता गुणाढ्या भृगुसुतबुधयोश्चारुमूर्त्या प्रदिष्या त्रिष्वप्येतेष्वनेकद्रविणसुखगुणैरन्विता सत्सु चवम्" इति ।**

अथ विधवायोगः

क्रूरेऽष्टमे च विधवा पापक्षेत्रे विशेषतः ।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में पापग्रह जन्मलग्नते अष्टम स्थित होय वह नारी विधवा होती है और वही पापग्रह अष्टमस्थान में स्थित पापग्रहों की राशि में होय तो विशेष करके विधवा होती है।

अशुभोपि शुभप्रदयोगः

क्षेत्रोच्चसंस्थिता लग्ने अशुभास्ते शुभप्रदाः ॥२४॥

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में उच्चराशि में पापग्रह सप्तम होंय तो शुभफल के दाता होते हैं॥२४॥

तथा च ग्रथांतरे विधवायोगः

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में अष्टमस्थान में पापी ग्रह स्थित होय तो विधवा होती है।

अथ मृत्युकालयोगः

रंध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः ॥

अर्थ–और अष्टम स्थान का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में स्थित हो तिस ग्रह की दशा में उस स्त्री की मृत्यु कहना चाहिये।

अथ निजदोषेण मृत्युयोगः

सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि ॥२५॥

अर्थ–और शुभग्रह जिसके द्वितीयभवन में स्थित होंय तो वह कन्या ने दोष करके मरती है॥२५॥ "तथा च वराहः- क्रूरे मृत्युगते भवेद्विधवता यस्यांशके मृत्युपः पाके तस्य शुभेषु चार्थभवने तस्याः स्वयं पंचता" इति। अन्यच्च "क्रूरेष्टमे विधवता निधनेश्वरेंशो यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा। सत्स्वथगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः"

अथ भर्तुःप्राङ्मृत्युयोगः

निधनस्थे हीनचन्द्रे दशायां निश्चितं भवेत्।
सौम्येष्टमस्थे कन्याया भर्तुः प्रागेव संमृतिः॥२६॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में अष्टमस्थान में हीन चंद्रसूर्य मंगल शनि हों तो वह स्त्री विधवा होती है पूर्वोक्त ग्रह की दशा अंतर्दशा में निश्चय विधवा होती है और जिस कन्या के शुभग्रह अष्टम बैठे होयँ उस नारी की भर्ता के पहिले मृत्यु होती है॥२६॥

अथ पतिपत्नीतुल्यकालमृत्युयोगः

पापसौम्ययुते तस्मिन्समकाले यतो मृतिः।
बलाबलं तयोर्ज्ञात्वा पुरुषेषु विजानता॥२७॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पापी और शुभग्रह अष्टमस्थान में स्थित होय तब वह नारी और पति दोनों तुल्यकाल में मृत्यु को प्राप्त होते हैं स्त्री पुरुष दोनों के ग्रहों का बल जान के विद्वान् फल कहै॥२७॥

तथा च जातकाभरणे तुल्यमृत्युयोगः

रंध्रे मिश्रबले शुभाशुभखगैरालोकिते वा युते
दंपत्योः समकालमृत्युमखिलज्योतिर्विदः संविदुः॥
एकस्थौ मदलग्नपौ च यदि वा लग्नस्थिते कामपे
कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते मृत्युस्तयोस्तुल्यतः॥२७॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मलग्न में अष्टमस्थान में पापी और शुभग्रह मध्यबली होकर स्थित होवे और अष्टमस्थान को देखते होयँ तो वे स्त्रीपुरुष दोनों एककाल में मृत्यु को प्राप्त होते हैं इस प्रकार ज्योतिःशास्त्रज्ञाता कहते हैं अथवा एक एक स्थान में सप्तमेश और लग्नेश स्थित होय, अथवा लग्नेश सप्तम और सप्तमेश लग्न में स्थित होय शुभग्रहकरके युक्त होय तो वह नारीपुरुष की एक काल में मृत्यु होती है॥२७॥

अथ दीर्घायुयोगः

भाग्यस्थाने सिते सौम्ये सपापे चाष्टमेऽपि वा ।
भर्तृपुत्रसुतासार्धं बहुकालं च जीवति ॥२८॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में भाग्यभवन में शुक्र बुध और पापग्रहोंसहित अष्टमस्थित होय तो वह नारी पति, पुत्र कन्यासहित बहुत काल पर्यंत जीती है॥२८॥

अथाल्पपुत्रायोगः

धनुः कर्कयमे लग्ने भर्तृपुत्रादिदुःखदा ।
सिंहालिवृषकन्यासु चंद्रे तिष्ठति पंचमे ॥२९॥
अल्पापत्यं विजानीयात्पुरुषेषु तदा वदेत् ॥३०॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में धन, कर्क, मकर, कुम्भ लग्न स्थित होवे वह कन्या भर्तापुत्रादिकों को दुःख देती है वा उनसे आप दुःख पाती है और जिस कन्या के सिंह, वृश्चिक, वृष, कन्याराशि में चन्द्रमा पंचम स्थित होय वह कन्या थोडे पुत्रवाली कहना चाहिये॥२९॥३०॥ **होरा मकरंदे "कन्यासिंहालिगोषु स्थितवति शशिनि स्वल्पपुत्रा प्रदिष्टा" अथ वराहः 'कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिंदोः' उक्तं च जातकाभरणे "कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु साल्पपुत्रा" इति ।**

अथ बहुपुत्रायोग:

पुत्रालयं चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टंयुतं वा बहुता च तेषाम् ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में पंचमस्थान में शुभग्रह स्थित होंय वा देखते होंय तो वह नारी बहुत पुत्रोंवाली होती है। **तथा च गर्गजातके "सौम्यग्रहैः सुतगतैर्बहुप्रसवमादिशेत् ।। कन्याप्रदानकाले तु प्रोक्तमार्गं विचिंतयेत् ।।**

अथ बहुदु:खान्वितयोग:

लग्नाच्चाष्टमभावस्थैः पापैर्दुःखफलान्विता ।
सौम्यग्रहैरसंमिश्रैः सर्वथा क्लेशमाप्नुयात् ।।३१।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्म में लग्नते अष्टमस्थान में पाप ग्रह स्थित होय वह नारी हमेशा दुःखयुक्त होती है उसी अष्टमस्थान में शुभग्रह पापग्रह दोनों स्थित होंय तो भी वह नारी हमेशा क्लेश भोगती है।।३१।।

अथ पुंचेष्टितयोग:

रिक्ते बुधेन्दुभृगुजे रविजे च मध्ये शेषैर्बलेन सहितैर्विषमर्क्षलग्ने ।। जाता भवेत्पुरुषिणी युवतिः सदैव पुंचेष्टितात्र चरति प्रथिता च लोके ।।३२।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध चंद्रमा शुक्र बलहीन होय और शनैश्चर मध्यमबली होय बाकी के सम्पूर्ण ग्रह बलवान् होंय विषमराशियों में स्थिति होय १।३।५।७।९।११ ऐसे योग में उत्पन्न भई कन्या पुरुषों के से स्वभाववाली स्त्रियों के चरित्रों में अग्रणीय संसार में होती है।।३२।।

अन्यच्च ग्रंथान्तरे योगमाह

शुक्रेन्दुसौम्या विरला भवेयुः शनैश्चरो मध्यबलो यदि

स्यात् । शेषास्सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥३३॥

अर्थ–शुक्र चंद्रमा बुध निर्बल होंय शनि मध्यबली होय शेष ग्रह बली होकर विषमराशि में स्थित होंय तो वह नारी विशेष करके प्रगल्भ पुरुषके समान स्वभाववाली होती है॥३३॥ तथा च होरामकरंदे–"**निर्वीर्यैः सितचंद्रविद्भिरसितैर्मध्यं बलं संश्रिते लग्ने ओजगृहे भवेत्पुरुषिणी शेषैश्च वीर्योत्कटैः**" उक्तंच बृहज्जातके "**सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमे ॥१॥**"

अथ संन्यासिनीयोगमाह

क्रूरे यामित्रगते नवमे यदि खेचरा भवंति नूनम् ।
प्रव्रज्यामाप्नोति नवमे ग्रहसंभवो नैव ॥३४॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम घर में पापीग्रह स्थिति होय और नवमस्थान में जो ग्रह निश्चय करके होय तो वह नारी फकीरी लेती है परंतु नवमस्थान में जो ग्रह स्थित होय उसी ग्रह के समान फकीरी लेती है जैसे सूर्य बली होय तो तप करनेवाली, चंद्रमा से कपालिनी, मंगल से गेरुए वस्त्र धारण करनेवाली, बुधकरके दंडिनी, बृहस्पति करके कपालिनी, शुक्र करके चक्रधारण करनेवाली, शनि करके नंगी होती है। ऐसे योग विवाह से पहले और जन्म पत्र मेलन के समय अथवा वरवरण करने के समय अर्थात् कन्यादान से पहिले अवश्य देख लेना चाहिये॥३४॥ **तथा च वराहः "पापेस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्या प्रव्रज्या युवतिरुपैत्यसंशयेन । उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिंत्यं तत्सकलं विधेयमेतत् ।" अन्यच्च ग्रंथांतरे "अस्ते पापे लग्नपाते ग्रहोक्ता प्रव्रज्या स्यात्स्त्रीपतेः संशयो न । दानोद्वाहे प्रश्नकालेषु चैवं चिंत्यं सर्वं हौरिकैस्तत्र युक्त्या" ॥१॥** संन्यासयोग लग्न पहिले कह आये हैं वे स्त्री

को प्रव्रज्या कदाचित् न करें तो उसके पति को संन्यासी करते हैं ऐसा भी किसी २ आचार्य का मत है।।१।। **तथा च ढुंढ़िराजः "पापे स्मरस्थे न खगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति" इति ।**

अथ शास्त्रज्ञयोगमाह

बलिभिर्बुधगुरुशुक्रैः शशांकसहितैर्विलग्नगे शशिभे ।
स्त्री ब्रह्मवादिनी स्यादनेकशास्त्रेषु कुशुला च।।३५।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध, बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा, बलसहित जन्मलग्न में चंद्रमा की राशि में स्थित होंय तो वह स्त्री ब्रह्मवादिनी करके विख्यात सर्वशास्त्रों में कुशल होती है।।३५।।

अथविषकन्यायोगः यवनजातके

भाद्रा तिथिर्यदाश्लेषा शततारा च कृत्तिका ।
मंदाररविवारेषु विषकन्या प्रजायते ।।३६।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में **द्वितीया तिथि आश्लेषा नक्षत्र शनैश्चर वार एको योगः । सप्तमी तिथि शतभिषानक्षत्र मंगलवार द्वितीयो योगः । द्वादशीतिथि कृतिकानक्षत्र रविवार तृतीयो योगः ।** ऐसे योगों में पैदा भई कन्या विषकन्या कहलाती है पति को नाश करती है।।३६।। **तथा च-"द्वादशी वारुणं सूर्ये विशाखा सप्तमी कुजे ।। मंदे श्लेषा द्वितीया च जायते विषकन्यका" ।। तथा च जातकालंकारे "भौजंगे कृत्तिकायां शतभिषजि तथा सूर्य्यमंदारवारे भद्रासंज्ञे तिथौ या किल जननमियात्सा कुमारी विषाख्या" ।। तथा च मुहूर्तगणपतिः "सूर्य्य भौमार्किवारेषु तिथिभद्राशताभिधम् ।। आश्लेषा कृत्तिका चेत्स्यात्तत्र जाता विषांगना ।।१।।"**

तथा च मुहूर्त्तगणपतिः

जनोर्लग्ने रिपुक्षेत्रे संस्थितः पापखेचरः ।

द्वौ सौम्यावपि योगेऽस्मिन्संजाता विषकन्यका ॥३७॥

अर्थ–जिस कन्या की जन्मलग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह दो स्थित होंय और लग्न में शुभ ग्रह होंय उसमें एक पापी ग्रह होय ऐसे योग में पैदा भई स्त्री विषांगना होती है॥३७॥ **तथा च त्रैलोक्यप्रकाशे "रिपुक्षेत्रस्थितौ द्वौ तु लग्ने यत्र शुभग्रहैः। क्रूरश्चैकस्तदा जाता भवेत्स्त्री विषकन्यका ॥१॥" अन्यच्च जातकालंकारे "लग्नस्थौ सौम्यखेटावशुभगगनगश्चैक आसीत्ततो द्वौ वैरिक्षेत्रानुयातौ यदि जनुषि तदा सा कुमारी विषाख्या ॥१॥**

अन्यच्च विषाङ्गनायोगः जातकालंकारे

मन्दाश्लेषाद्वितीया यदि तदनु कुजे सप्तमी वारुणर्क्षे द्वादश्यां च द्विदैवं दिनमणिदिवसे यज्जनिः सा विषाख्या। धर्मस्थो भूमिसूनुस्तनुसदनगतःसूर्य्यसूनुस्तदानीं मार्तण्डः सूनुयातो यदि जनिसमये सा कुमारी विषाख्या ॥३८॥

अर्थ–शनैश्चर, आश्लेषानक्षत्र, द्वितीयातिथि, एको योगः। मंगलवार, शतभिषानक्षत्र, सप्तमी तिथि, द्वितीययोगः। द्वादशी तिथि, विशाखानक्षत्र, रविवार दिन, तृतीयो योगः। इन तीनों योगों में पैदा भई कन्या विषकन्या कहलाती है॥१॥ और जिसके जन्मकाल में नवमस्थान में मंगल और लग्न में शनैश्चर और सूर्य पंचमस्थान में प्राप्त होय ऐसे योग में पैदा भई कुमारी विषांगना कहलाती है॥३८॥ **तथा च योगजातके "लग्ने सौरी रविः पुत्रे धर्म्मस्थेधरणीसुते। अस्मिन्योगे तु जाता स्त्री सा भवेद्विषकन्यका ॥१॥ तद्यथा मुहूर्तगणपतिः "लग्ने शनैश्चरो यस्याः सुतेर्को नवमे कुजः विषाख्या सापि नोद्वाह्याविविधा विषकन्यका ॥१॥**

अथ विषकन्यादोषापवाद:

लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदना-धिपश्च । द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम् ।।३९।।

अर्थ—जिस कन्या के जन्मकाल में लग्नते अथवा चंद्रमाते शुभग्रह वा सप्तमभाव का स्वामी सप्तम भावों में बैठा होय तो विधवादोष नि:संतानदोष और विषांगनादोष को नाश करता है।।३९।।

उक्तं च जातकालंकारे

लग्नादिन्दोः शुभोवायदिमदनपतिर्द्यूनपापीविषाख्या दोषं चैवानपत्यं तदनु च नियतं हन्ति वैधव्यदोषम् । इत्थं ज्ञेयं ग्रहज्ञैः सुमतिभिरखिलं योगजातं ग्रहाणा-मार्यैरार्यानुमत्या मतमिह गदितं जातके जातकानाम् ।।

अर्थ—लग्नते वा चंद्रमाते शुभग्रह सप्तम बैठा होय एको योग: । अथवा लग्न चंद्रमाते सप्तमस्थानपति सप्तम बैठा होय तो विषांगनादोष नि:संतान दोष वैधव्यदोष को निरंतर नाश करता है इस प्रकार ज्योतिशास्त्र के ज्ञाताओं करके जान कर बुद्धिमान् ग्रहों के योग करके सम्पूर्ण प्राचीन ऋषियों की अनुमति लेकर मनुष्यों के जन्मकाल में कहना चाहिये।।४०।।

विषकन्यादोषपरिहार: मुहूर्तगणपति:

सावित्र्याश्च व्रतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये । अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तां चिरजीविने ।।४१।।

अर्थ—जो किसी स्त्री के जन्मकाल में विधवा या विषांगना दोष होय तो वह कन्या सावित्री का व्रत विधवादोष निवृत्ति के लिये करे अथवा उस कन्या का वर के साथ विवाह करने के पहिले पीपलवृक्ष अथवा

शालग्राम या विष्णुमूर्ति के साथ विवाह करके फिर दीर्घजीवी वर को कन्यादान करैं।।४१।।

अथ वंध्यायोग:

रन्ध्रगौ सूर्यचंद्रौ चेद्विलग्नान्निजराशिगे ।। वन्ध्या-

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टमस्थान में सूर्य चंद्रमा अपनी राशि में स्थिति होवे तो कन्या बांझ होती है।।

अथ काकवन्ध्यायोग:

–ऽथ चंद्रमाःसोम्यः काकवन्ध्या तदा भवेत् ।।४२।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में लग्नते अष्टम स्थान में चंद्रमा बुध अपनी राशि में स्थित होय वह नारी काकवंध्या अर्थात् एक बार प्रसूता होती है।।४२।।

अथ वन्ध्यायोग: वीरजातके

शनिभौमगृहे लग्ने चंद्रे च सितसंयुते ।
पापदृष्टेऽथ सा नारी वन्ध्यत्वमुपगच्छति ।।४३।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शनैश्चर वा मंगल के घर की राशि में १०।११।१।८ चंद्रमा शुक्रसहित स्थित होय और पापग्रहों करके दृष्ट होय तो वह नारी बाँझ होती है।।४३।।

अथ मृतप्रजायोग:

रवौ मृतप्रजा प्रोक्ता राहुणापि तथैव च ।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में सप्तम सूर्य व राहु बैठा होय उसको शनि देखता होय तो उस नारी के संतान पैदा होकर मर जावे।।

अथ कन्याजन्मयोग:

चन्द्रे बुधे तु सा नारी कन्या जन्मवती भवेत् ।

अर्थ–जिस नारी के सप्तम चंद्रमा बुध बैठा होय उसको शनैश्चर देखता होय तो वह नारी कन्याओं की औलाद पैदा करै।।

अथ गर्भस्रावयोगः

सप्तमस्थः कुजश्चैव दृष्टः सौरेण सोपि चेत् ।।४४।।
गलद्गर्भा तु सा ज्ञेया शनौ रोगयुतप्रजा ।।४५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में सातवें घर में मंगल बैठा होय उसको शनि देखता होय तो वह नारी गर्भस्रवा होती है और सप्तमस्थान में मंगल स्थित होय शनैश्चरयुक्त होय तो उस नारीके रोगी संतान पैदा होय।।४५।।

अन्यच्च मृतप्रजायोगः

मृतापत्या च शुक्रेज्यौ–

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में अष्टमस्थान में शुक्र बृहस्पति स्थित होय तो उस स्त्री को मृत संतान होती है।।

अन्यच्च गर्भस्रावयोगः

–सारौ गर्भस्रवा भवेत् ।।४६।।

अर्थ–और अष्टमस्थान में शुक्र बृहस्पति मंगल स्थित होय तो गर्भस्रवा योग होता है।।४६।।

अथ रण्डायोगः

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ सलग्नगे ।
रंडाथ लग्नगे सूर्ये सभौमे दुर्भगा शनौ ।।४७।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में बारहवें आठवें मंगल पापग्रहसहित और राहु पापयुक्त लग्न में बैठा होय सो नारी रांड़ होती है और जिसके जन्मलग्न में सूर्य मंगल होय तो भी रंडा होती है और पूर्वोक्तयोग होते शनैश्चरयुक्त होय तो भी दुर्भगा विधवा होती है।।४७।।

अन्यच्च रंडायोगः

मूर्तौ राह्वर्कभौमेषु रंडा भवति कामिनी ।
एषु शुक्रे द्वितीयस्थे पतिमन्यं चिकीर्षति ।।४८।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में जन्मलग्न में राहु सूर्य मंगल स्थित होय तो वह नारी विधवा होती है और पूर्वोक्त योग हो तो दूसरे घर में शुक्र स्थित होय तो वह नारी विवाह के बाद अन्य पति की इच्छा करती है।।४८।।

अथ भर्तुरग्रे मृत्युयोगः

तथाष्टगाः क्रूरखगा विलग्ना द्वितीयगाः शोभन-
खेचरास्तु । सा भर्तुरग्रे म्रियते च नारी गोसिंह-
कौर्पेंदुगतेल्पपुत्रा ।।४९।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्मलग्नते अष्टमस्थान में पापग्रह बैठे होयँ और दूसरे स्थान में शुभग्रह बैठे होयँ सो नारी भर्ता के आगे मृत्यु को प्राप्त होती है औ जिसके सिंह वृष वृश्चिक राशिगत चंद्रमा पंचम स्थित होय वह अल्पपुत्रा होती है।।४९।।

अथ-पितृश्वशुरकुलहंतृयोगः शौनकः

पापद्वयमध्यगते चंद्रे लग्ने च कन्याका जाता ।।
निजपितृकुलं समस्तं श्वशुरकुलं हंतिनिः शेषात् ।।५०।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पापग्रहों के बीच में चंद्रमा बैठा होय कन्यालग्न में वह नारी अपने समस्त पिता के कुल को और ससुर के कुल को निःशेष करती है।।५०।।

अन्यच्च सिद्धान्तसारे बहुपुत्रवतीयोगः

नारीणांजन्मकालेकुजशनितमसः केन्द्रकोणेषुशस्ता-
श्चंद्रोस्तेषु प्रशस्तो बुधसितगुरवः सर्वभावेषु शस्ताः ।।

लग्नेशः कामभावे मदनगृहपतिर्लग्नभावे बलस्थो
लाभेशःपुत्रभावे वदतिमुनिवरोबह्वपत्याभवन्ति।।५१।।

अर्थ–स्त्रियों के जन्मकाल में मंगल शनैश्चर राहु १,४,७,१०,९,५ इन स्थानों में शुभफलदाता होते हैं और पहिले स्थानों में चंद्रमा भी शुभ होता है और बुध शुक्र बृहस्पति सब भावों में श्रेष्ठ होते हैं और लग्नेश सप्तम भवन का स्वामी लग्नभाव में बलवान् होय और लाभेश पुत्रभवन में बैठा होय तो वह नारी बहुत संतानवाली होती है ये मुनीश्वरों ने कहा है।।५१।।

अथ पतिपूज्यतायोग:

पंचमस्थौ गुरुसितौ बहुपुत्रयुता भवेत् ।
सुभगा पतिपूज्या च गुणयुक्ता तु सुव्रता ।।५२।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पंचमभवन में बृहस्पति शुक्र स्थित होय तो वह नारी बहुपुत्रवती होती है और वह नारी सुभगा पतिकरके पूज्य गुणों करके युक्त पतिव्रता होती है।।५२।।

अथ लोलपतियोग:

चांद्रौसमंदेंदुयुतेथ दृष्टे शुक्रेणलोलस्तु पतिस्तु तस्याः ।
चलस्व भावश्चपलोनितांतंभ्रमेणयुक्तस्तु विवेकहीनः ।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बुध शनैश्चर चंद्रमा एक स्थान में स्थित होय और शुक्र करके दृष्ट होय उस नारी का पति लोल चलस्वभाव निरंतर चपल भ्रम करके युक्त चतुरता करके हीन होता है।।५३।।

अथ शैलाग्रपातान्मृत्युयोग:

सूर्य्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिः ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में सूर्य मंगल चंद्रमाते दशम चतुर्थ

स्थान में स्थित होय वह नारी पहाड़ से गिरकर मरती है।।

अथ कूपेन मृत्युयोगः

भौमेंद्वर्कसुता स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में मंगल दूसरे, चंद्रमा सातवें, शनैश्चर चौथे स्थित होय तो वह नारी कुऐं वा बावड़ी में गिरकर मरती है।

अथ बंधनान्मृत्युयोगः

सूर्य्याचंद्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बंधनात् ।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में सूर्य चंद्रमा पापग्रहों करके युक्त वा दृष्ट होवे और कन्या राशि में स्थित होवे तो वह नारी बंधन में मरती है।

अथ जलेन मृत्युयोगः

**तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्ना-
त्स्वतः ।।५४।।**

अर्थ–जिस कन्या का जन्मकाल में लग्न से सूर्य चंद्रमा ३।६।९।१२ इन राशियों में स्थित होकर लग्न में स्थित होय तो वह कन्या आपही जल में डूबकर मरती है।।५४।।

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् । किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ।।५५।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में शनैश्चर कर्कराशि में और चंद्रमा मकर राशि में स्थित होवे तब वह नारी जलोदर रोग से मरतीं है।।५५।।

अथ शस्त्राग्निकोपेन मृत्युयोगः

निशाकरः पापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति । पृच्छाविलग्ने वरवर्णकाले विवाहदाने परिचिंतनीयम् ।।५६।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डित-श्यामलालविरचिते स्त्रीजातके विविधयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ।।५।।

अर्थ—जिस कन्या के जन्मकाल में चन्द्रमा पापग्रहों के बीच में स्थित होय मंगल की राशि १।८ में हो तो वह नारी शस्त्र वा अग्नि करके मरती है यह सम्पूर्ण योग प्रश्न काल में सगाई करने के समय विवाह के वर वरण व कन्यादान के समय अवश्य विचार करना चाहिये।।५६।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपंडित-श्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीहिन्दीटीकायां शुभाशुभयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ।।५।।

अथ राजयोगाध्यायप्रारम्भः

तथाच वृद्धयवनः

राजयोगकुंडलीयम् १
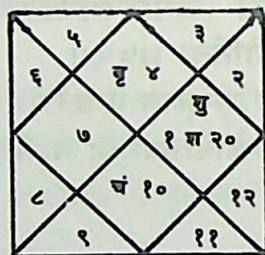
मूर्तौ सुरेज्योस्तगतः शशांकोऽथवा स्ववर्गे गगने च शुक्रः ।। जातांत्यजानामपि जातिरत्र योगे भवेत्पार्थिववल्लभा च ।।१।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्मलग्न में बृहस्पति और सप्तम चंद्रमा और दशमस्थान में अपने वर्ग का शुक्र ऐसे योग में अन्त्यजजाति में उत्पन्न भई भी कन्या राजा की प्यारी होती।।१।।

अथ द्वितीययोगः

द्वितीयराजयोगः २
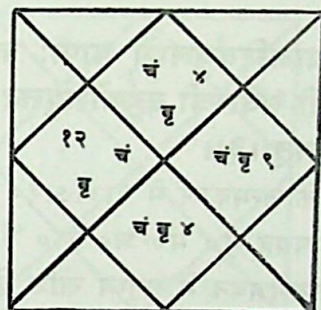
एकोपि जीवः षड्वर्गशुद्धः केंद्रे यदाचंद्रनिरीक्षितश्च । राज्ञी भवेत्स्त्री सधनात्र जाता वरेभदानार्द्रनितंबबिंबा।।२।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में एक ही बृहस्पति षड्वर्ग में शुद्ध होकर १।४।१०।७ इन स्थानों में से किसी स्थान में बैठा होय और चंद्रमा देखता होय ऐसे योग में उत्पन्न भई कन्या रानी होती है धनवान् श्रेष्ठ हाथियों के मदकरके आर्द्रित है नितंबबिंब जिसका ऐसी होती है।।२।।

अथ तृतीयराजयोग:

तृतीयराजयोगकुंडली ३

केन्द्रेषु सौम्याअरिवंधुलाभे पापाः कलत्रे च मनुष्य-राशिः। राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी स्यात्।।३।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में १।४।७।१० इन स्थानों में शुभग्रह स्थित होंय और पापग्रह सू० मं० श० रा० ३।६।११ इन स्थानों में स्थित होंय और सप्तमभवन में मनुष्य राशि स्थित होय ऐसे योग में उत्पन्न भई स्त्री रानी होती है बहुत खजाने करके युक्त हमेशा शांतस्वरूप श्रेष्ठ पुत्रवती होती है।।३।।

अथ चतुर्थो राजयोग:

चतुर्थकुंडली

लाभाश्रितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः। जीवेन दृष्टे कुरुतेत्र राज्ञीं लोकैः स्तुतां बंदिवरैः सदैव ।।४।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में ग्यारहवें स्थान में चंद्रमा स्थित होय और सप्तमस्थान में बुध करके युक्त शुक्र स्थित होय और बृहस्पति करके दृष्ट होय ऐसे योग में पैदा भई स्त्रियां रानी होती हैं और संसार में बंदीजनों करके स्तुती की हुई हमेशा होती है।।४।।

अथ पंचमो राजयोगः

पञ्चमो राजयोगः ५
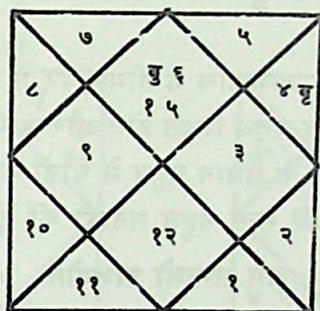
**बुधे विलग्ने यदितुङ्गभाजि लाभस्थितेदेवपुरोहिते च ।।
नरेन्द्रपत्नीवनिताप्रसंगेतदाप्रसिद्धाभवतीहभूमौ ।।५।।**

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध जन्मलग्न में जो उच्च का स्थित होय और ग्यारहवें स्थान में बृहस्पति स्थित होय ऐसे योग में उत्पन्न भई कन्या राजा की पत्नी होती है स्त्रियों के प्रसंग धरती पर प्रसिद्ध होती है।।५।।

अथ षष्ठो राजयोगः

षष्ठराजयोगकुण्डली ६
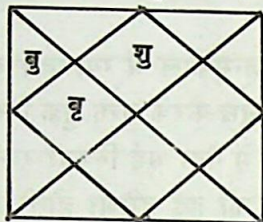
तृतीयगः सोमसुतोम्बुसंस्थः षड्वर्गशुद्धो यदि देवमंत्री । लग्ने भृगुः पार्थिवतुल्यतां च करोति नारीं बहुवाजि-वृंदाम् ।।६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे घर में बुध स्थित होय और षड्वर्ग में शुद्ध बृहस्पति चतुर्थ स्थित होय और जन्मलग्न में शुक्र होय तो वह उस स्त्री को राजा के समान बहुत से घोड़ों के समूहों करके करता हैं अर्थात् उस रानी की सेना बहुत सवारों की होती है।।६।।

अथ सप्तमो राजयोगः

त्रिभिरुच्चग्रहैः

२ सू ३।२० १ १२ ३ ११ ४ चं ३।२० १० शु ३।२० ७ ५ ९ ६ ८
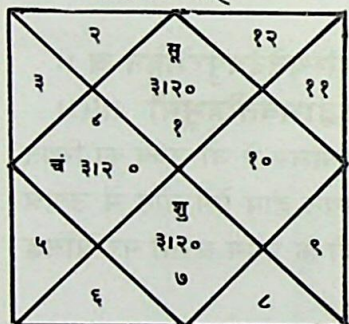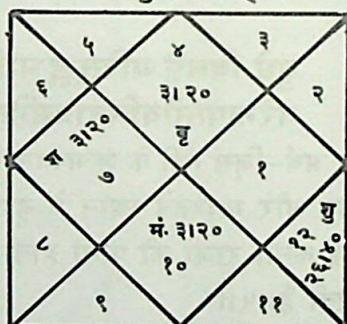
चतुर्भिरुच्चग्रहैः
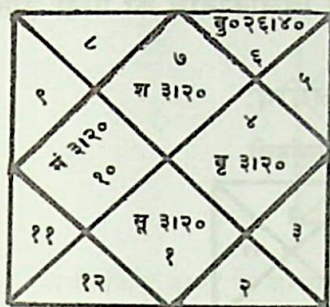
पंचभिरुच्चग्रहैः

षड्भिरुच्चग्रहैः
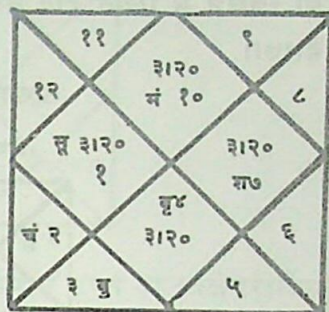
सप्तभिरुच्चग्रहैः
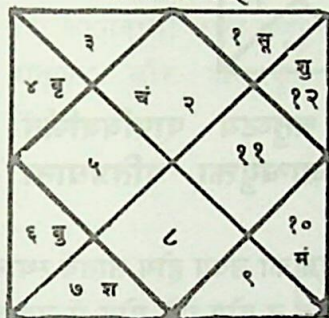
रुक्मिणीजन्मलग्नम्
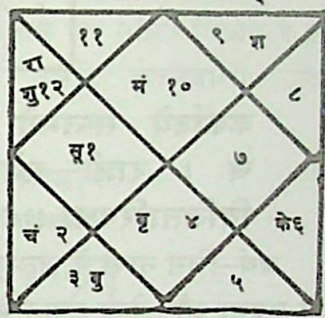
षड्वर्गशुद्धस्त्रिभिरेव मंत्री चतुर्भिरीशस्य तथैव पत्नी ।। पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ।।७।।

अर्थ—जिन स्त्रियों के जन्मकाल में षड्वर्ग में शुद्ध तीन ग्रह उच्च के होंय वह नारी युवराजी की पत्नी होती है और चार ग्रह उच्च में होंय तो वह नारी राजा की पत्नी होती है पांच ग्रह जिसके उच्च में होंय तो

वह नारी महाराजा की पत्नी होती है और छः वा सात ग्रह अपने उच्च वा स्वक्षेत्र में स्थित होंय तो वह नारी त्रिलोकीनाथ की पत्नी होती है॥७॥

अथाष्टमो राजयोगः

अथाष्टमराजयोगकुंडली

कर्कोदये सप्तमगे शशांके चतुष्टयं पापविवर्जितं च । राज्ञी भवेद् भूरिगजाश्वयुक्ता पतिप्रधाना विजितारिपक्षा ॥८॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मलग्न में कर्कलग्न का उदय होय सातवें स्थान में चंद्रमा और केन्द्र स्थान में कोई पापग्रह न होय ऐसे योग में उत्पन्न भई नारी रानी होती है बहुत से हाथी घोड़ों करके युक्त जीते हैं शत्रुदल जिसने और पति है प्रधान जिसके ऐसी होती है॥८॥

अथ कुलद्वयोन्नतिकारिणीयोगः

वाचस्पतिर्नवमपंचमकंटकस्थो जाताङ्गना भवति पूर्णविभूतियुक्ता । साध्वी सुपुत्रजननी सगुणा सुरूपा नूनं कुलद्वयमहोन्नतिकारिणी सा ॥९॥

कुलद्वयोन्नतिकारिणीकुण्डली
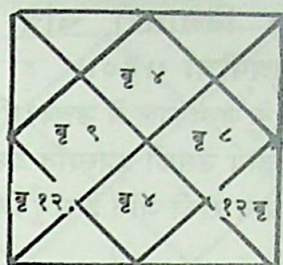
अर्थ—जिस नारी के जन्मकाल में बृहस्पति उच्च वा स्वक्षेत्रराशियों में स्थित होकर ९।५।१।४।७।१० इन स्थानों में से किसी एक स्थान में स्थित होय वह नारी समस्त विभूतियों करके युक्त पतिव्रता सत्पुत्रों की पैदा करनेवाली अच्छे गुणों करके युक्त उत्तम रूप सहित निश्चय करके मातृकुल और श्वशुरकुल की बड़ी उन्नति करनेवाली होती है॥९॥

अथ नवमो राजयोगः

नवमराजयोगकुंडली
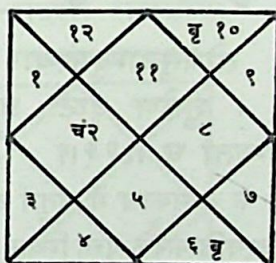
**तुङ्गाश्रिते शीतकरे सुखस्थे जीवेन दृष्टे परि-
पूर्ण देहे ॥ विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी
जितारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥१०॥**

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में उच्चराशि में स्थित होकर परिपूर्ण चंद्रमा चतुर्थ स्थित होय उसको बृहस्पति देखता होय तो वह स्त्री ऐसे योग में स्त्रियों में प्रधान रानी जीते हैं शत्रु जिसने बहुत पुत्र पौत्रों करके युक्त होती है॥१०॥

अथ दशमो राजयोगः

दशमराजयोगकुंडली
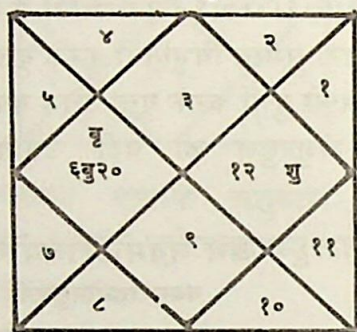
**स्वक्षेत्रगः सोमसुताम्बुसंस्थः षड्वर्गशुद्धोऽसु
रराज मंत्री । शुक्रेण दृष्टः प्रमदां प्रसूते राज्ञीं
महाशब्दसमन्वितां च ॥११॥**

अर्थ–जिस स्त्रियों के जन्मकाल में चतुर्थ स्थान में अपनी राशि का बुध षड्वर्ग में शुद्ध बृहस्पति करके युक्त स्थित होय और शुक्र करके दृष्ट होय तो वह नारी डंका निशान नौबत नगाड़े के शब्दों सहित रानी होती है॥११॥

अथैकादशो राजयोगः

एकादशराजयोगकुंडलीयम्
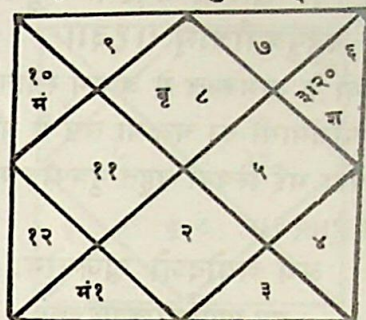
वक्रस्तृतीये रिपुसंस्थितोऽपि वा षड्वर्गशुद्धो रविजश्च लाभे। स्थिरे विलग्ने गुरुणा च युक्ते राज्ञी भवेत्स्त्री पतिवल्लभा च ॥१२॥

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में मंगल तीसरे वा छठे स्थित होय और षड्वर्ग में शुद्ध शनैश्चर ग्यारहवें स्थित होय और स्थिर लग्न में बृहस्पति जन्मलग्न में स्थित होय तो वह नारी रानी होती है पति को प्यारी होय॥१२॥

अथ द्वादशो राजयोगः

अथ द्वादशराजयोगचक्रम्
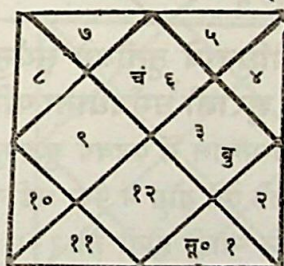
आयुस्थितस्तीक्ष्णकरः स्वतुंगे मूर्तौ शशांकः परिपूर्णदेहः । सौम्योम्बरस्थः कुरुते च राज्ञीं पतिप्रधानां बहुपुत्रपौत्राम् ।।१३।।

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में अष्टम स्थान में स्थित उच्च का सूर्य और बलवान् पौर्णमासी का चन्द्रमा लग्न में और बुध दशम स्थित होय ऐसे योग में पैदा भई स्त्रियाँ बहुत पुत्रपौत्र सहित पति है प्रधान जिनके ऐसी होती है।।१३।।

अथ त्रयोदशो राजयोगः

अथ त्रयोदशराजयोगचक्रम्
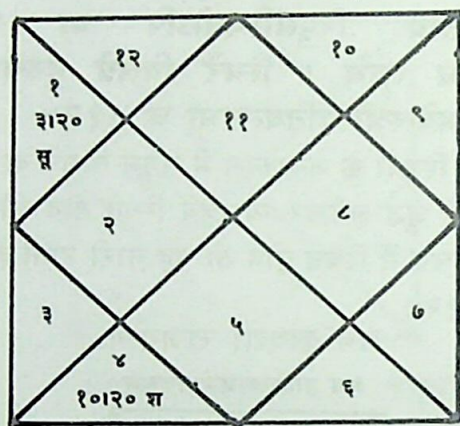
षड्वर्गशुद्धे दिवसाधिनाथे तृतीयगे सूर्यसुते रिपुस्थे ।।
भवेन्नृजाता प्रमदा शुराज्ञी धर्मप्रधाना पतिवल्लभाच ।।

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में षड्वर्ग शुद्ध सूर्य तीसरे स्थान में स्थित होय और शनैश्चर छठे ऐसे योग में पैदा भई नारी रानी होती है धर्म प्रधान जिनके पति को प्यारी होती है।।१४।।

अथ चतुर्दशो राजयोग:

अथ चतुर्दशराजयोगकुंडलीयम्
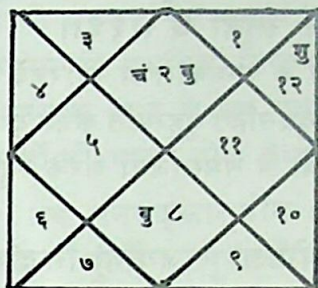
स्थिरे विलग्ने शशितुंगपाते बुधेन युक्तेप्यथ वीक्षिते वा ॥ लाभस्थिते दैत्यपुरोधसा वा वरेभवृन्दानुगता तदा स्यात्॥१५॥

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में स्थिर लग्न होय उसमें चंद्रमा उच्च राशि का स्थित होय और बुधकरके युक्त वा देखा गया होय और लाभस्थान में शुक्र स्थित होय ऐसे योग में पैदा भई नारी हाथियों के हलके में चलती है॥१५॥

अथ पंचदशो राजयोग:

पञ्चदशराजयोगकुण्डलीयम्
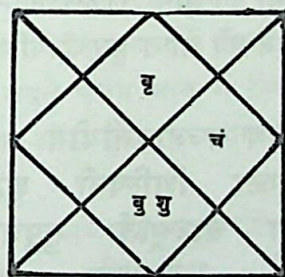
लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः । जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी ख्याता धरायां सकलैः स्तुता च ॥१६॥

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में ग्यारहवें स्थान में चंद्रमा और सप्तम स्थान में शुक्र बुधसहित बृहस्पति करके दृष्ट होय तो ऐसे योग में पैदा भई स्त्रियाँ पृथ्वी में समस्तजनों करके स्तुति करी हुई विख्यात रानी होती हैं॥१६॥

अथ षोडशो राजयोगः सिद्धान्तसारे

जीवो वा भार्गवो वा परमबलयुतः कामभावेषु यासां कर्म्मेशो धर्मलाभे तनुसुखतनये कर्म्मकोशे बलस्थः । तासां चंद्राननानां कमलदलदृशां नायिका रूपयुक्ता राजंते राजलक्ष्म्या मणिमयशिबिरे दासभावे सदैव ॥१७॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बृहस्पति वा शुक्र अत्यंत बली होकरके सातवें बैठे हों और दशम भाव का स्वामी ९।११।१।४।५।१०।२ इन स्थानों में बली होकर स्थित होय ऐसे योग में पैदा भई स्त्रियां चन्द्रमा के समान मुख जिनका और कमल के दल के समान नेत्र जिनके ऐसी स्त्री रूप करके युक्त शोभा को प्राप्त राजलक्ष्मी मणियों करके जटित महलों में हमेशा दासभाव को प्राप्त हुए हैं पति जिनके ऐसी रहती है॥१७॥

अथ लज्जावतीयोगः

यदि शुभकरदृष्टा शिल्पिनी शुद्धचित्ता सततमिह सलज्जा चारुमूर्तिः सुपुत्रा । बहुधन

सुखयुक्ता वल्लभे वल्लभत्वं व्रजति शुभसतानां भाजनत्वं च नारी ।।१८।।

अर्थ–जिस कन्या की जन्मलग्न को सम्पूर्ण शुभग्रह देखते होंय वह नारी चित्रकारी करनेवाली शुद्धचित्त निरंतर लज्जा सहित सुंदर स्वरूपवाली अच्छे पुत्रोंयुक्त बहुत से धन सुखसहित अपने पति को प्यारी सैंकडों शुभ कर्मों की भाजन होती है।।१८।।

अथ धनवद्भ्रातृयोग:

सहजभवननाथे पुंग्रहे पुंग्रहर्क्षे पुरुषखचरयुक्ते पुंग्रहालोकिते वा । नयनभवनकेन्द्रे कोणगे वा बलिष्ठे बहुधनसुखवंतं सोदरं याति जाता ।।१९।।

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में तीसरे स्थान का स्वामी पुरुष ग्रह की राशि में स्थित और पुरुष ग्रहकरके युक्त पुरुष ग्रह देखते होंय। २।१।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में बली होकर भ्रातृ स्थानेश स्थित होय तो उस नारी का भाई बहुत धनवाला और सुखवाला होता है।।१९।।

अथ राजतेजोयुक्तभ्रातृयोग:

सहोदरस्थानपलाभनाथौ विलग्नतः पंचमराशियातौ । नृपालतेजोगुणरूपवन्तं सहोदरं जातवधूःसमेति ।।२०।।

अर्थ–जिन स्त्रियों के जन्मकाल में तीसरे घर का और ग्यारहवें भाव का स्वामी जन्म लग्नते पंचम भाव में स्थित होय तो उस कन्या के राजतेजकरके युक्त और गुणवान् रूपवान् भ्राता की प्राप्ति होती है।।२०।।

अथ कांचनयुक्तपतियोग:

क्रोधान्विता सौख्यपरा सितेन्दौ लग्नस्थिते

कांचनसंयुता च। बुधे कलाढ्या सुखभावयुक्ता गुणैर्युता शुक्रगुरुस्तथैव ॥२१॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र चन्द्रमा जन्मलग्न में स्थित होय उस नारी का पति क्रोधयुक्त सौख्यवान् सुवर्णयुक्त होता है और जो लग्न में बुध स्थित होय तो उस नारी का पति चतुर कला में प्रवीण होता है और जो लग्न में शुक्र बृहस्पति स्थित होय तो सुख सहित गुणवान् पति होता है॥२१॥

अथ राजपूज्यपतियोग:

समराशिगते तत्र सप्तमे शुभसंयुते । शुभग्रहैस्तथा दृष्टे राजपूज्यः पतिर्भवेत् ॥२२॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में सातवें स्थान में शुभ ग्रह की समराशि होय और शुभ ग्रहों करके युक्त और दृष्ट होय तो उस नारी का पति राजाओं करके पूजनीय होता है॥२२॥

अथ दास्यलंकृतयोग:

यदा शशी शुक्रबुधौ विलग्ने त्रयोपि ते जीवसितेन्दुजाः स्युः । अनेकधा सौख्यगुणादियुक्ता नारी तु दासीभिरलंकृता स्यात् ॥२३॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में चंद्रमा शुक्र बुध लग्न में स्थित होय अथवा बृहस्पति शुक्र चंद्रमा ये तीनों लग्न में स्थित होयँ वह नारी अनेक सुख गुणों करके युक्त दासियों करके अलंकृत होती है॥२३॥

अथ स्त्रीणां पतिलक्षणम्

गौराङ्गःपतिरस्तगे दिनकरे कामी सरोजेक्षणश्चन्द्रे रूपगुणान्वितः कृशतनुर्भोगीरुगार्तो भवेत् । नम्रः क्रूररसोलसः पटुवचाः संरक्तकांतिः कुजे

विद्यावित्तगुणप्रपंचरसिकः सौम्ये मदस्थानगे ।।२४।।
दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्तविभवः कामी च बाल्ये गुरोः
कान्तो नित्यविनोदकेलिचतुरः काव्येकविःक्ष्मापतिः ।
मन्दे वृद्धकलेवरोऽस्थिततनुः पापी पतिः कामगे
राहौ वा शिखिनिस्थितेमलिनधीर्नीचोथवा तत्समः ।।

अर्थ–जिन कन्याओं के जन्मकाल में सातवें घर में सूर्य स्थित होय उन स्त्री के पति गौरवर्ण के अंगवाला कामी क्रोधसहित नेत्रोंवाला होता है और चंद्रमा सप्तम स्थित होय तो रूपयुक्त गुणवान् दुर्बल शरीरवाला भोगी और रोग करके दुःखी होता है। जो सातवें घर में मंगल स्थित होय तो नम्र दुष्ट स्वभाववाला चतुर वचन बोलनेवाला आलसी लालवर्ण का होता है और सातवें घर में बुध स्थित होय तो वह विद्या और धन गुणवान् प्रपंच जिसको प्यारा ऐसा होता है।।२४।। और बृहस्पति सप्तम स्थित होय तो बड़ी उमरवाला राजा के तुल्यधन ऐश्वर्यकरके युक्त होय तो शोभायमान नित्य ही आनंद खेल में चतुर काव्य जाननेवाला धरती का पति होता है और शनैश्चर सप्तम स्थित होय तो बूढ़ी देहवाला चलायमान देहवाला पापी होता है और राहू वा केतु सप्तम स्थित होय तो वह मलिन बुद्धि वाला नीच वा नीच के समान पति होता है।।२५।।

अथ कन्याजन्मनि डिंभाख्यचक्रम्

उक्तं च स्वरोदये

मस्तके त्रीणि ऋक्षाणि सप्त भानि मुखे न्यसेत् ।
स्तनद्वयेष्टऋक्षाणि हृदये त्रीणि भानि च ।।२६।।
नाभौ त्रीणि तथा गुह्ये क्रमात्सूर्यर्क्षतो न्यसेत् ।
कन्याजन्मनि डिम्भाख्यं चक्रमुक्तं स्वयंभुवा ।।२७।।

अर्थ–स्त्रियों के जन्मकाल में डिंभाख्य चक्र कहते हैं। मस्तक पर ३ नक्षत्र मुख में ७ दोनों स्तनों पर ४। ४ हृदय में ३॥२६॥ टूडी में ३, पेडू पर ३ नक्षत्र सूर्य्यनक्षत्र ते क्रमकरके न्यास करै। कन्या जन्मकाल में डिंभाख्यचक्र ब्रह्माजी ने कहा है॥२७॥

अथ चक्रस्थितनक्षत्रफलम्

शीर्षे संतापयुक्ता स्यान्मुखे धान्यधनान्विता ।
हृदि सौख्ययुता गुह्ये नारी स्याद्व्यभिचारिणी ॥२८॥

अर्थ–जो कन्या का जन्म नक्षत्र शिर पे आवे तो संताप करे और मुख पे आवे तो धनधान्ययुक्त करे। हृदय पर आवे तो सौख्ययुक्त करे, पेडू पर आवे तो व्यभिचारिणी करे॥२८॥

स्तने ऋक्षे जन्मपातः पतिसौख्यविवर्धकः ।
असंतुष्टा स्वामिरता नाभौ स्याज्जन्मकालके ॥२९॥

अर्थ–जो कन्या का जन्मनक्षत्र स्तनों पर आवे तो पति का सौख्य बढ़ावे और नाभि पर आवे तो असंतुष्ट स्वामी में रत होती है॥२९॥

अथ नारीचक्रमाह जातकाभरणे

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम् । प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः ॥३०॥ नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चंद्रधिष्ण्यावधीत्थम् । सत्संतापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धिः ॥३१॥ कामं स्वामिप्रेमवृद्धिस्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यंतहर्षः । पत्युश्चिंतानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ॥३२॥

अर्थ–अब स्त्रीचक्र कहते हैं। सूर्य के नक्षत्र से लेकर चंद्र नक्षत्र तक का फल कहा है यानी स्त्रियाकार स्वरूप बनायकरके सूर्य के नक्षत्र से ३ नक्षत्र माथे पर स्थापित करे। मुख पर ७ और प्रत्येक चूंची पर ४।४ और तीन ३ हृदय पर स्थापित करे।।३०।। टूडी में ३ और ३ गुह्यस्थान में जो शिर के नक्षत्रों में चंद्रमा का नक्षत्र पड़े तो संताप और मुख के नक्षत्रों में चंद्र आवे तो नित्य ही मिष्टान्न लाभ होता है।।३१।। स्तन के नक्षत्र में चंद्रमा पड़े तो पति से प्रीति अधिक कहना। हृदय के नक्षत्रों में चंद्र पड़े तो हर्ष प्राप्त होता है। नाभि में नक्षत्र पड़े तो स्वामी की अत्यंत चिंता होती है। गुह्यस्थान के नक्षत्रों में पड़े तो काम करे पीड़ित कहना चाहिये।।३२।।

अथ स्त्र्याकारस्वरूपम्

पूर्वैर्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं
सम्यग्वाऽप्यशुभंच यन्मतिमतावाच्यंविदित्वाबलम् ।
योगानां चं नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा ।
पाणिप्रग्रहणे तथा च वरणेसंभूतिकालेपिच ।।३३।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते
स्त्रीजातके राजयोगवर्णनो नाम
षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

अर्थ–पहिले मुनीश्वरों ने स्त्रीजातक् में विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल भलेप्रकार जो कहा है सो बुद्धिमानों ने बलाबल विचार करके पहिले कहे हुए योगों को नियोजन करके ये फल प्रश्नकाल में विवाहकाल में सगाई समय विचार करना चाहिये।।३३।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-
हिन्दीटीकायां राजयोगफलवर्णनो
नाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

अथ तिथिजातफलाध्यायो निरूप्यते

उक्तं च श्यामदैवज्ञेन

अथ प्रतिपदि जातफलम्

नारी यदा त्वग्नितिथौ सुजाता सौभाग्ययुक्ता पतिवल्लभा च । सुपुण्यशीला बहुपुत्रपौत्रा परागमज्ञानविराजमाना ।।१।।

अर्थ–जो नारी प्रतिपदा तिथि में पैदा होय वह स्त्री सौभाग्यकरके युक्त पति को प्यारी अच्छे पुण्य में शील जिसका, बहुत से पुत्र पौत्रों सहित वेद वेदांत के ज्ञान में विराजमान होती है।।१।।

अथ द्वितीयाजातफलम्

नारी सुवेषा बहुकान्तियुक्ता दयान्विता पार्थिववल्लभा च । सुनेत्रकेशा बहुधर्मरक्ता सदाद्वितीयाप्रभवा मनोज्ञा ।।२।।

अर्थ–जो नारी द्वितीया तिथि में पैदा होय वह स्त्री अत्यंत कांतियुक्त उत्तम वेषवाली दयायुक्त राजा को प्यारी अच्छे नेत्र और बाल जिसके, बहुत से धर्म में तत्पर मन की जाननेवाली स्त्री होती है।।२।।

अथ तृतीयाजातफलम्

सौम्या तृतीयाप्रभवा सुसत्या भवेत्सुमन्दाचिरकालकृत्या । तीर्थानुरक्ता वनिताभिजाता गुणान्विता पुत्रवती सपौत्रा ।।३।।

अर्थ–जो स्त्री तृतीया तिथि मे पैदा भई होय वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवती पतिव्रता मंदा बहुतकाल में काम करनेवाली तीर्थों में आसक्त गुणों करके युक्त पुत्र पौत्रोंवाली होती है।।३।।

अथ चतुर्थीजातफलम्

सदा नृशंसा वनितातितीक्ष्णा सा स्त्री सकामा-
व्यभिचारशीला । द्यूते रता धर्मविवेकहीना
नारी चतुर्थीतिथिषु प्रजाता ॥४॥

अर्थ–हमेशा पराये द्रोह में शील जिसका वह स्त्री तीक्ष्ण स्वभाववाली कामसहित व्यभिचार में शील जिसका द्यूत अर्थात् जुवा खेलने में तत्पर धर्म और विवेकरहित ऐसी नारी चतुर्थीतिथि में पैदा होती है॥४॥

अथ पंचमीजातफलम्

इष्टैर्युता बंधुप्रिया सुशीला दक्षा सुकार्ये सुख-
संयुता च । परोपकारे निरता विरक्ता यस्याः
प्रसूतौ तिथिपंचमी स्यात् ॥५॥

अर्थ–बंधुगुणों करके सहित भाइयों को प्यारी सुशीलवती अपने कार्य में चतुर सुखसहित पराये उपकार में तत्पर जिसके जन्मकाल में पंचमी तिथि होय वह विरक्त होती है॥५॥

अथ षष्ठीजातफलम्

षष्ठ्यां प्रजाता वनिता सुसत्या नारी प्रधाना
जनवल्लभा च । श्लेष्माधिका क्रोधपरा कठोरा
महाव्यया नीतविहीनगात्रा ॥६॥

अर्थ–जो नारी छठवी तिथि में पैदा होय वह पतिव्रता स्त्रियों में प्रधान मनुष्यों को प्यारी श्लेष्मा का अधिक कोप जिसको क्रोधयुक्त कठोर जादे खर्च करनेवाली नीति करके हीन शरीरवाली होती है॥६॥

अथ सप्तमीजातफलम्

विशालनेत्रा प्रमदा मनोज्ञा नयान्विता देवगुरु-प्रसक्ता । सुदानशीला नियमैः समेता तिथ्यर्कजाता विगताभिमाना ॥७॥

अर्थ–विशाल नेत्रोंवाली नारी मन के जाननेवाली, नम्रतायुक्त देवता और गुरु में आसक्त अच्छे दान में शील जिसका, नियमसहित और दूर हुआ है अभिमान जिसका, ऐसी स्त्री सप्तमी तिथि में पैदा होती है॥७॥

अथाष्टमीजातफलम्

प्रियामिषा पानरता कुरूपा दुष्टस्वभावा सुतवित्तहीना । दयाविहीना विकृतानुकारा गौरीपतेर्यत्प्रसवे तिथिः स्यात् ॥८॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में पार्वती के पति शिवजी की अष्टमी तिथि होय उस नारी को मांस प्यारा, मद्यपान में तत्पर, कुरूपवाली, दुष्टस्वभाव पुत्र और धनकरके हीन दयारहित भयंकर आकारवाली होती है॥८॥

अथ नवमीजातफलम्

कुटुंबहीना ललना कठोरा पराङ्मुखी सर्वगृहस्थ कार्य्ये । कन्यैव दुष्टा व्यसनैः प्रयुक्ता यस्याः प्रसूतौ नवमी तिथिर्भवेत् ॥९॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में नवमी तिथि होय वह नारी कुटुंबहीन कठोर सब घर के कामों में पराङ्मुखी होती है और वह विवाह के पहिले व्यभिचारिणी अनेक व्यसनों करके युक्त होती है॥९॥

अथ दशमीजातफलम्

नारी भवेद्धर्मपरा सुहर्म्या प्रलंबकण्ठा च सुख-प्रवीणा । देवार्चने प्रीतिकरा सुपुत्रा यस्या जनौ स्याद्दशमीतिथिस्तु ।।१०।।

अर्थ–जिस औरत के जन्मकाल में दशमी तिथि होय, वह नारी धर्म में तत्पर, अच्छे मकान, लंबा गला, सुन्दर आवाज वाली, चतुर, देवताओं के पूजन में प्रीति करनेवाली, अच्छे पुत्रोंवाली होती है।।१०।।

अथैकादशीजातफलम्

देवाद्विजार्च्चाव्रतदानशीला पुण्यैकचित्तोत्तम-कर्मदक्षा । नानार्थविच्छास्त्रपरागमज्ञा चैकादशी जन्मतिथिर्भवेत्सा ।।११।।

अर्थ–देवता और ब्राह्मणों के पूजन और व्रत दान में शील जिसका, एक पुण्य में उत्तम चित्त, उत्तम कर्म करने में समर्थ अनेक प्रकार के अर्थों को जाननेवाली, शास्त्रज्ञा, जिसकी जन्म तिथि एकादशी होती है वह स्त्री वेदांत जाननेवाली होती है।।११।।

अथ द्वादशीजातफलम्

जलाशये प्रीतिकरा सुशीला निजालये वासविला-संयुक्ता । सुरेंद्रभावापररंध्रपक्षा या द्वादशीजा वनिताप्रधाना ।।१२।।

अर्थ–जलाशयों में प्रीति करनेवाली, सुशीला, अपने घर में वास करे। विलासयुक्त पराये छिंद्र को इंद्र के समान हजार नेत्रों से देखनेवाली यह द्वादशी तिथि में पैदा हुई स्त्रियों में प्रधान होती है।।१२।।

अथ त्रयोदशीजातफलम्

रूपान्विता धर्मपरा सुसत्या सच्छास्त्रवेत्त्री च सुखप्रवीणा । क्षमान्विता सर्वजितारिपक्षा या कामिनी कामतिथौ प्रसूता ।।१३।।

अर्थ–रूप करके युक्त, धर्म में तत्पर, पतिव्रता, अच्छे शास्त्रों को जाननेवाली, श्रेष्ठ शब्दवाली, चतुरा, क्षमावाली, सम्पूर्ण जीते हैं शत्रुदल जिसने, ऐसी वह नारी होती है जो कि त्रयोदशी तिथि में पैदा होती है।।१३।।

अथ चतुर्दशीजातफलम्

कंदर्पलीलारतकार्यदक्षा विरुद्धचेष्टा पतिपुत्रहीना स्याद्रूपजीवा मलिनाकुशीला चतुर्दशीजा हि विचित्रचित्ता ।।१४।।

अर्थ–कामकला में रत, कार्य में चतुरा, टेढ़ी चेष्टा, पतिपुत्र करके हीना, वेश्यावृत्ति करके आजीविका करनेवाली, मलिन, दुष्ट शील जिसका, जो नारी चतुर्दशी तिथि में पैदा भई वह पूर्व कहे गुणोंवाली और विचित्र चित्तवाली होती है।।१४।।

अथ पौर्णमासीजातफलम्

सुचारुमूर्तिः सुगुणा सलज्जा साध्वी सुपुत्रा सुखिनी कलाज्ञा । विशालनेत्रा विधुवन्मुखी सा यद्द्भवश्चां-द्रतिथौ सुकांता ।।१५।।

अर्थ–सुंदर श्रेष्ठ मूर्तिमती, सुन्दरगुणवती, लज्जासहित, पतिव्रता, सुंदरपुत्रवती, सुखवाली, कलाओं की जाननेवाली, बड़े नेत्र, चंद्रमा का सा मुख जिसका, जिसकी पैदायश के समय पौर्णमासी तिथि हो सो कांता सुन्दर होती है।।१५।।

अथ अमावस्याजातफलम्

सुचारुवक्त्राद्विजदेवभक्ता पतिप्रिया साधुसुशील-दक्षा । गृहस्थकार्ये सुविधिप्रवीणा यदुद्भवो दर्श तिथौ सुपुण्या ।।१६।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते
स्त्रीजातके तिथिजातफलवर्णनं नाम
सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

अर्थ–सुन्दरमुख जिसका, ब्राह्मण और देवताओं की भक्तिवाली, पति को प्यारी, साधु उत्तमशीलवती, चतुरा, घर के काम में विधिपूर्वक प्रवीणा, जिसके जन्मकाल में अमावस्या तिथि होय वह नारी पुण्यवती होती है।।१६।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराज-
ज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-
हिन्दीटीकायां तिथिजातकफलवर्णनं नाम
सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

अथ वारजातफलाध्यायो निरूप्यते

तीक्ष्णा च सुभगा चैव प्रचंडा तेजसान्विता
षड्रसास्वादिनी कन्या जायते रविवासरे ।।१।।

अर्थ–तीक्ष्ण स्वभाववाली, सुभगा, प्रचंडस्वरूपा, प्रकाशवाली, जिस कन्या के जन्मकाल में सूर्यवार होय जह छह रसों के स्वाद लेनेवाली होती है।।१।।

अथ चंद्रवारजातफलमाह

सुस्निग्धा सुभगा चैव सुस्मिता चारुभूषणा ।
जलकेलिकरा नित्यं जायते चंद्रवासरे ।।२।।

अर्थ–सुंदर चिकनी देहवाली, श्रेष्ठभाग्यसहिता, उत्तम है हँसन जिसका, श्रेष्ठ आभूषणों के धारण करनेवाली, जल के खेल नित्य ही करनेवाली कन्या सोमवार के दिन पैदा होती है।।२।।

अथ भौमवारजातफलमाह

प्रचण्डा तेजसा नित्यं कृतघ्ना क्रोधसंयुता ।
कौसुंभवस्त्रा निरता जायते भौमवासरे ।।३।।

अर्थ–प्रचण्ड तेज करके नित्य ही प्रकाशवाली, अहसान न माननेवाली, क्रोधकरके सहित, कुसुंभे के रंगे वस्त्रों में तत्पर कन्या मंगलवार में पैदा होती है।।३।।

अथ बुधवारजातफलमाह

शुभानिष्टेषु वाक्येषु रंजते मिष्टभाषिणी ।
धर्मकर्मरता नित्यं जायते बुधवासरे ।।४।।

अर्थ–अच्छे बुरे वचनों में प्रसन्न रहनेवाली, मिष्टवाक्य बोलनेवाली, धर्मकर्म में नित्य ही तत्पर हो वह कन्या बुधवार को पैदा होती है।।४।।

अथ गुरुवारजातफलमाह

पापकर्मविहीना च धनधान्यसमन्विता ।
देवद्विजार्चिता नारी या जाता गुरुवासरे ।।५।।

अर्थ–पापकर्म जितने हैं उनसे रहित और धन धान्य करके सहित देवता और ब्राह्मणों के पूजन करनेवाली जो स्त्री होती है वह बृहस्पतिवार में पैदा होती है।।५।।

अथ भृगुवारजातफलमाह

वस्त्राभरणसंपन्ना गजवाजिसमन्विता ।
साध्वी पुत्रयुता कन्या या जाता भृगुवासरे ॥६॥

अर्थ–कपड़े और गहनों करके संपन्न, हाथी और घोड़ों करके सहित पतिव्रता पुत्रकरके युक्त होती है, वह शुक्रवार के दिन पैदा होती है॥६॥

अथ शनिवारजातफलमाह

मलिना च कुवेषा च प्रजल्पा वैरकारिणी ॥
अल्पपुत्रा दयाहीना कन्या जाता शनेर्दिने ॥७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके
वारजातफलवर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अर्थ–मलिन बुरे वेषवाली निर्भयवाक्य बोलनेवाली सबसे वैर करनेवाली थोड़े पुत्रवती दया करके हीन जो कन्या होती है, वह शनैश्चर के दिन पैदा होती है॥७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज
राजज्यौतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी
हिन्दीटीकायां वारजातफलवर्णनो
नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथ नक्षत्रजातफलाध्यायो निरूप्यते

अथाश्विनीजातफलमाह-वृद्धयवन:

जाताश्विनीषु प्रमदामनोज्ञा प्रभूतकोशा प्रियदर्शनाच।
प्रियंवदा सर्वसहाभिरामा बुद्ध्यान्विता देवगुरूप्रसक्ता।।१।

अर्थ–अश्विनीनक्षत्र में पैदा भई नारी मन के जाननेवाली बहुत धनवती प्यारा दर्शन जिसका प्रियवाक्य कहनेवाली सबकी सहारनेवाली अत्यंत सुंदर बुद्धि करके सहित देवता और गुरु ब्राह्मणों में आसक्त होती है।।१।। अन्यच्च ग्रंथांतरे "कन्या बलवती चैव त्वहंकारवती सदा ।। व्यवहारता दक्षा दस्त्रभे जायते हि सा" इति ।।

अथ भरणीजातफलमाह

स्त्रीवर्गयुक्ता भरणीषु जाता भवेन्नृशंसा कलहप्रिया च।
सुदुष्टचित्ता विभवैर्विहीना हतप्रतापा सततं कुचैला।।२।।

अर्थ–भरणीनक्षत्र में पैदा भई नारी स्त्रीगणों करके युक्त परद्रोह शील जिसका, कलहप्रिय, भलेप्रकार दुष्ट चित्तवाली, वैभवकरके हीन नष्ट प्रतापवाली निरंतर मलिन होती है।।२।। अन्यच्च "अत्यंतसुखिनी कन्या चार्वंगी हास्यकारिणी ।मातृपितृप्रशस्ता च जायते यमदैवते इति।"

अथ कृतिकाजातफलमाह

जाता भवेत्स्त्री त्वथ कृत्तिकासु क्रोधाधिका-युद्धपराविरक्ता । प्रद्वेषिणी बंधुजनेन हीना श्लेष्माधिका क्षामतनु:सदैव ।।३।।

अर्थ–कृत्तिकानक्षत्र में पैदा भई स्त्री अधिक क्रोधयुक्त युद्ध में रक्त, विरक्त, हमेशा बैर करनेवाली, बंधुजनों करके हीन श्लेष्मा अधिक दुर्बल

शरीर हमेशा रहता है।।३।। अन्यच्च ग्रंथांतरे "तेजस्विनी यशोयुक्ता परसक्ता तु कन्यका ।। बह्वाशनी क्रूररूपा कृत्तिकायान्तु जायते।।"

अथ रोहिणीजातफलमाह

जाता भवेत्स्त्रीत्वथ रोहिणीषु प्रभूतगात्राशुचिरप्रमत्ता।
पतिप्रधाना पितृमातृभक्तासुपुत्रकन्याविभवैः समेता।।४।।

अर्थ–रोहिणी नक्षत्र में पैदा भई नारी बड़े शरीर वा पवित्र मद करके हीन पति है प्रधान जिसके पिता माता की भक्ता अच्छे पुत्र कन्या वैभव करके सहित होती है।।४।।

अन्यमतांतरे "आयुष्मती सुतवती कन्यका कुलवर्द्धिनी ।।
धन्या मानवती चैव रोहिण्यां जायते हि सा" ।।

अथ मृगशिरोजातफलमाह

मृगे तु मान्या वनिता सुरूपा प्रसन्नवाक्या प्रियभूषणा च । नानार्थविच्छास्त्रपरा सुपुत्रा धर्म्माश्रिया शुभ्रतनुः प्रसक्ता ।।५।।

अर्थ–मृगशिरानक्षत्र में पैदा भई नारी सुरूपवती मानयुक्त प्रसन्नचित्त प्रियवाक्य बोलनेवाली भूषणों सहित अनेक अर्थों के जाननेवाली शास्त्रज्ञ श्रेष्ठ पुत्रोंसहित धर्म के आश्रय में तत्पर श्वेत शरीरवाली होती है।।५।।

अन्यच्च–"मातुः पितुः प्रशस्ता च कन्यका धनभागिनी ।।
कृपणा चान्यसक्ता च जायते सोमदैवते "।।

अथ आर्द्राजातफलमाह

आर्द्रासु नारी कृतमन्युयुक्ता दुष्टस्वभावा कफपित्तभाजा।
सुरेंद्रभावा पररंध्रदक्षा महाव्यया कृत्रिमपंडिता च ।

अर्थ–आर्द्रानक्षत्र में पैदा भई नारी बनाये हुए अभिमान युक्त दुष्ट स्वभाववाली कफ पित्त भोगनेवाली पराये छेद को इंद्र के समान हजार आंखों करके देखनेवाली बहुत खर्च करे बनावट की पंडिता होती है॥६॥

अन्यच्च–"पापकर्मप्रसक्ता च कुरूपा कलहप्रिया ॥ कन्यका दृढ़वैरा च जायते रौद्रदैवते ॥"

अथ पुनर्वसुजातफलमाह

पुनर्वसौदंभविहीनभावा श्रुत्याधिका पुण्यपरस्वभावा ।
नारी भवेद्धर्मपरा मनोज्ञा सुपूजिता नाथवती सदैव ॥७॥

अर्थ–पुनर्वसुनक्षत्र में पैदा भई नारी अभिमान रहित श्रवण करा हुआ याद बहुत रहे, पुण्यवान् स्वभाव जिसका, धर्मवती मन की जाननेवाली, मनुष्यों करके पूजनीय सदा पति सहित सौभाग्यवती होती है॥७॥

अन्यच्च–"क्षमाशीलप्रसक्ता च कन्यका बांधवप्रिया ॥
अवैरा परलोकार्था जायते रौद्रदैवते ॥"

अथ पुष्यजातफलमाह

पुष्येषु जाता वनिता सुरूपा प्रसिद्धकृत्या सुभगा सुगात्रा । देवद्विजार्चाप्रणया सुहर्म्या सुखाधिका बांधववल्लभा च ॥८॥

अर्थ–पुष्यनक्षत्र में पैदा भई नारी सुरूपवती कर्म्मों करके प्रसिद्ध श्रेष्ठ भाग्यवाली सुन्दर शरीरवाली देवता ब्राह्मणों की पूजन करनेवाली, नम्रतासहित उत्तम मकान सुख अधिक, भाइयों की प्यारी होती है॥८॥

अन्यच्च–"धर्मबुद्धिसदारूढ़ा सर्वकार्यकरी सदा ।। प्रशस्ता कन्यका चैव जायते गुरुदैवते ।।

अथाश्लेषाजातफलमाह

सार्प्पे कुरूपा व्यसनाभिभूता प्रियाविहीनाति-
कठोरवाक्या । नारी भवेत्सत्यविहीनकृत्या
दंभान्विता पापरता कृतघ्ना ।।९।।

अर्थ–जो नारी आश्लेषानक्षत्र में पैदा भई वह अनेक व्यसनों से युक्त प्रिय कर्मों करके हीन अति कठोर वाणी बोलनेवाली सत्यकरके हीन कर्म करनेवाली क्रोधसहित पापकर्म में तत्पर अहसान न माननेवाली होती है।।९।।

तद्यथा–"प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलहप्रिया ।।
कन्यका प्रेमसक्ता च जायते नागदैवते ।।"

अथ मघाजातफलमाह

मघासु मान्या बहुशास्त्रपक्षा श्रियाधिका पाप-
विवर्जिता च । भक्ता गुरूणां प्रणता द्विजानां
नारी भवेत्पार्थिवसौख्ययुक्ता ।।१०।।

अर्थ–मघानक्षत्र में पैदा भई नारी सत्पुरुषों करके मान्य बहुत शास्त्र जाननेवाली लक्ष्मीसहित पाप करके रहित ब्राह्मणों से नम्र गुरुजनों की भक्ता राजाओं करके सुखयुक्त होती है।।१०।।

अन्यच्च–"महार्हभोजने सक्ता कन्या भोगवती तु सा ।
पितृदेवार्चने रक्ता जायते पितृदैवते ।।"

अथ पूर्वाफाल्गुनीजातफलमाह

भाग्यैर्जितारिः सुभगा सुपुत्रा नयान्विता
सद्व्यवहारदक्षा ।। शास्त्रानुरक्ता प्रियवादिनी च

स्वप्राप्तपुण्या हि भवेत्कृतज्ञा ।।११।।

अर्थ–भाग्य करके जीते हैं शत्रु जिसने श्रेष्ठ भाग्यवती उत्तम पुत्रवती नम्रतासहित अच्छे व्यवहार में चतुर शास्त्र में आसक्त प्यारी वाणी बोलनेवाली आप ही प्राप्त किया है पुण्य जिसने अहसान मारनेवाली होती है।।११।।

अन्यच्च–"त्यागशीलविहीना च लोभक्रोधविवर्द्धिनी ।
कन्यका दृढ़कामा च जायते नागदैवते" ।।

अथोत्तराफाल्गुनीजातफलमाह

जातोत्तरायां स्थिरचित्तवित्ता नयप्रधाना गृहकृत्यदक्षा ।। गुणानुरक्ता व्यसनैर्वियुक्ता नारी भवेद्रोगविवर्जिताङ्गा ।।१२।।

अर्थ–जो कन्या उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में पैदा हुई वह कन्या स्थिर चित्तवाली धनवाली नम्रता है प्रधान जिसके घर में कामों में चतुर गुणों में आसक्त दुर्व्यसनों करके रहित रोग करके रहित शरीरवाली होती है।।१२।।

अन्यच्च–"अर्थसंचयसंयुक्ता कन्यका छिद्रकारिणी ।
किंचिद्धर्मवती चैव जायतेर्यमदैवते ।।"

अथ हस्तजातफलमाह

हस्ते सुहस्ता शुभनेत्रकर्णा क्षमान्विता शीलधना विधिज्ञा । भवेन्नितांतं वनिता सुभासा महासुखैर्वद्धितगात्रकीर्तिः ।।१३।।

अर्थ–जो कन्या हस्त नक्षत्र में पैदा भई वह सुन्दर हाथ नेत्र कानवाली क्षमासहित और शीलवती धनवती अनेक विधि को जाननेवाली निरंतर वह नारी सुन्दर कांतिवाली बहुत सुखकरके बढती

है शरीर की कीर्ति जिसकी ऐसी होती है।।१३।।

अन्यच्च–"तीक्ष्णा च दृढ़कामा च परद्रव्यापहारिणी ।।
स्वकर्मकुशला कन्या जायते चार्कदैवते "।।

अथ चित्राजातफलमाह

चित्रासु चित्राभरणा सुरूपा चतुर्दशीमेकतमां हि हित्वा । तथा च कृष्णे विषकन्यका स्याच्छुल्के दरिद्रा त्वथ बंधकी च ।।१४।।

अर्थ–जो कन्या चित्रानक्षत्र में पैदा भई वह कन्या विचित्र आभरण रूपवाली होती है परंतु चतुर्दशी तिथि जन्म की नहीं होय जो कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में जन्म होय तो विषकन्या होती है और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी चित्रानक्षत्र में जन्म होय तो वह नारी दरिद्रिणी और पापिनी होती है।।१४।।

अन्यच्च–"शुक्लांबरधरा कन्या हास्यकामिजनप्रिया ।
पितृदेवार्चने सक्ता जायते त्वाष्ट्रदैवते ।।"

अथ स्वातीजातफलमाह

स्वातीषु जाता सततं सुताढ्या चित्राधिका सत्यधनाल्पपाना । नारीभवेत्कीर्तिसमन्विता च प्रभूतमित्रा विजितारिपक्षा ।।१५।।

अर्थ–जो नारी स्वाती नक्षत्र में पैदा भई होय वह निरन्तर पुत्रों सहित चतुर सत्य और धन सहित थोड़ा पान करनेवाली यश करके सहित बहुत मित्रोंवाली जीते हैं शत्रुदल जिसने ऐसी होती है।।१५।।

अन्यच्च–"निरालस्यातिरूपा च कुत्सिता च जयान्विता ।
कन्यका चाप्रमादी च जायते वायुदैवते ।।"

अथ विशाखाजातफलमाह

भवेद्विशाखासु सुहृत्प्रभावा सुकोमलांगी विभवैः समेता। तीर्थानुरक्ता व्रतधर्मदक्षा रामा भवेद्बांधववल्लभा च ॥१६॥

अर्थ–विशाखानक्षत्र में पैदा भई कन्या अपने मित्रों के प्रभाववाली कोमल शरीर वैभव करके युक्त तीर्थों में आसक्त व्रत धर्म में चतुर बांधवों को प्यारी होती है॥१६॥

अन्यच्च–"धर्ममूलविनीता च प्रज्ञाधनसमन्विता। द्विदैवते हि संजाता कन्यका सत्यवादिनी ॥"

अथानुराधाजातफलमाह

मैत्रेसुमित्रा विगताभिमाना प्रसन्नमूर्तिः प्रभुतासमेता। विनीतवेषाभरणा सुमध्या भक्ता गुरूणां पतिभक्तियुक्ता।१७।

अर्थ–अनुराधानक्षत्र में पैदा भई जो कन्या वह अच्छे मित्रोंसहित अभिमानरहित हमेशा प्रसन्नमूर्ति ऐश्वर्ययुक्त नम्रता लिये स्वरूप जिसका, आभरणयुक्त बड़े पुरुष तथा पति की हमेशा भक्ता होती है॥१७॥

अन्यच्च–"बहुभुग्लोभसंपन्ना मद्यमांसरता सदा। कन्यका चान्यसंसक्ता जायते मित्रदैवते ॥"

अथ ज्येष्ठाजातफलमाह

ज्येष्ठासु रम्या वनिता प्रगल्भा सुचारुवाक्या-विनयान्विता च। प्रभूतकोपा सुभगा सुताढ्या बंधुप्रिया सत्यसमन्विता च ॥१८॥

अर्थ–ज्येष्ठानक्षत्र में पैदा भई कन्या शोभायमान निर्भय वाक्य बोलनेवाली श्रेष्ठ वचन जिसका नम्रतायुक्त बहुत क्रोध करनेवाली श्रेष्ठ

भाग्यवाली पुत्रोंसहित भाइयों को प्यारी सत्यकरके सहित होती है।।१८।।

अन्यच्च ग्रंथांतरे–"शस्त्रोपघातिनी चैव महाकलहकारिणी । कन्यका चातितीक्ष्णा च जायते इंद्रदैवते ।।"

अथ मूलजातफलमाह

मूलेल्पसौख्या विधवा दरिद्रा रोगाभिभूता ।
बहुशास्त्रपक्षा नारी भवेद्वान्धवलोकहीना
पराभिभूता बहुनीचगर्वा ।।१९।।

अर्थ–मूलनक्षत्र में पैदा भई कन्या थोडा सुखवाली विधवा दरिद्रणी रोगयुक्त बहुत शास्त्र को जाननेवाली बंधुजनों करके हीन पराश्रयवाली बहुत नीच अभिमान करके सहित होती है।।१९।।

अन्यच्च–"पापकर्मा प्रचण्डा च कुकार्यनिरता सदा ।
कुलक्षयकरी कन्या जायते मूलभे च या ।।"

अथ पूर्वाषाढ़ाजातफलमाह

आप्येनुकूला कुलबंधुमुख्या सुपूज्यकर्म्मातुल-
वीर्यसत्या । विशालनेत्राद्भुतरूपयुक्ता नारी
भवेत्कीर्तियुता सदैव ।।२०।।

अर्थ–पूर्वाषाढा नक्षत्रमें पैदा भई कन्या अपने कुल के अनुकूल बंधुगुणों में मुख्य पूजनीय कर्म करनेवाली बहुत बलवान् पतिव्रता बडे नेत्रवाली अद्भुतरूपसहित संसार में यशवाली होती है।।२०।।

अन्यच्च–"धर्मशीला विनीता च कन्यका सत्यवादिनी पुण्यकर्मरता चैव जायते जलदैवते"।।

अथोत्तराषाढ़ाजातफलमाह

वैश्वे तु जाता वनिता मनोज्ञा भवेद्द्वितीया

प्रथिता च लोके । नानार्थभोगैः सहिता प्रधाना संतुष्टचित्ता पतिवल्लभा च ।।२१।।

अर्थ-उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें पैदा भई कन्या मन की जाननेवाली संसार की स्त्रियों में अग्रणी द्वितीया होती है। अनेक प्रकार के धन का भोग करके सहित प्रधान संतुष्ट चित्त पति को प्यारी होती है।।२१।।

अन्यच्च-"सती प्रियवचाश्चैव नित्यं चातिथिसेविनी ।
कन्यका जायते यातु वैश्वदेवे सुतान्विता ।।"

अथ श्रवणजातफलमाह

प्रभूतरूपा हरिभे सुविज्ञा शास्त्रानुरक्ता प्रचुर-प्रभावा ।। स्त्री सर्वदा दानरता सुसत्या परोपकारे प्रणता च नित्यम् ।।२२।।

अर्थ-जो नारी श्रवण नक्षत्र में पैदा भई वह नारी बहुत रूपवाली बुद्धिमती शास्त्रों में आसक्त बड़ा है प्रभाव जिसका, हमेशा दान में तत्पर पतिव्रता पराया उपकार करनेवाली नम्रतासहित नित्य ही होती है।।२२।।

अन्यच्च-"विनीता श्रद्दधाना च कथालापप्रिया सती ।
कन्यका स्वकुले पूज्या जायते विष्णुदैवते ।।"

अथ धनिष्ठाजातफलमाह

भवेद्धनिष्ठासु कथानुरक्ता नारी प्रभूतान्नसुव-स्त्रभाजा । नानार्थदा प्राणिदयानिषण्णा गुणाधिका सद्गुणचेष्टिता स्यात् ।।२३।।

अर्थ-जो नारी धनिष्ठा नक्षत्र में पैदा भई वह कथा श्रवण करने में आसक्त बहुत से अन्नवाली श्रेष्ठ वस्त्रों को पहिरनेवाली अनेक प्रकार के

धन देनेवाली प्राणीमात्र पर दया करनेवाली तैयार बैठी गुणों में अच्छे गुणों की सी चेष्टा जिसकी ऐसी होती है॥२३॥

अन्यच्च–"अर्थार्थिनी च लुब्धा च पुष्पमाल्यांबरप्रिया।
कन्यका ह्यन्यसक्ता च जायते वसुदैवते ॥"

अथ शतभिषाजातफलमाह

भवेत्सुदात्री त्वथ वारुणर्क्षे स्त्रीसंमता पूज्यतमा स्ववर्गे । देवार्चने श्रेष्ठजनानुरक्ता सदा हिता सर्वकुतूहलानाम् ॥२४॥

अर्थ–जो स्त्री शतभिषानक्षत्र में पैदा भई वह दाता स्त्रियों को सलाह देनेवाली अपने कुटुम्ब में पूज्य देवताओं के पूजन करनेवाली सबको हर्षदायिनी होती है॥२४॥

अन्यच्च–"पापकर्म-प्रचण्डा च नित्यमुद्वेगकारिणी ।
परोपकारिणी कन्या जाता वरुणदैवते ॥"

अथ पूर्वाभ्राद्रपदजातफलमाह

अजैकपादे वनिताभिजाता प्रभूतकोशा श्रुत-लालसा च । सत्पात्रदा साधुसमागमोक्ता विद्यान्विता भूरिधनप्रधाना ॥२५॥

अर्थ–जो नारी पूर्वाभाद्रपद के प्रथम चरण में पैदा भई वह बहुत धनवाली कथा श्रवण में है, लालसा जिसकी अच्छे पात्रों को दान देनेवाली साधुओं के समागम करनेवाली विद्या करके सहित बहुत धनवाली प्रधान होती है॥२५॥

अन्यच्च–"पापकर्मरता नित्यं कन्यका सर्वभक्षिणी ।
मायाविनी देवभक्ता जायतेजैकपादभे ॥"

अथोत्तराभाद्रपदाजातफलमाह

उपांत्यभे स्वामिहितानुरक्ता क्षमान्विता प्रीतिकरा गुरूणाम् । प्रशांतगर्वा सुतसौख्ययुक्ता विवेकिनी सत्यपरा सदैव ।।२६।।

अर्थ–उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पैदा भई कन्या अपने पति के हित करने में तत्पर क्षमासहित बड़े जनों में प्रीति करनेवाली शांत है अभिमान जिसका पुत्रसौख्य सहित चतुर सत्य में तत्पर सदा रहती है।।२६।।

अन्यच्च–"सुबुद्धिधर्मसक्ता च गुणशीलसमन्विता । अहिर्बुध्न्यदैवते तु कन्यका जायते हि या।।"

अथ रेवतीजातफलमाह

पौष्णेसुपुष्टा बहुमित्रपक्षा स्वभावशुद्धाव्रतचारिणी च । तेजोन्विताभूरिचतुष्पदाढ्याहतारिपक्षाप्रियदर्शनाच ।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डित-श्यामलालविरचिते स्त्रीजातके नक्षत्रजातफलवर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ।।९।।

अर्थ–जो नारी रेवतीनक्षत्र में पैदा हुई वह पुष्ट बहुत से मित्र स्त्रियों जिसकी स्वभाव ही से शुद्ध व्रत तप करनेवाली तेज करके सहित बहुत से चतुष्पदे सवारी वगैरह करके युक्त नाश करे हैं शत्रु दल जिसने प्यारा है दर्शन जिसका ऐसी होती है।।२७।।

अन्यच्च–"मातापित्रग्र्यश्वश्रूणां देवब्राह्मणसेविनी । अनुकूला हि कन्याथ जायते पौष्णदैवते ।।"

इति वंशवरेलिकस्थगौड़वंशांवतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्यौतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी हिन्दीटीकायां नक्षत्रफलवर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ।।९।।

अथ योगजातफलाध्यायो निरूप्यते
उक्तं च श्यामदैवज्ञेन

अथ विष्कुंजभजातफलमाह

विष्कुम्भयोगे वनिता सुजाता पुत्रादिसौख्या पतिवल्लभा च । स्वातन्त्र्यकार्ये गृहकर्मदक्षा उदारचेताः सततं विनीता ।।१।।

अर्थ–जो नारी विष्कुंभयोग में पैदा भई वह पुत्र मित्रादिकों के सौख्यसहित स्वामी को प्यारी सब कामों में स्वतंत्र घर के कामों में चतुर उदारचित्त निरंतर नम्रतासहित होती है।।१।।

अथ प्रीतियोगे जातफलमाह

या प्रीतियोगप्रभवा पुरंध्री सच्छास्त्रविज्ञा धनधान्ययुक्ता । रूपान्विता दानकरा प्रवीणा प्रसन्नगात्रा जनवल्लभा च ।।२।।

अर्थ–जो नारी प्रीतियोग में पैदा भई वह अच्छे शास्त्र की जाननेवाली धन और धान्यसहित रूप करके युक्त दान करने वाली चतुर हमेशा प्रसन्न देहवाली मनुष्यों की प्यारी होती है।।२।।

अथ आयुष्मद्योगजातफलमाह

आयुष्मति स्याच्चिरजीविनी वै जाताङ्गना कान्तिभराकरा सा । वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ता विनीतवेषा बहुधर्मशीला ।।३।।

अर्थ–जो नारी आयुष्मान्योग में पैदा भई वह बड़ी उमरवाली वहुत कांति करके युक्त वन, पर्वत, किला, नदी इत्यादिकों में आसक्त नम्रता लिये वेष जिसका वहुत धर्मवाली शीलवती होती है।।३।।

अथ सौभाग्ययोगजातफलमाह

सौभाग्ययोगे सुभगा सुकन्या प्रज्ञायुता सत्यपरा धनाढ्या । सुमंदहास्या प्रियवादिनी च सुगर्विता रूपबलेन नित्यम् ।।४।।

अर्थ–जो कन्या सौभाग्ययोग में पैदा भई वह श्रेष्ठभाग्य बुद्धि करके सहित सत्य में तत्पर धनवती अच्छे मंद है, हास्य जिसका प्यारी वाणी बोलनेवाली अपने रूप बल करके नित्य ही गर्वित होती है।।४।।

अथ शोभनयोगजातफलमाह

नारी भवेच्छोभनयोगमध्ये शोभान्विता ह्याशु सदुत्तरा सा । बुद्ध्यान्विता दंभविहीनगात्रा पुत्रान्विता सव्द्यवहारदक्षा ।।५।।

अर्थ–जो नारी शोभनयोग में पैदा भई वह शोभा करके सहित जल्दी जवाब देनेवाली बुद्धि करके सहित पाखंड करके रहित शरीर जिसका, पुत्रकरके युक्त अच्छे व्यवहार में चतुर होती है।।५।।

अथातिगंडयोगे जातफलमाह

जातातिगंडे प्रमदा मनोज्ञा विशालवक्त्रा समुदा सरोषा । कलिप्रिया क्रोधयुता कुरूपा विवेकहीना व्यसनाभिभूता ।।६।।

अर्थ–जो नारी अतिगंड योग में पैदा भई वह मन की जाननेवाली विशाल मुख जिसका अभिमानसहित क्रोधवाली लड़ाई जिसको प्यारी क्रोधसहित कुरूपवाली विवेक करके हीन व्यसनों में तत्पर होती है।।६।।

अथ सुकर्मयोगजातफलमाह

सुकर्मयोगे प्रमदा प्रसूता प्रज्ञाधिका सर्वकलाप्रवीणा ।

सत्साहसा दानरता कृतज्ञा परोपकारे निरता सदैव।।७।।

अर्थ–जो नारी सुकर्मयोग में पैदा हुई वह बुद्धिमान अधिक सब कलाओं में प्रवीण उत्तम साहसवाली दान में अहसान माननेवाली पराये उपकार करने में हमेशा तत्पर होती है।।७।।

अथ धृतियोगे जातफलमाह

धृत्याख्ययोगे वनिता विधिज्ञा प्रज्ञाधिका सत्यपरायणा च । नयान्विता सा नियमेन युक्ता प्रशांतगर्वा बहुपुत्रपौत्रा ।।८।।

अर्थ–धृतियोग में पैदा भई नारी सम्पूर्ण विधियों की जाननेवाली बुद्धिमती अधिक सत्य में तत्पर हमेशा रहती है। नम्रतासहित व्रतनियमों में युक्त शांत है अभिमान जिसका, बहुत पुत्र पौत्रोंवाली होती है।।८।।

अथ शूलयोगे जातफलमाह

शूले कुरूपा शुभबुद्धिहीना सत्कर्मविद्याविनयै-र्विहीना ।। शूलस्य रुक्तज्जठरे नितांतं दंभान्विता पानपरा कृतघ्ना ।।९।।

अर्थ–शूल योग में पैदा भई नारी शुभ बुद्धिहीन अच्छे कर्म और विद्या नम्रता करके हीन होती है, तिसके उदर में शूल का रोग निरन्तर अभिमान सहित मद्यपान में तत्पर करे, हुए अहसान को न माननेवाली होती है।।९।।

अथ गंडयोगे जातफलमाह

दुष्टा सुहृत्कार्यपराङ्मुखी सा क्रोधान्विता बंधुजनेन हीना । या गंडयोगे प्रमदा सुजाता प्रचण्डगण्डा पुरुषस्वभावा ।।१०।।

अर्थ–जो नारी गंडयोग में पैदा भई वह व्यभिचारिणी और अपने मित्रों के कार्य करने में पराङ्मुख क्रोधसहित भाईयों करके हीन बड़े भारी गंडस्थल जिसके पुरुषों के से स्वभाववाली होती है।।१०।।

अथ वृद्धियोगे जातफलमाह

जाता सुनारी किल वृद्धियोगे धनान्विता दंभविहीनगात्रा । सुसंग्रहे प्रीतिकरा सुदक्षा सुपूजिता पुण्यवती सुशीला ।।११।।

अर्थ–जो नारी निश्चय करके वृद्धियोग में पैदा भई वह धनकरके सहित पाखण्ड करके रहित रूपवाली अच्छे संग्रह करने में तत्पर प्रीति करनेवाली अति चतुर मनुष्यों करके पूजनीय पुण्यवाली उत्तम शीलवती होती है।।११।।

अथ ध्रुवयोगे जातफलमाह

ध्रुवे सुमान्या सुभगा सुपुत्रा क्षमान्विता सद्व्यवहारदक्षा ।। प्रसन्नवाक्या धनधान्ययुक्ता शास्त्रानुरक्ता जनवल्लभा च ।।१२।।

अर्थ–जो नारी ध्रुवयोग में पैदा भई वह सुन्दर भाग्यवाली पुत्रवती क्षमा करके सहित अच्छे व्यवहार में चतुर प्रसन्न वाक्य बोलनेवाली धन धान्य करके युक्त शास्त्रों में तत्पर मनुष्यों को प्यारी होती है।।१२।।

अथ व्याघातयोगजातफलमाह

व्याघातजाता खलु घातकर्त्री ह्यसत्यगा प्रीति-विहीनगात्रा ।। दयाविहीना कृपणा कृतघ्ना दंभान्विता युद्धपरा विरक्ता ।।१३।।

अर्थ–व्याघात योग में पैदा भई नारी निश्चय करके घात करनेवाली असत्य में तत्पर प्रीतिकरके हीन है शरीर जिसका, दया करके रहित कृपण अहसान न माननेवाली पाखण्डसहित संग्राम में तत्पर विरक्त होती है॥१३॥

अथ हर्षणयोगे जातफलमाह

जाताबला हर्षणनामयोगे प्रसिद्धकृत्या सुभगा कृतज्ञा । रक्तांबरा हेमविभूषणाढ्या सुस्निग्ध-गात्रा सुखकीर्तियुक्ता ॥१४॥

अर्थ–जो नारी हर्षणयोग में पैदा भई, वह अपने कृत्यों करके प्रसिद्ध सुन्दर भाग्यवाली अहसान माननेवाली लाल कपड़ेवाली सुवर्ण के भूषणों करके युक्त उत्तम चिकना शरीर सुखकीर्ति करके युक्त होती है॥१४॥

अथ वज्रयोगे जातफलमाह

या वज्रयोगे प्रमदाभिजाता सा वज्रयुक्ता शुभभूषणाढ्या ॥ प्रज्ञाधिका बंधुजनेन सक्ता सत्यान्विता दानरता सुदक्षा ॥१५॥

अर्थ–जो नारी वज्रयोग में पैदा भई वह हीराजटित उत्तम आभूषणोंकरके युक्त बुद्धिमती अधिक अपने बंधुजनों करके आसक्त सत्य करके सहित दान में तत्पर सुन्दरं चतुर होती है॥१५॥

अथ सिद्धियोगजातफलमाह

या सिद्धियोगे वनिता प्रसूता उदारचित्ता-सुभगा सुकृत्या ॥ सच्छास्त्रयुक्ता प्रणता द्विजानां नारी भवेद्रोगविवर्जिता च ॥१६॥

अर्थ–जो नारी सिद्धियोग में पैदा भई वह उदारचित्त सुन्दर

भाग्यवाली अच्छे कर्मों के करनेवाली अच्छे शास्त्रयुक्त ब्राह्मणों से नम्र रोग करके हीन शरीरवाली होती है॥१६॥

अथ व्यतीपातयोगे जातफलमाह

जाताङ्गना या व्यतिपातयोगे तदा कुरूपा कलहप्रिया च ॥ रोगान्विता पापरता प्रगल्भा जनैर्विहीना विकृतानुकारा ॥१७॥

अर्थ–जो नारी व्यतीपातयोग में पैदा भई वह कुरूपवाली लड़ाई जिसके प्रिय रोग करके सहित पापकर्म में तत्पर प्रगल्भ मनुष्यों करके हीन भयंकर आकारवाली होती है॥१७॥

अथ वरीयान्योगे जातफलमाह

वरीयसि स्यात्प्रमदा सुजाता नयान्विता प्रीतिकरा गुरूणाम् । सा सर्वदा दानरता सुदक्षा नारी भवेत्कीर्तियुता सुरूपा ॥१८॥

अर्थ–जो नारी वरीयान् योग में पैदा भई नम्रता करके युक्त बड़े जनों में प्रीति करनेवाली वह स्त्री हमेशा दान करने में तत्पर अतिचतुर कीर्तिकरके युक्त रूपवती होती है॥१८॥

अथ परिघयोगे जातफलमाह

जाता भवेत्स्त्री परिघाभिधाने असत्यरक्ता क्षमया विहीना । सदाल्पभाषी विजितारिपक्षा महाव्यया पानपरा सदैव ॥१९॥

अर्थ–जो नारी परिघनामयोग में पैदा भई वह असत्य में तत्पर क्षमा करके रहित हमेशा थोड़ा बोलनेवाली, जीते हैं शत्रुदल जिसने अधिक खर्च करनेवाली, मद्यपान करनेवाली हमेशा होती है॥१९॥

अथ शिवयोगफलमाह

सन्मंत्रशास्त्राभिरता नितांतं जितेंद्रिया चारुवचः सुशीला । शिवे सुयोगे प्रमदाभिजाता यस्याः शिवं स्याच्छिवसुप्रसादात् ॥२०॥

अर्थ–जो नारी शिवनामयोग में पैदा भई वह अच्छे मन्त्रशास्त्रों में तत्पर हमेशा इन्द्रियों की जीतनेवाली श्रेष्ठ वचन कहनेवाली उत्तम शील जिसका तिसका कल्याण नित्य शिव की कृपा से होता है॥२०॥

अथ सिद्धियोगे जातफलमाह

या सिद्धियोगे प्रमदाभिजाता सुखान्विता सत्यरता सुगौरा । प्रज्ञाधिका दानदयानुरक्ता सिद्धयंति कार्य्याणि कृतानि तस्याः ॥२१॥

अर्थ–जो नारी सिद्धियोग में पैदा भई वह सुख करके सहित सत्य में तत्पर गौरवर्ण बुद्धिमती विशेष दानदया में आसक्त तिसके करे हुए सम्पूर्ण काम सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥२१॥

अथ साध्ययोगे जातफलमाह

या साध्ययोगे वनिता सुरूपा नूनं विनीता धनधान्ययुक्ता । सन्मंत्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्स्त्रीजनवल्लभा च ॥२२॥

अर्थ–जो नारी साध्ययोग में पैदा भई वह स्त्री सुरूपवाली निश्चय करके नम्रता लिये स्वभाव जिसका धनधान्य करके युक्त अच्छ मंत्र विद्या की विधि सम्पूर्ण भले प्रकार साधन करनेवाली मनुष्यों की प्यारी होती है॥२२॥

अथ शुभयोगे जातफलमाह

शुभे सुयोगे प्रमदा प्रमत्ता विशालनेत्रा शुभवाग्विलासा । शुभोपदेशं प्रकरोति सर्वं शुभस्य कर्त्री शुभलक्षणा च ।।२३।।

अर्थ–जो नारी शुभयोग में पैदा भई वह मदवाली विशाल नेत्रोंवाली शुभवाणी को बोलनेवाली सबको शुभ उपदेश करे, सब शुभलक्षणों करके सहित होती है।।२३।।

अथ शुक्लयोगे जातफलमाह

शुक्लोद्भवा वै वनिता कृतज्ञा सन्मानशुक्लांबरधारिणी च । जीतेंद्रिया सत्यरता सुसाध्वी भवेद्विनीता विजितारिपक्षा ।।२४।।

अर्थ–शुक्ल योग में पैदा भई नारी अहसान माननेवाली सन्मानसहित सफेद वस्त्रों के धारण करनेवाली इन्द्रियों को जीतनेवाली सत्य में रत पतिव्रता नम्रता सहित जीते हैं शत्रुदल जिसने, ऐसी होती है।।२४।।

अथ ब्रह्मयोगे जातफलमाह

या ब्रह्मयोगे विधिवत्सविज्ञा सत्यान्विता दानरता सुहर्म्या । शास्त्रानुरक्ता प्रचुरप्रभावा सुपंडिता वादविवादशीला ।।२५।।

अर्थ–जो नारी ब्रह्मयोग में पैदा भई वह विधिपूर्वक कर्ममार्ग में चतुर सत्यसहित दान में रत अच्छे मकानवाली शास्त्रों में तत्पर बड़ा है प्रभाव जिसका सो पंडिता वादविवाद में शील जिसका ऐसी होती है।।२५।।

अथ ऐंद्रयोगे जातफलमाह

या चैन्द्रेयोगे प्रमदाभिजाता नरेंद्रपत्नी प्रथिता च लोके। श्लेष्माधिका दानरता सुदक्षा बंधुप्रिया सत्यसमन्विता च ॥२६॥

अर्थ–जो नारी ऐन्द्रयोग में पैदा भई वह राजा की पत्नी संसार में अग्रणी श्लेष्मा है अधिक जिसको दान करने में तत्पर श्रेष्ठ चतुर भाइयों को प्यारी सत्यसहित होती है।।२६।।

अथ वैधृतियोगे जातफलमाह

या वैधृतीयोगभवा पुरंध्री कठोरचित्ता कुटिल-स्वभावा। दंभान्विता दुष्टजनेनुरक्ता दयाभयाभ्यां रहिता सदैव ॥२७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते
स्त्रीजातके योगजातफलवर्णनो नाम
दशमोऽध्यायः ॥१०॥

अर्थ–जो नारी वैधृतियोग में पैदा भई वह कठोर चित्तवाली कुटिल है स्वभाव जिसका पाखण्ड करके सहित दुष्ट मनुष्यों में तत्पर दया और भय करके रहित हमेशा रहती है।।२७।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिपिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-
हिन्दीटीकायां योगजातफलवर्णनो नाम
दशमोऽध्याय. ॥१०॥

अथ करणजातफलाध्यायो निरूप्यते
उक्तं च श्यामदैवज्ञेन

अथ ववकरणजातफलमाह

ववाभिधाने वनिताभिजाता सुकांतिरूपा सुभगा सुशीला । यस्या गृहं सर्वसमृद्धियुक्तं स्वप्राप्तपुण्या हि भवेत्कृतज्ञा ।।१।।

अर्थ–ववनाम करण में पैदा भई नारी अच्छी कांतियुक्त रूपवाली श्रेष्ठ भाग्यवाली उत्तम शीलवती तिसके घर में सब तरह की ऋद्धियां होती हैं और अपने आप प्राप्त किया है पुण्य जिसने ऐसी और कृतज्ञा होती है।।१।।

अथ वालवकरण जातफलमाह

या वालवे स्याद्वनिताभिजाता प्रज्ञान्विता चारुविलासयुक्ता । बलाधिका धर्मपरा मनोज्ञा गुणान्विता युद्धपरा सुमध्या ।।२।।

अर्थ–जो वालवकरण में पैदा भई नारी बुद्धि करके सहित श्रेष्ठ विलाससहित अधिक बलवती धर्म में तत्पर मन की जाननेवाली गणोंसहित युद्ध में चतुर स्त्री होती है।।२।।

अथ कौलवकरणजातफलमाह

जाता यदा कौलवनामकरणे नूनं स्वतंत्रा बहुमित्रपुत्रा । दयान्विता सत्यरता प्रगल्भा सुकोमलांगी प्रियवादिनी च ।।३।।

अर्थ–जो कौलवकरण में नारी पैदा होय वह निश्चय करके स्वतंत्र

बहुत मित्र पुत्रोंवाली दया करके सहित सत्य में तत्पर प्रगल्भ कोमल शरीरवाली प्रियवाणी की बोलनेवाली होती है॥३॥

अथ तैतिलकरणजातफलमाह

या तैतिले स्याद्वनिता सुमध्या प्रज्ञायुता चारुवचाःकलाज्ञा । सुकांतियुक्ता गृहकर्मदक्षा विनीतवेषाभरणा सुशीला ॥४॥

अर्थ–जो नारी तैतिलकरण में पैदा भई वह बुद्धि करके सहित श्रेष्ठवाणी की बोलनेवाली सर्व कलाओं को जाननेवाली अच्छी कांति करके युक्त घर के कामों में चतुर नम्रता लिये स्वरूप जिसका अच्छे आभरणसहित उत्तम शीलवती होती है॥४॥

अथ गरकरणजातफलमाह

रामा गराख्ये करणेभिजाता शूरातिधीरा-तितरामुदारा । सच्छास्त्रयुक्ता विजितारिपक्षा परोपकारे निरता सुदेहा ॥५॥

अर्थ–जो नारी गरकरण में पैदा भई वह अत्यन्त धीर निरंतर उदार अच्छे शास्त्रों में युक्त जीते हैं शत्रुदल जिसने पराये उपकार करने में तत्पर उत्तम देहवाली होती है॥५॥

अथ वाणिकरणजातफलमाह

यस्याः प्रसूतिर्वणिजे प्रवीणा वाणिज्यकार्ये कुशला कलाढ्या । प्रज्ञायुता मानविभूषणाढ्या सुमंदहास्या धनधान्ययुक्ता ॥६॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में वणिजकरण होय वह प्रवीणा वाणिज्यकार्य में कुशल होती है। चतुर कलाओं करके युक्त बुद्धिसहित मान और भूषणों करके सहित मंदमंद हास्य जिसका धनधान्यसहित होती है॥६॥

अथ विष्टिकरणजातफलमाह

भद्रासु जाता वनिता कुरूपा कठोरवाक्या पुरुषानुकारा । प्रियाविहीना सततं कुचैला दुष्टा कुमित्रा व्यभिचारशीला ॥७॥

अर्थ–जो नारी विष्टिकरण में पैदा भई वह कुरूपा कठोर वाक्य बोलनेवाली पुरुषों के से आकारवाली प्यार करके हीन निरंतर मलीन दुष्टा खोटे मित्रोंवाली व्यभिचारिणी होती है॥७॥

अथ शकुनिकरणजातफलमाह

यदि शकुनिषु जाता शाकुनज्ञानशीला अति सुललितदेहा मंत्रविद्याप्रवीणा । बहुयुवतिसु संख्या चारुसौभाग्ययुक्ता गुणगणपरियुक्ता सर्वदा सावधाना ॥८॥

अर्थ–जो नारी शकुनिकरण में पैदा भई वह शकुनज्ञान में चतुर अत्यन्त शोभायमान देहवाली मंत्रविद्या में प्रवीण बहुत स्त्रियों के साथ मित्रता रखनेवाली उत्तमभाग्यसहित गुणों के समूह करके युक्त हमेशा सावधान होती है॥८॥

अथ चतुष्पदकरणजातफलमाह

चतुष्पदे स्याद्वनिता विनीता चतुष्पदात्सत्त्व युता सुशीला । असंग्रहा क्षीणशरीरबन्धा स्वाचारहीना विकृतानुकारा ॥९॥

अर्थ–जो नारी चतुष्पद करण में पैदा भई वह विनीत चतुष्पदों के बल करके युक्त उत्तम शीलवती संग्रह करनेवाली क्षीणशरीर आचारकरके हीन बुरे आकारवाली होती है॥९॥

अथ नागकरणजातफलमाह

नागेषु जाता प्रमदा प्रमत्ता दंभान्विता दुष्टवचाः कुशीला । कलिप्रिया द्रोहरता कठोरा असत्यरक्ता कुलघातिनी सा ॥१०॥

अर्थ–जो नारी नागकरण में पैदा भई वह मदवाली पाखंड सहित दुष्टवाणी बोलनेवाली खोटे शील की लड़ाई प्यारी जिसको वैरम तत्पर कठोर चित्त झूठमें आसक्त कुल की घात करनेवाली होती है॥१०॥

अथ किंस्तुघ्नकरणजातफलमाह

किंस्तुघ्नजाता वनिता प्रगल्भा धर्म्मेप्यधर्मे समता मतिश्च । मैत्र्यामसैत्र्यां स्थिरता न किंचिदंगेप्यनङ्गे विबला सदैव ॥११॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके
करणजातफलवर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

अर्थ–जो नारी किंस्तुघ्न करण में पैदा भई वह प्रगल्भ वाणी बोलनेवाली धर्म और अधर्म में एक समान है मति जिसकी मित्रता और शत्रुता में एक समान रहे, जो अंग और कामकला में सदा निर्बल रहती है॥११॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी
हिन्दीटीकायां करणजातकफलवर्णनो
नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

अथ लग्नजातफलाध्यायो निरूप्यते

वृद्धयवनः

अथ मेषलग्नजातफलमाह

मेषोदये सत्यपरा नृशंसा नारी भवेतक्रोधपरा सदैव । श्लेष्माधिका निष्ठुरवाक्ययुक्ता सदा विरक्ता निजबन्धुवर्गे ।।१।।

अर्थ–जो स्त्री मेषलग्न में उत्पन्न भई होय वह नारी सत्य में तत्पर निर्भय हमेशा क्रोधयुक्त श्लेष्मा प्रकृतियुक्त निष्ठुरवाक्य बोलनेवाली अपने बंधुवर्गों से सर्वकाल विरक्त रहती है।।१।।

अथ वृषलग्नजातफलम्

वृषोदये सत्यरता मनोज्ञा विनीत चेष्टा पतिवल्लभा च । नारी भवेत्सर्वकलासु दक्षा स्वर्गानुरक्ता द्विजदेवभक्ता ।।२।।

अर्थ–जो स्त्री वृषलग्न में पैदा भई वह नारी सत्य में तत्पर मन की जाननेवाली नम्रता लिये स्वरूप जिसका अपने पति को प्यारी सम्पूर्ण कलाओं में चतुर अपने बंधुवर्गों में तत्पर ब्राह्मण और देवताओं की भक्ता होती है।।२।।

अथ मिथुनलग्नजातफलमाह

तृतीयलग्नेऽतिकठोरवाक्यास्त्रीकामहीनागुणवर्जिताच । सदानृशंसाकफवातयुक्तामहाव्ययाक्रूरविचेष्टिताच।।३।।

अर्थ–जो स्त्री मिथुनलग्न में पैदा भई वह नारी कठोर वाक्य बोलनेवाली और काम से रहित गुणों करके हीन हमेशा निर्भय कफवातसहित बहुत खर्च करनेवाली विकराल चेष्टा की होती है।।३।।

अथ कर्कलग्नजातफलम्

लग्ने कुलीरे च भवेत्प्रसूता नारी प्रभूता विनयैःसमेता।
बन्धुप्रिया साधुसुशीलदक्षाप्रजान्वितासर्वसुखैःसमेता।।४।।

अर्थ–जो नारी कर्कलग्न में पैदा भई वह स्त्री बहुत नम्रता करके सहित भाइयों को प्यारी, अच्छे शील करके युक्त, चतुर संतानसहित सर्वसुखों करके युक्त होती है।।४।।

अथ सिंहलग्नजातफलम्

सिंहे विलग्ने वनितातितीक्ष्णा भवेत्कफाढ्या कलहप्रिया वा। नानागदैर्युक्तशरीरगात्रा परोपकारे निरता सदैव।।५।।

अर्थ–जो कन्या सिंहलग्न में पैदा भई वह नारी अत्यंत तीक्ष्ण स्वभाववाली कफ की प्रकृतिवाली लड़ाई जिसको प्यारी, अनेक प्रकार के रोगों करके सहित देह जिसकी पराये उपकार में तत्पर हमेशा होती है।।५।।

अथ कन्यालग्नजातफलम्

कन्योदये वा वनिताभिजाता सौभाग्यसौख्यैः सहिता हिता च। भवेत्स्ववर्गे बहुधर्मरक्ता जितेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा।।६।।

अर्थ–जो नारी कन्यालग्न में पैदा भई वह स्त्री सौभाग्य सौख्य करके सहित हित करनेवाली और अपने वर्ग में बहुत धर्म में तत्पर इंद्रियों के जीतनेवाली सम्पूर्ण कलाओं में चतुर होती है।।६।।

अथ तुलालग्नजातफलम्

लग्ने तुलाख्ये चिरकालकृत्या भवेत्सुमंदा प्रणयेन हीना। सुगर्विता कान्तिविर्जिता च

तृष्णाधिका नीतिविहीनगात्रा ।।७।।

अर्थ–जो नारी तुला लग्न में पैदा भई वह नारी बहुत काल में काम करनेवाली मंदबुद्धि नम्रतारहित गर्व करके सहित शोभा रहित अधिक तृष्णा जिसको नीति करके हीन होती है।।७।।

अथ वृश्चिकलग्नजातफलम्

नारी भवेद्वृश्चिकलग्नजाता सुरूपगात्रा नयनाभिरामा ।
सुपुण्यशीला च पतिव्रताच गुणाधिका सत्यपरा सदैव ।

अर्थ–जो नारी वृश्चिक लग्न में पैदा भई वह कन्या रूप में श्रेष्ठ शरीरवाली आनंद देनेवाले हैं नेत्र जिसके श्रेष्ठ पुण्य में शील जिसका, पतिव्रता गुणों में अधिक सत्य में हमेशा तत्पर रहती है।।८।।

अथ धनुर्लग्नजातफलम्

चापोदये या वनिताभिजाता सा बुद्धिशूरा पुरुषानुकारा । सामैकसाध्या विधिना कठोरा निःस्नेहयुक्ता प्रणयेन हीना ।।९।।

अर्थ–जो कन्या धन लग्न मे पैदा भई वह नारी बुद्धिमानों में शूर अतिबुद्धिवाली पुरुषों के से आकारवाली सो एक साध्य विधिकरके युक्त कठोर विना स्नेह करके नम्रतारहित होती है।।९।।

अथ मकरलग्नजातफलम्

मृगोदये स्त्री सुभगा सुसत्या तीर्थानुरक्ता हतशत्रुपक्षा । प्रधानकृत्या प्रथिता च लोके गुणान्विता पुत्रवती सदैव ।।१०।।

अर्थ–जो मकर लग्न में पैदा भई नारी सो श्रेष्ठ भाग्योंवाली सत्य में तत्पर तीर्थ में आसक्त नाश करे हैं शत्रुदल जिसने सब कामों में प्रधान

संसार में अग्रणी गुणों करके सहित पुत्र करके सहित होती है।।१०।।

अथ कुम्भलग्नजातफलम्

कुम्भेच लग्ने वनिता सुजाता स्त्री जन्मदक्षा क्षतजार्दिताच । नित्य गुरूणां सुविरुद्धचेष्टा व्ययाधिका पुण्यपरा कृतघ्ना ।।११।।

अर्थ–जो नारी कुम्भलग्न में पैदा भई वह स्त्री जन्मते ही चतुर रोग वा घाव रक्त करके दुःखी हमेशा बड़े पुरुषों से विरुद्ध है चेष्टा जिसकी ज्यादे खर्च करनेवाली पुण्यवाली अहसान न माननेवाली होती है।।११।।

अथ मीनलग्नजातफलम्

मीनोदयो स्त्री बहुपुत्रपौत्रा पतिप्रिया बांधव-लोकमान्या। सुनेत्रकेशा सुरविप्रभक्ता नया-न्विता प्रीतिपरा गुरूणाम् ।।१२।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्र-सादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलाल-विरचिते स्त्रीजातके लग्नजातफलवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

अर्थ–जो नारी मीन लग्न में पैदा भई वह स्त्री बहुत पुत्र पौत्रादिकों करके सहित पति को प्यारी भाइयों को और मनुष्यों को मान्य अच्छे नेत्र और बाल सुन्दर जिसके देव ब्राह्मणों की भक्ता नम्रतासहित गुरुओं की प्रीति में तत्पर होती है।।१२।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिक पं० श्यामलालकृताया श्यामसुन्दरीहिन्दीटीकायां लग्नजातफल-वर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

अथ कन्याजन्मनि चंद्रराशिजातफलाध्यायो निरूप्यते-वृद्धयवनः

अथ मेषराशिजातफलम्

चंद्रे क्रियस्थे वनिता प्रगल्भा जाता भवेत्कृत्यपरा प्रधाना । पुत्रान्विता प्रीतिरता सुसत्या सदा गुरूणां प्रणयानुरक्ता ।।१।।

अर्थ—जो स्त्री मेष राशि में पैदा होय वह नारी प्रगल्भा होती है सत्य में रत प्रधान पुत्रों करके सहित प्रीति में तत्पर पतिव्रता हमेशा बड़े जनों से नम्रतासहित होती है।।१।।

अथ वृषराशिजातफलम्

वृषाश्रिते शीतकरे सुशीला विद्याविवेकागमशास्त्ररक्ता । तीर्थप्रसक्ता बहुपुत्रपौत्रा पतिप्रिया कामकलाप्रवीणा ।।२।।

अर्थ—जिस नारी के जन्मकाल में वृषराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी विद्या में चतुर वेदवेदांतशास्त्र में रत तीर्थ में आसक्त बहुत से पुत्र पौत्रोंसहित पति को प्यारी कामकला में चतुर होती है।।२।।

अथ मिथुनराशिजातफलम्

नृपस्थिते शीतकरे विनीता भवेत्सुगात्रा प्रियदर्शना च ।। नानार्थमानैः सहिता विदग्धा परोपकारे निरतोत्पलाक्षी ।।३।।

अर्थ—जिस स्त्री के जन्मकाल में मिथुनराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी अच्छे शरीरवाली प्यारा है दर्शन जिसका अनेक प्रकार के धन

और मानसहित चतुर पराये उपकार में तत्पर तथा कमल से नेत्रवाली होती है।।३।।

अथ कर्कराशिजातफलमाह

कर्कस्थिते शीतकरे तु जाता नारी भवेत्पूज्यतमा स्ववर्गात् । सुमानिनी बांधवलोकमान्या हतारिपक्षा द्विजदेवभक्ता ।।४।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्म काल में कर्कराशि में स्थित चंद्रमा होय वह नारी अपने कुटुम्बियों करके ज्येष्ठ श्रेष्ठ मानवती अपने भाइयों करके मान्य, नाश करे हैं शत्रुदल जिसने ब्राह्मण देवताओं की भक्ता होती है।।४।।

अथ सिंहराशिजातफलम्

सिंहस्थिते चंद्रमसि प्रधाना नारी भवेच्छौर्यसमन्विता च । प्रियामिषा भूषणवस्त्रभाजा क्षमान्विता शौचपरा सदैव ।।५।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में सिंहराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी शूरतासहित प्यारा है मांस जिसको आभूषण और वस्त्रों की भोगनेवाली क्षमासहित पवित्रता में तत्पर होती है।।५।।

अथ कन्याराशिजातफलमाह

कन्याश्रिते शीतकरे तु जाता नारी भवेद्वित्तचतुष्पदाढ्या । प्रीतिप्रधाना जितशत्रुपक्षा उदारचेष्टा सुभगा सुरूपा ।।६।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में कन्याराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी धन और घोड़े गौओं करके युक्त प्रीति में प्रधान जीते हैं शत्रुदल जिसने उदार स्वरूपवाली श्रेष्ठ भाग्यवाली अच्छे रूपवाली होती है।।६।।

अथ तुलाराशिजातफलम्

तुलाधरस्थे शशिनी व्रताढ्या जाता भवेत्स्त्री हितबंधुवर्गा । पतिव्रता पुत्रवती मनोज्ञा विवर्जिता दंभमनोभवाभ्याम् ॥७॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चंद्रमा स्थित होय वह नारी अपने बंधुवर्ग ते हितकरनेवाली पतिव्रता पुत्रों करके सहित मन की जाननेवाली और पाखंड तथा कामकला करके रहित होती है॥७॥

अथ वृश्चिकजातफलमाह

चन्द्रेलिसंस्थे तु सुगुप्तचिंता स्थिरस्वभावा सुविदग्धचेष्टा । हिता गुरूणां नियमैः समेता प्रभूतकोशा विगताभिमाना ॥८॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में वृश्चिकराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी स्थिर स्वभाववाली श्रेष्ठ चतुर चेष्टावाली बडे जनों में हित करनेवाली व्रतनियम सहित बहुत धनवाली दूर हुआ है अभिमान जिसका॥८॥

अथ धनूराशिजातफलम्

धनुर्धरस्थे शशिनि व्रताढ्या नारी भवेद्दान-परा सुरागा । गीतिप्रिया प्राणहितानुकूला प्रियानना स्त्रीजननी हतारिः ॥९॥

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में चंद्रमा धन राशि में स्थित होय वह नारी व्रतों करके युक्त दान करने में तत्पर लाल ओंठवाली गीतादिकों का प्यार करे प्राणीमात्र के हित के अनुसार करनेवाली प्यारा है मुख जिसका नाश किये हैं शत्रु जिसने वह कन्या की संतान

पैदा करती है।।९।।

अथ मकरराशिजातफलम्

चन्द्रे मृगस्थे विकरालदंष्ट्रा नारी भवेद्धैर्यपरा मनोज्ञा । विद्याधिका सत्ययुता सुरूपा दयान्विता नीतिपरा विनीता ।।१०।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चन्द्रमा मकरराशि में स्थित होय वह नारी विकराल दाढ़वाली धीरजवाली मन की जाननेवाली अधिक विद्यासहित सत्य से युत श्रेष्ठरूपवाली दयासहित नीतिमें तत्पर नम्रतासहित होती है।।१०।।

अथ कुम्भराशिजातफलम्

घटाश्रिते शीतकरे तु जाता नारी भवेच्चंद्रसमान-वक्त्रा । सुदानशीला सुतवित्तयुक्ता शुभानुकारा प्रथिताभिमाना ।।११।।

अर्थ–जो नारी कुम्भ राशि स्थित चंद्रमामें पैदा होय वह नारी चंद्र-समान मुखवाली श्रेष्ठ दान करने में स्वभाव जिसका पुत्र और धनसहित शुभकर्म करनेवाली यथोचित अभिमानी होती है।

अथ मीनराशिजातफलमाह

मीनस्थिते वै हिमगौ सुताढ्या नारी भवेद्ध-र्मपरा सुशीला जितेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा लज्जान्विता मानयुता मनोज्ञा ।।१२।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्र-
सादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालवि-
रचिते बालवर्णीजातके चंद्रराशिफलवर्णनो
नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में मीनराशि में चंद्रमा स्थित होय वह नारी पुत्रवाली धर्म में तत्पर सुशीला इंद्रियों की जीतनेवाली सम्पूर्ण कलाओं में चतुर लज्जासहित मानयुक्त मन की जाननेवाली होती है।।१२।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादा-
त्मजराज्यज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां
श्यामसुन्दरीहिन्दीटीकायां चंद्रराशिगुणवर्णनो
नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

अथ सूर्यादीनां द्वादशभावफलाध्यायः

अथ तनुभावस्थितसूर्यफलम्

**मूर्तौ रविस्तीव्रमुखां प्रसूते नारीं तथा तीव्ररु-
जासमेताम् । दुष्टस्वभावां सुकृशां कृतघ्नां
परान्नरक्तां प्रभया विहीनाम् ।।१।।**

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लग्न में सूर्य स्थित होय वह स्त्री तीव्र मुखवाली तीव्ररोगों करके सहित दुष्ट स्वभाववाली दुर्बल शरीर अहसान न माननेवाली पराये अन्न में रत भय करके हीन होती है।।१।।

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम्

**धनस्थितोऽर्को धनधान्यहीनां कठोरवाक्यां
गतभक्तिभावाम् । युद्धप्रियां द्वेषरतां खलां च
नारीं प्रसूते गतसौहृदां च ।।२।।**

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में धनभाव में सूर्य स्थित होय वह

नारी धनधान्य करके हीन कठोर वाक्य बोलनेवाली दूर हुआ है भक्तिभाव जिसका लड़ाई जिसको प्यारी बैर में तत्पर खोटी दूर करा है मित्रभाव जिसने ऐसी होती है।।३।।

अथ तृतीयभावस्थितफलम्

तृतीयगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते सौख्येन हीनां वनितां सदैव । नीरोगदेहां च सुरूपवक्त्रां विशालवक्षोजनतां नितान्तम् ।।३।।

अर्थ–जिस औरत के जन्मकाल में तीसरे घर में सूर्य स्थित होय वह नारी सौख्य करके हीन हमेशा रोगरहित शरीर अच्छे स्वरूप और मुखवाली ऊंचा है वक्षस्थल जिसका निरंतर वह यशवाली होती है।।३।।

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्य्यफलम्

चतुर्थगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते सौख्येन हीनां वनितां सदैव । सरोगदेहां विकरालदंष्ट्रां प्रभाविहीनां जनताविरुद्धाम् ।।४।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चतुर्थस्थान में सूर्य स्थित होय वह नारी सुख करके हीन हमेशा रोगहित शरीरवाली विकराल है दाढैं जिसकी शोभारहित मनुष्यों से विरुद्ध रहनेवाली होती है।।४।।

अथ पंचमभावस्थितफलम्

सुताश्रितः स्वल्पसुतां प्रसूते नारी प्रधानां व्रतसंयुतां च । स्थूलास्यदंतां पितृमातृभक्तां प्रियवदां ब्राह्मणसंमतां च ।।५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में पंचमभाव में सूर्य स्थित होय वह नारी थोड़े पुत्रवाली स्त्रियों में प्रधान व्रत नियम सहित स्थूल मुख और

दाँतोंवाली पिता माता की भक्ता प्यारी वाणी बोलनेवाली ब्राह्मणों की भक्ता होती है।।५।।

अथ षष्ठभावस्थितसूर्यफलम्

षष्ठे दिनेशः कुरुते प्रगल्भां हतारिपक्षां वनिता विदग्धाम् । प्रशांतचर्य्यां प्रियधर्मकृत्यां धर्मानुरक्तां सुभगां सुरूपाम् ।।६।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में छठे भाव में सूर्य स्थित होय वह नारी प्रगल्भा नाश करे हैं शत्रुदल जिसने स्त्रियों में चतुर शांत है स्वभाव जिसका प्रिय है धर्मकृत्य जिसको धर्म में तत्पर श्रेष्ठ भाग्यवाली रूपवती होती है।।६।।

अथ सप्तमभावस्थितसूर्यफलम्

सूर्य्येस्तसंस्थे पतिभावमुक्ता नारी भवेत्सर्वसुखैर्विमुक्ता ।। सदैव रौद्रा प्रणयेन हीना कफाश्रया किल्बिषिणी कुरूपा ।।७।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में सूर्य सप्तमभाव में स्थित होय वह नारी पतिभाव से रहित हमेशा सम्पूर्ण सुखों से हीन सर्वकाल क्रोधलिये स्वभाव जिसका नम्रतारहित कफ प्रकृति पापिनी खोटेरूपवाली होती है।

अथाष्टमभावस्थितसूर्यफलम्

सूर्योष्टमस्थानगतः प्रसूते दारिद्र्यदुःखान्वितबंधुगोत्राम् । नारीं कुधर्मान्वितसर्वकृत्यां विषादयुक्तां क्षतजार्दितांगीम् ।।८।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टम स्थान में सूर्य स्थित होय वह नारी दारिद्र्य और दुःख सहित अपने गोत्री भाइयों से युक्त पाप में

तत्पर खोटे कर्म करनेवाली विषादसहित घाव करके सहित शरीरवाली होती है॥८॥

अथ नवमभावस्थितसूर्यफलम्

धर्मस्थितो वासरपः प्रसूते नारीं कुधर्म्मां प्रिय-साहसां च । भाग्यैर्विहीनां बहुशत्रुपक्षां प्रभू-तरोगां विभवैर्विहीनाम्॥९॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में नवमभाव में स्थित सूर्य होय वह नारी कुछ धर्मप्रिय साहसी होती है और भाग्यकरके हीन बहुत शत्रुओं सहित बहुत रोग करके युक्त वैभवहीन होती है॥९॥

अथ दशमभावस्थितसूर्यफलम्

कर्माश्रितो वासरपः प्रसूते कुकर्मरक्तां वनितां सदैव । प्रभावहीनां शिथिलां स्वकृत्ये स्व-भावकृच्छ्रोभ्यधिकां नितान्तम् ॥१०॥

अर्थ–जिस औरत के दशम स्थान में सूर्य स्थित होय तो वह नारी हमेशा खोटे कर्म्मों में तत्पर कांतिहीन अपने कामों में शिथिल स्वाभाविक दुष्ट अधिक होती है॥१०॥

अथ लाभभावस्थितसूर्य्यफलम्

लाभाश्रितः संकुरुते दिनेशो नारीं सलाभां बहुपुत्रपौत्राम् । जितेन्द्रियां सर्वकलासु दक्षां क्षमान्वितां बांधवपूजितां च ॥११॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में लाभस्थान में सूर्य स्थित होय वह नारी लाभसहित बहुत पुत्रपौत्रवती होती है इंद्रियो को जीतनेवाली सर्वकलाओं में चतुर क्षमा करके सहित बांधवों करके पूजनीय होती है॥११॥

अथ द्वादशभावस्थितसूर्यफलम्

असद्व्यया द्वादशगे दिनेशे नारी प्रसूता विनयेन हीना।
बहुव्ययापानरतानृशंसासर्वाशयाशौचविवर्जिताङ्गी ॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बारहवें स्थान में सूर्य स्थित होय वह स्त्री खोटे कर्म में धन खर्च करनेवाली नम्रतारहित बहुत खर्च करनेवाली मद्यपान में तत्पर निर्भय भक्ष्याभक्ष्य खानेवाली पवित्रतारहित शरीरवाली होती है॥१२॥

अथ लग्नस्थितचंद्रफलम्

चन्द्रोविलग्नेयदिशुक्लपक्षेनारींप्रसूतेतिसुरूपगात्राम् ।
कृष्णेकृशांदीनतरांसरोगांविवादशीलांसततंकुचैलाम् ॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्लपक्ष का चन्द्रमा लग्न में स्थित होय वह नारी अत्यंत रूपयुक्त शरीरवाली होती है और जो कृष्णपक्ष का चन्द्रमा लग्न में स्थित होय तो वह नारी दीन रोगसहित झगड़ा करने का स्वभाव जिसका निरंतर मलिन होती है।

अथ द्वितीयभावस्थितचन्द्रफलम्

धनाश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतवित्तां प्रणय-प्रधानाम् । धर्म्मानुकूलां पतिकृत्यदक्षां नया-धिकां ब्राह्मणदेवभक्ताम् ॥१४॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में धन भाव में चन्द्रमा बैठा होय वह स्त्री बहुत धनवाली नम्रता है प्रधान जिसके धर्म के अनुसार स्वामी की सेवकाई में चतुर नम्रता अधिक देवताओं और ब्राह्मणों की भक्ता होती है॥१४॥

अथ तृतीयभावस्थितचंद्रफलम्

चन्द्रस्तृतीये कफवातसारां नारीं प्रसूतेतिक-ठोरवाक्याम् । क्रुत्संस्थितां नीतिविवर्जितां च स्वभावदुष्टां कृपणां कृतघ्नाम् ।।१५।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में चंद्रमा तीसरे घर में बैठा होय वह स्त्री कफवात अतीसार के रोग करे पीडित कठोर वाक्य बोलनेवाली क्रोध में स्थित नीति करके हीन स्वाभाविक दुष्ट कृपण और कृतघ्न होती है।।१५।।

अथ चतुर्थभावस्थितचंद्रफलम्

चंद्रः सुखस्थो बहुसौख्ययुक्तां नारीं प्रसूतेऽद्भुतभूषणां च । स्थिरस्वभावां श्रुतधर्मकृत्यां भोगाधिकां देवगुरुप्रसक्ताम् ।।१६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चंद्रमा सुखभाव में स्थित होय वह स्त्री बहुत सौख्यसहित अद्भुत आभूषण धारण करनेवाली स्थिरस्वभाव वेद के धर्मकरनेवाली अधिक भोग करनेवाली देवता और ब्राह्मणों में आसक्त होती है।।१६।।

अथ पंचमस्थितचंद्रफलम्

सुताश्रितः शीतकरः सुपुत्रां करोति नारीं गुण-गौरवाढ्याम् । प्रभूतभृत्यां सुतसौख्ययुक्तां धनान्वितां सद्व्यवहारशीलाम् ।।१७।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में पंचम घर में चंद्रमा स्थित होय वह नारी अच्छे पुत्रों सहित गुण गौरवता करके सहित बहुत से नौकरोंवाली पुत्रसौख्यसहित धन करके सहित अच्छे व्यवहार में है शील जिसका ।। १७।।

अथ षष्ठस्थितचन्द्रफलम्

चंद्रोरिसंस्थः कुरुतेऽल्पवित्तां प्रभूतवैरां विन-
येन हीनाम् । चलस्वभावां क्षतसर्वगात्रां पति-
प्रयुक्तामनिशं सुरूपाम् ।।१८।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चंद्रमा छठे स्थान में स्थित होय वह स्त्री थोड़े धनवाली बहुत दुश्मनाई करनेवाली नम्रतारहित चलायमान स्वभाव सब शरीर में घाव स्वरूपयुक्त पतिकरके सहित होती है।।१८।।

अथ सप्तमस्थितचन्द्रफलम्

चंद्रोस्तसंस्थः कुरुते विदग्धां पतिप्रियां धर्म-
विवेकयुक्ताम् । सुचारुवाचं विभवैः समेतां
तेजोन्वितां पुण्यपरां सुसत्याम् ।।१९।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चंद्रमा सप्तमस्थान में स्थित होय वह नारी चतुर पति को प्यारी धर्म और विवेक करके युक्त श्रेष्ठ उत्तमवाणी बोलनेवाली वैभवसहित तेज करके सहित पुण्य में तत्पर पतिव्रता होती है।।१९।।

अथाष्टमस्थितचंद्रफलम्

चंद्रोष्टमस्तः कुरुते नृशंसां नारीं कुनेत्रां कुकु-
चां कुयोनिम् । विहीनवेषाभरणां सरोगां नि-
तांतमत्यद्भुतगर्हणां च ।।२०।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टमस्थान में चंद्रमा स्थित होय वह स्त्री निर्भय बुरे नेत्रोंवाली बुरे हैं कुच और योनि जिसकी स्वरूपरहित आभरणहीन रोगसहित निरंतर अत्यंत अद्भुत निंदित कर्म करनेवाली होती है।।२०।।

अथ नवमभावस्थितचंद्रफलम्

धर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतधर्मां वनितां विदग्धाम् । भाग्याधिकां कल्पतमां मनोज्ञां सुभृत्यपुत्रां च सुभूरिसौख्याम् ॥२१॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में नवमभाव में चंद्रमा स्थित होय वह नारी बहुत धर्म करनेवाली स्त्रियों में चतुर भाग्यवाली प्रशंसालायक रूप जिसका मन की जाननेवाली श्रेष्ठ नोकर और पुत्रों करके बहुत सौख्य पाती है॥२१॥

अथदशमभावस्थितचंद्रफलम्

कर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतहेमद्रविणां प्रसिद्धाम् । नारीं निरीहां कुलसर्वमुख्यां त्यागान्वितां पुण्यपरां सुसत्याम् ॥२२॥

अर्थ–जिस नारी के दशमभाव में चंद्रमा स्थित होय वह नारी बहुत सुवर्ण और धनवानों में प्रसिद्ध कुछ इच्छा न करे अपने कुल में सबमें मुख्य त्यागकरके सहित पुण्य में तत्पर पतिव्रता होती है॥२२॥

अथ लाभस्थितचंद्रफलम्

लाभश्रितः शीतकरः सलाभां भव्यां विधिज्ञां कुरुते सुदात्रीम् । नारीं प्रसन्नां प्रणयेन युक्तां दानान्वितां रोगविवर्जिताङ्गीम् ॥२३॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में ग्यारहवें भाव में चंद्रमा स्थित होय वह स्त्री लाभसहित प्रकाशवती विधियों की जाननेवाली दाता प्रसन्न नम्रतायुक्त दानकरनेवाली रोगकरके रहित शरीरवाली होती है॥२३॥

अथ व्ययभावस्थितचंद्रफलम्

करोति चंद्रो व्ययगो व्ययाढ्यां गतप्रभावां वनितां सुतीव्राम् । दीनां नतां नीतिविवर्जितां च क्षमाविहीनां सरुजां सदैव ।।२४।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चंद्रमा बारहवें स्थान में स्थित होय वह स्त्री खर्च करनेवाली दूर हुआ है प्रभाव जिसका तीव्रस्वभाववाली दीन नीतिकरके रहित क्षमाविहीन हमेशा रोगरहित होती है।।२४।।

अथ लग्नस्थितभौमफलम्

लग्नाश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं महारक्तसुदुः-खिताङ्गीम् । गतप्रभावा पतिनां निरस्तां सुदु-र्भगां गर्वसमन्वितां च ।।२५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लग्नवर्ती मंगल होय तो वह नारी बहुत खून के रोग करके दुःखित शरीरवाली दूर हुआ है प्रभाव जिसका पति करके त्यागी भई दुष्ट भाग्यवती अभिमानसहित होती है।।२५।।

अथ धनभावस्थितभौमफलम्

धनाश्रितो भूतनयो विशालधनेन हीनां कुरुते कुकांताम् । पराधिकां कामपरां सरोगां क्लेशा-धिकां केशविवर्जितां च ।।२६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में धनभाव में मंगल स्थित होय वह स्त्री विशाल धन करके हीन खोटी होती है और सौत भावसहित विषयासक्त रोगवती अधिक क्लेशों करके हीन होती है।।२६।।

अथ तृतीयभावस्थितभौमफलम्

तृतीयसंस्थः कुरुते कुपुत्रां नारीं नितांतं सुभगां सुशीलाम् । बंधुप्रियां साधुरतां प्रशस्तां विहीनरोगां प्रथितप्रभावाम् ॥२७॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे घर में मंगल स्थित होय वह स्त्री निरंतर श्रेष्ठ भाग्यवती भाइयों को प्यारी साधुओं में तत्पर शोभायमान रोगरहित यथोचित प्रभावशाली होती है॥२७॥

अथ चतुर्थस्थितभौमफलम्

चतुर्थगो भूतनयः प्रसूते नारीं हताशां हृतकर्मकृत्याम् । सौख्येन हीनामधनां विशीलां जनैर्निरस्तां सततं सरोषाम् ॥२८॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चौथे स्थान में मंगल स्थित होय वह नारी नाश हुई है आशा जिसकी निंदितकर्म करनेवाली सौख्य करके हीन खोटे स्वभाववाली मनुष्यों करके त्यागी भई निरंतर क्रोधमूर्ति रहती है॥२८॥

अथ पंचमस्थितभौमफलम्

सुताश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं कुपुत्रां कृपया विहीनाम् । कुसंमतिं पापविधानरक्तां श्रुतेन हीनां हतबंधुवर्गाम् ॥२९॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पंचभवन में मंगल स्थित होय वह नारी दुष्टपुत्रोंवाली कृपाकरके रहित खोटी सलाह देनेवाली पापकर्म में तत्पर वेदकर्म से हीना नाश करे है बंधुवर्ग जिसने वा आम बंधु वर्गों से हत होती है॥२९॥

अथ षष्ठस्थितभौमफलम्

रिपुस्थितो भूतनयः प्रसूते नारीं सनाथां हत-शत्रुपक्षाम् । प्रभूतकेशां सुजनानुरक्तां विद्याधिकां रोगविवर्जितां च ॥३०॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में छठे घर में मंगल स्थित होय वह नारी पति करके सहित नाश करे हैं शत्रुदल जिसने बहुत केशोंवाली अच्छे जनों में तत्पर अधिक विद्यावाली रोग करके रहित शरीरवाली होती है॥३०॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम्

अस्ते स्थितो वै धरणीसुतस्तु बाल्ये प्रसूते विधवां च नारीम् । दुष्टस्वभावां विभवेन हीनां सुकुत्सिगाङ्गीं गुणवर्जितां च ॥३१॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तमभाव में मंगल स्थित होय वह नारी विधवा दुष्ट स्वभाववाली वैभव करके हीन बुरे शरीरवाली गुणों करके रहित होती है॥३१॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम्

मृतिस्थितो भूमिसुतः प्रसूते प्रभूतरोगां सुकृशां विनाथाम् । दरिद्रदुःखां कृतसोकभाजां हिंसाधिकां कांतिविवर्जितांच ॥३२॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में अष्टमभाव में मंगल स्थित होय वह नारी बहुत रोगसहित दुर्बल शरीरवाली पतिरहित दरिद्र और दुःखों की भागी शोकसहित हिंसा करनेवाली शोभाहीन होती है॥३२॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम्

धर्माश्रितो भूतनयो विधर्मां करोति नारीं सुमु-

खां सरोगाम् । भाग्यैर्विहीनां स्वजनैर्निरस्तां प्रियामिषां पानपरां सदैव ।।३३।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में नवमभाव में मंगल स्थित होय वह नारी धर्मरहित श्रेष्ठमुखवाली रोगसहित भाग्य करके हीन अपने कुटुम्बियों करके त्यागी भई प्रिय है मांस जिसको मद्यपान में तत्पर होती है।।३३।।

अथ दशमभावस्थितभौमफलम्

कर्म्माश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं कुकर्म्म श्रवणां कुभावाम् । शीलेन हीनां निरतां विधर्मी लज्जाविहीनां मतिवर्जितां च ।।३४।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में दशमस्थान में मंगल स्थित होय वह नारी कुकर्म के श्रवण करनेवाली, खोटे स्वभाव की, शीलरहित, खोटे धर्म में तत्पर, लज्जाविहीन, बुद्धिरहित होती है।।३४।।

अथ लाभभावस्थितभौमफलम्

लाभाश्रितस्संकुरुते महीजः प्रभूतलाभां वनितां निरीहाम् । शुभस्वभावां विविधोपचाराम्म्बारतां प्रीतिपरां च धर्म्मे ।।३५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मस्थान में लाभस्थान में मंगल स्थित होय वह स्त्री बहुत लाभसहित इच्छारहित अच्छे स्वभाव की अनेक उपचार करनेवाली माता में तत्पर अपने धर्म में प्रीति करनेवाली होती है।।३५।।

अथ व्ययभावस्थितभौमफलम्

व्ययस्थितो भूतनयः प्रसूते नारीं कृतघ्नां गुणवर्जिताङ्गीम् । असद्व्ययां पानपरां नृशंसां सदातुरां प्रीतिविवर्जितां च ।।३६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बारहवें स्थान में मंगल स्थित होय वह स्त्री अहसान न माननेवाली गुणों करके रहित खोटे काम में धन खर्च करे मद्यपान में तत्पर निर्भय हमेशा आतुर प्रीति करके रहित होती है॥३६॥

अथ तनुभावस्थितबुधफलम्

करोति सौम्यस्तनुगः सुरूपां प्रीतिप्रधानां नयधर्मयुक्ताम् । विशालनेत्रां प्रचुरान्नपानां प्रियंवदां सत्यसमन्वितां च ॥३७॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लग्न में बुध स्थित होय वह स्त्री रूपसहित प्रीति में तत्पर नम्र और धर्मसहित बड़े नेत्रोंवाली अधिक अन्न और पानादि सहित प्यारी वाणी बोलनेवाली सत्य सहित होती है॥३७॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम्

धनस्थितः सोमसुतः प्रसूते धनान्वितां शुद्धियुतां सुरूपाम् । नारीं द्विजाराधनतत्परां च क्रतुप्रियां श्रीसहितां गुणाढ्याम् ॥३८॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में दूसरे स्थान में बुध स्थित होय वह स्त्री धनवती शुद्धता लिये स्वरूप जिसका ब्राह्मणों की सेवा में तत्पर यज्ञ प्रिय जिसको लक्ष्मीसहित शोभायुक्त गुणवती होती है॥३८॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम्

तृतीयगः सोमसुतो धनाढ्यां नारीं प्रसूते सुतमानभाजम् । जनानुकूलां प्रभुतासमेतां बन्धुप्रियां त्राणयुतां सुभासम् ॥३९॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे घर में बुध स्थित होय वह

स्त्री धनवती पुत्रों करके मान भोगनेवाली मनुष्यों की आज्ञानुसार चलनेवाली ऐश्वर्यसहित भाइयों को प्यारी रक्षासहित शोभायमान कांतिवाली होती है।।३९।।

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम्

सौम्यः सुखस्थः सुसुखां प्रसूते नतां प्रभूतैः सुजनैः सुभृत्यैः । देवद्विजाराधनतत्परां च प्रख्यातवंशां प्रियधर्मवर्णाम् ।।४०।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध चतुर्थभाव में स्थित होय वह नारी श्रेष्ठ सुखसहित बहुत नम्रता और अच्छे पुरुष श्रेष्ठ नौकरों करके सहित देवता और ब्राह्मणों के आराधन में तत्पर अपने वंश में नामी अपने वर्ण का धर्म है प्रिय जिसको ऐसी होती है।।४०।।

अथ पंचमस्थितबुधफलम्

सुतस्थितः सोमसुतोऽल्पपुत्रां स्वल्पान्नवित्तां-कलहप्रियां च । वृथाटनां गर्हितसर्वकृत्यां लक्ष्म्या विहीनां हतसाधुपक्षाम् ।।४१।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बुध पंचम स्थान में स्थित होय वह नारी थोड़े पुत्रवाली थोड़ा अन्न और धनसहित लड़ाई प्यारी जिसको वृथा भ्रमण करनेवाली निंदित काम करनेवाली लक्ष्मीरहित साधुओं से विमुख होती है।।४१।।

अथ षष्ठभावस्थितबुधफलम्

सौम्यो रिपुस्थोहतशत्रुपक्षां नारीं प्रभूतैर्विभवैः समेताम् । गतायुषं तीव्रकरां सुकामां परोप-कारव्यसनाभिसक्ताम् ।।४२।।

अर्थ–जिस नारी के बुध छठे स्थान में स्थित होय वह स्त्री शत्रुपक्ष

को नाश करनेवाली वैभव करके सहित दूर हुई है आयुष जिसकी बड़े हाथ कामकला में आसक्त पराये उपकार में तत्पर तथा विषय में आसक्त होती है।।४२।।

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम्

सौम्यः कलत्रे प्रवरां विदग्धां शास्त्रानुरक्तां शुभभर्तृकां च । करोति नारीं नियमैरुपेतां शुभप्रभावां प्रणयान्वितां च ।।४३।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम भाव में बुध स्थित होय वह नारी बड़ी भारी चतुर शास्त्र में आसक्त श्रेष्ठपतिसहित वह औरत नियमों करके सहित श्रेष्ठ है प्रभाव जिसका नम्रतासहित होती है।।४३।।

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम्

मृत्युस्थितः सोमसुतः कृतघ्नां नारीं प्रसूते विगताभिमानाम् । निरस्तधर्म्मां जनसंविरुद्धां सदातुरां भीतिसमन्वितां च ।।४४।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में अष्टम स्थान में बुध स्थित होय वह नारी अहसान न माननेवाली दूर हुआ है अभिमान जिसका धर्मों करके रहित मनुष्यों से विरुद्ध हमेशा आतुर भय करके संयुक्त होती है।।४४।।

अथ नवमभावस्थितबुधफलम्

धर्म्माश्रितः सोमसुतः सुकर्मां पतिप्रधानां वनितां प्रसूते । प्रभूतकोशां विनयान्वितां च सुवर्णभूषां व्रतदानयुक्ताम् ।।४५।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में नवमभवन में बुध स्थित होय वह

नारी अच्छे कर्म करनेवाली पति है प्रधान जिसके बहुत धन नम्रतासहित सुवर्ण के भूषण और व्रतदान सहित होती है।।४५।।

अथ दशमभावस्थितबुधफलम्

कर्माश्रितः सोमसुतः सुधर्मां धन्यां प्रसूते वनितां विनीताम् । भाग्याधिकां कीर्तिपरां सुदक्षां क्षमाधिकां सत्यसमन्वितां च ।।४६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में दशमभाव में बुध स्थित होय वह नारी अच्छे धर्मकरनेवाली स्त्रियों में धान्य नम्रतासहित अधिक भाग्यवाली कीर्तियुक्त श्रेष्ठ चतुर अधिक क्षमा और सत्यसहित होती है।।४६।।

अथ लाभस्थितबुधफलम्

लाभाश्रितः सोमसुतः प्रसूते नारीं प्रभूतप्रिय-पुष्टवित्ताम् । सुलाभयुक्तां शुभशीलभाजं पतिव्रतां बांधवसंमतां च ।।४७।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बुध लाभ स्थान में स्थित होय वह स्त्री बहुत प्रिय पुष्ट धनवती अच्छे लाभसहित अच्छे शीलयुक्त पतिव्रता भाइयों करके संमत होती है।।४७।।

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम्

व्ययाश्रितः सोमसुतः प्रसूते नारीमलक्ष्मीं विगतप्रतापाम् । विवादशीलां विकलां कृशाङ्गीं गुरोर्वियुक्तां सुजनैर्निरस्ताम् ।।४८।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बारहवें भवन में बुध स्थित होय वह नारी लक्ष्मीरहित दूर हुआ है प्रताप जिसका विवाद करने का है

स्वभाव जिसका विकल दुर्बल शरीर बड़े पुरुषों से रहित अच्छे जनों करके त्यागी भई होती है।।४८।।

अथ लग्नस्थितगुरुफलम्

लग्नाश्रितो देवगुरुः प्रसूते सुसत्ययुक्तां सुमनोज्ञभोगाम्
गंभीरवाक्यां प्रियसाधुपक्षां सुरूपगात्रांप्रमदोत्तमां च ।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बृहस्पति लग्न में स्थित होय वह नारी पतिव्रतत्वसहित श्रेष्ठ मन की जाननेवाली भोगकरके सहित गंभीर वाणी बोलनेवाली प्यारे हैं साधु जिसको श्रेष्ठ रूप और शरीर करके स्त्रियों में उत्तम होती है।।४९।।

अथ द्वितीयभावस्थितगुरुफलम्

धनस्थितो देवगुरुः प्रसूते प्रभूतवित्तां सुभगां मनोज्ञाम्
सुधर्म्मिणींनीतिपरांप्रधानांगतस्पृहांस्वर्णविभूषणाढ्याम्

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में दूसरे घर में बृहस्पति स्थित होय वह नारी बहुत धनसहित श्रेष्ठ भाग्यवाली मन की जाननेवाली नीति में तत्पर प्रधान जिसकी कोई निंदा न करे सोने के गहने के सहित होती है।।५०।।

अथ तृतीयभावस्थितगुरुफलम्

तृतीयसंस्थः कुरुतेसुरेज्योनारींनितांतंविहृतप्रभावाम् ।
सुदोषयुक्तां गुरुताविहीनां विवर्जितांगांनिधनैः सदैव ।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में तीसरे घर में बृहस्पति स्थित होय तो वह नारी निरंतर दूर हुआ है प्रभाव जिसका अनेक दोषसहित गौरवता करके हीन वाणी करके रहित धनरहित हमेशा होती है।।५१।।

अथ सुखभावस्थितगुरुफलम्

चतुर्थसंस्थः कुरुतेसुरेज्योनारींप्रसन्नांसुखवित्तयुक्ताम्
प्रभूतविद्याभरणांप्रसिद्धांसुपूजिताङ्गींगुणगौरवांच।।५२।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में सुखभाव में बृहस्पति स्थित होय वह स्त्री प्रसन्नचित्ता सुख तथा धनकरके सहित बहुत विद्या और आभरणयुक्त प्रसिद्धा श्रेष्ठगुणों की गौरवता करके पूजनीय शरीर जिसका ऐसी होती है।।५२।।

अथ पंचमस्थितगुरुफलम्

सुतस्थितोदेवगुरुः सुपुत्रांनारीं प्रसूते हतपापकृत्याम्
सदानुकूलांव्रतधर्मदक्षांसत्यात्मिकांरम्यसभासुभव्याम् ।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पंचम घर में बृहस्पति स्थित होय तो वह नारी श्रेष्ठ पुत्रों सहित नाश किये हैं पाप कर्म जिसने सर्वकाल में एकस्वभाववाली व्रतधर्म में चतुर सत्यात्मिका शोभायमान सभा में प्रकाशवती होती है।।५३।।

अथ षष्ठस्थितगुरुफलम्

जीवोऽरिसंस्थो बहुशत्रुपक्षां नारीं सुधत्ते नयसंयुतां च ।
बह्वापदंत्राससमन्वितांगींप्रधानदर्पांकृतकोपबाणाम्।।५४।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में छठे घर में बृहस्पति स्थित होय वह नारी बहुत से शत्रुपक्ष धारण करनेवाली नम्रता सहित बहुत आपदा और त्राससहित है शरीर जिसका अपना अर्थ साधनेवाली क्रोध के बाण चलानेवाली होती है।।५४।।

अथ सप्तमस्थितगुरुफलम्

कलत्रगो देवगुरुः प्रसूते स्वभावयुक्तां प्रमदां सुपुण्याम्
जनानुरक्तां बहुशास्त्रभाजंपतिप्रियांकीर्तिसमन्वितां च।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में सातवें घर में बृहस्पति बैठा होय वह स्त्री श्रेष्ठ स्वभाववाली श्रेष्ठ पुण्यों को करनेवाली मनुष्यों में आसक्त बहुत से शास्त्र जाननेवाली पति को प्यारी कीर्तिसहित होती है।।५५।।

अथाष्टमस्थितगुरुफलम्

जीवोऽष्टमस्थः कुरुतेऽल्पसत्यां नारीं विशीलां पतिना विमुक्ताम् । स्थूलांघ्रिहस्तां व्यसनप्रधानां बह्वाशनां रोगसमन्वितां च ।।५६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बृहस्पति अष्ट स्थित होय वह नारी शीलरहित पति करके त्यागी भई मोटे हाथ पैर जिसके व्यसन करनेवालियों में प्रधान बहुत भोजन करनेवाली रोगसहित होती है।।५६।।

अथ नवमभावस्थितगुरुफलम्

जीवे तपस्थेऽमररूपयुक्ता तड़ागवृक्षोच्चयधर्मकृत्या ।
रम्याप्रशस्ताद्विजभक्तियुक्तामहाधनानांच निधिःकृतज्ञा।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बृहस्पति नवम स्थित होय वह नारी तालाव और ऊंचे ऊंचे वृक्षों को लगाके धर्मकृत्य करनेवाली शोभायमान सुन्दर ब्राह्मणों की भक्तिसहित बड़े धनवानों में नामी कृतज्ञा होती है।।५७।।

अथ दशमस्थितगुरुफलम्

कर्म्माश्रितो देवगुरुः प्रसूते प्रख्यातकर्माप्तगुणांगुणज्ञाम् ।
प्रभूतदासीविनयप्रगल्भां नारीं तथैवाद्भुतचेष्टितांच ।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में दशम स्थान में बृहस्पति स्थित होय

वह कर्मों करके प्रसिद्ध गुणों करके परिपूर्ण गुणों की जाननेवाली बहुत दासी नम्रतासहित प्रगल्भा अद्‌भुतस्वरूपवाली होती है।।५८।।

अथ लाभस्थितगुरुफलम्

लाभाश्रितो देवगुरुः प्रसूते नारीं सुदात्रीं बहुकीर्तियुक्ताम् । श्रेयोन्वितां शिल्पपरां सुसत्यां सदानुरक्तां गुणकीर्तनेन ।।५९।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बृहस्पति ग्यारहवें भाव में स्थित होय वह नारी दाता बहुत कीर्तिसहित कल्याणयुक्त चित्रकारी का काम जाननेवाली पतिव्रता हमेशा अपने गुण और यश में तत्पर होती है।।५९।।

अथ व्ययभावस्थितगुरुफलम्

व्ययाश्रितोदेवगुरुः प्रसूतेसाधुव्ययां रोगसमन्वितांगीम् ।
लाभाभिभूतांकुलधर्महीनांनिसर्गदुष्टांपरधर्मपक्षाम् ।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में बृहस्पति बारहवें स्थित होय वह नारी साधुओं में अपना धन खर्च करै रोगसहित शरीरवाली लाभयुक्त अपने कुल के धर्म से हीन स्वाभाविक दुष्टा पराये धर्म का पक्ष करनेवाली होती है।।६०।।

अथ तनुभावस्थितभृगुफलम्

लग्नाश्रितोदैत्यगुरुःप्रसूतेनारींसुकांतांसुभगांविदग्धाम्।
वित्ताधिकांदोषविवर्जिताङ्गींहतारिपक्षांसततंसुशीलाम्।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्मलग्न में शुक्र स्थित होय वह नारी श्रेष्ठभाग्यवाली चतुर धनवती ज्यादे दोषरहित शरीरवाली नाश करै हैं शत्रुदल जिसने निरंतर शुभ शीलवती होती है।।६१।।

अथ द्वितीयभावस्थितभृगुफलम्

शुक्रोधनस्थः सधनांप्रसूते विदग्धचेष्टां प्रमदांसुरूपाम् । धर्मध्वजांधर्मपरांसुधन्यांविख्यातकृत्यांमृदुभाषिणी च ॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में शुक्र दूसरे घर में स्थित होय वह नारी धनवती चतुर चेष्टावाली रूपवती धर्ममतियों में अग्रणीय धर्म में तत्पर सो स्त्री धन्यकर्मों करके विख्यात मीठी वाणी बोलनेवाली होती है।।६२।।

अथ तृतीयभावस्थितशुक्रफलम्

तृतीयगो दैत्यगुरुः प्रसूते नारीं सुकृत्यां विनयैः समेताम् । युक्तामनेकैः सुसहोदरैश्च सहोदरीभिश्च तथोत्तमाभिः ।।६३।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे घर में शुक्र स्थित होय वह नारी श्रेष्ठ कर्मोंसहित नम्रतायुक्त श्रेष्ठ अनेक भाइयों करके सहित तैसेही श्रेष्ठ बहनों करके सहित होती है।।६३।।

अथ चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम्

चतुर्थगोदैत्यगुरुः प्रसूतेप्रभूतसौख्यांवनितांधनाढ्याम् । विलासशीलांपरधर्मकृत्यांजितेंद्रियां वंशविभूषणांच ।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में चौथे घर में शुक्र स्थित होय वह स्त्री बहुत सौख्यवाली धनवती विलास में स्वभाव जिसका पराये धर्म को करे इंद्रियों की जीतनेवाली अपने वंश में आभूषण समान होती है।।६४।।

अथ पंचमभावस्थितशुक्रफलम्

करोति नारीं खलु पंचमस्थः साध्वीं समृद्धां बहुकन्यकाढ्याम् । रम्यानुकारां खलु संगहीनां

नित्यं प्रधानां निजवंशमध्ये ।।६५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में शुक्र पंचमभाव में बैठा होय वह नारी ऋद्धियोंसहित बहुत कन्यासंतानसहित शोभायमान आकारवाली निश्चय करके संगहीन अपने वंश में नित्य ही प्रधान होती है।।६५।।

अथ षष्ठस्थितशुक्रफलम्

शुक्रोरिसंस्थः प्रकरोतिनारीमीर्ष्याप्रधानां बहुकोपयुक्ताम् । तीव्रस्वभावां विजितारिपक्षां सदानिरस्तांपतिपुत्रवर्वैः ।।६६।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में शुक्र छठे स्थान में स्थित होय वह स्त्री द्रोह करनेवालियों में प्रधान बहुत क्रोधसहित तीव्रस्वभाववाली जीते हैं शत्रुदल जिसने हमेशा पतिपुत्रादिकों करके निरादर करी भई होती है।।६६।।

अथ सप्तमस्थितशुक्रफलम्

कलत्रगो दैत्यगुरुः प्रसूते नारीं प्रभूतां द्रविणप्रभावाम् । पतिप्रियां शास्त्ररतां प्रगल्भां हितां द्विजानां जनवल्लभां च ।।६७।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टमभवन में शुक्र स्थित होय वह स्त्री अधिक धन के प्रभाव सहित पति को प्यारी शास्त्र में तत्पर प्रगल्भा ब्राह्मणों का हित करनेवाली मनुष्यों को प्यारी होती है।।६७।।

अथाष्टमस्थितशुक्रफलम्

शुक्रोऽष्टमस्थःकुरुतेप्रमत्तांविषादभाजांविभवैर्वियुक्ताम् । दयाविहीनांपरवंचनार्तांकुचैलिनींधर्मविवर्जितांच ।।६८।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टम भवन में शुक्रस्थित होय वह

स्त्री मतवाली विषाद की भागी दयाकरके हीन मनुष्यों करके निंदित करी भई मलिन धर्मरहित होती है॥६८॥

अथ धर्मभावस्थितशुक्रफलम्

धर्म्माश्रितो धर्मपरां प्रसूते शुक्रः सुमुख्यां वनितां च लोके । नानार्थवस्त्राश्रयभोजनाढ्यां सुपुष्टचित्तां पुरुषानुकाराम् ॥६९॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में नवमस्थान में शुक्र स्थित होय वह नारी संसार की स्त्रियों में अग्रणी अनेक प्रकार के वस्त्र और स्थान भोजन करके युक्त श्रेष्ठ पुष्ट चित्त पुरुषों के माफिक उदार होती है॥६९॥

अथ दशमभावस्थितशुक्रफलम्

कर्म्माश्रितोदैत्यगुरुःप्रसूतेनारींयशस्यांसुधनैः समेताम् । प्रसिद्धकर्मप्रतिपूजितांगींरूपाधिकांकल्पतरांसुसत्याम्॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में दशम स्थान में शुक्र बैठा होय वह नारी यशवाली श्रेष्ठ धनसहित कमाकरके प्रसिद्ध कर्म करनेवाली पूजित शरीरवाली बुद्धिमती प्रशंसा योग्य है रूप जिसका ऐसी श्रेष्ठ पतिव्रता होती है॥७०॥

अथैकादशभावस्थितशुक्रफलम्

लाभाश्रितो दैत्यगुरुः प्रसूतेप्रसूतलाभां वनितां सदैव । विमुक्तदोषांबहुशास्त्ररक्तांमहाप्रभावांविविधालयांच ।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लाभस्थान में शुक्र दशम स्थित होय वह स्त्री बहुत लाभसहित सदा होती है सर्व दोषों से रहित बहुत शास्त्रों में तत्पर बड़े प्रभाववाली अनेक स्थान सहित होती है॥७१॥

अथ व्ययभावस्थितशुक्रफलम्

व्ययाश्रितोऽसद्व्ययदुःखभाजं नारीं प्रसूते भृगुजस्समायाम् । क्रोधाधिकां कृत्रिमवाक्यारक्तां रोगान्वितां बुद्धिविहीनदुष्टाम् ॥७२॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बारहवें भाव में शुक्र स्थित होय वह स्त्री अच्छे काम में धनखर्च करनेवाली बनावट के वचन बोलनेवाली रोगसहित बुद्धिहीन दुष्टा अर्थात् परपुरुषगामिनी होती है॥७२॥

अथ लग्नास्थितशनिफलम्

करोति सौरःखलु लग्नसंस्थो विरूपदेहां वनितां नितांतम् । आमाधिकां कीर्तिविवर्जितांगीं स्थूलास्थिंदतां नयनैर्विहीनाम् ॥७३॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्म लग्न में शनैश्चर स्थित होय वह नारी बुरे रूपवाली देह की निरंतर होती है आमातिसार रोगसहित यश करके हीन मोटे हाड़ और दांत जिसके नेत्रहीन होती है॥७३॥

अथ द्वितीयभावस्थितशनिफलम्

धनाश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते धनेन हीनां वनितां निरस्ताम् । सदाभिभूतां प्रणयेन हीनां नृशंसभावामयसंकुलां च ॥७४॥

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में दूसरे घर में शनैश्चर स्थित होय वह नारी धनकरके हीन मनुष्यों करके निरादर करी भई नम्रताहीन निर्भयभाववाली रोगसहित होती है॥७४॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम्

तृतीयसंस्थो रविजः प्रसूते दक्षां प्रधानां वनितां सुधन्याम् । बहुप्रजां त्राणविधानसक्तां प्रशंसितां साधुजनेन नित्यम् ।।७५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे घर में शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री चतुर स्त्रियों में प्रधान धन्य होती है बहुत संतानसहित रक्षा करने में तत्पर हमेशा साधु मनुष्यों करके प्रशंसा करी जाती है।।७५।।

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम्

करोति मन्दः सुखगोऽल्पसौख्यां मतिप्रहीणां वनितां कृतघ्नाम् । चलस्वभावां विभवैर्विहीनां सदाहितां नीचसमागमां च।।७६।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में चतुर्थ स्थान में शनैश्चर स्थित होय वह नारी मतिहीन अहसान को न माननेवाली चलायमान स्वभाव जिसका वैभवकरके हीन हमेशा अहित करनेवाली नीच पुरुषों के साथ रहती है।।७६।।

अथ पंचमस्थितशनिफलम्

सुताश्रितो भास्करजो विपुत्रां नारीं प्रसूते घृणया विहीनाम् । प्रभूतदर्पां गणिकानुकारां विवर्जितां साधुसमागमेन ।।७७।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में पंचम भाव में शनैश्चर स्थित होय वह नारी घृणा करके रहित बड़े अभिमानवाली वेश्याओं के समान आचार जिसका साधुओं के समागमते रहित पुत्रहीन होती है।।७७।।

अथ रिपुभावस्थितशनिफलम्

मन्दोऽरिसंस्थः कुरुते विमन्दां नारीं प्रधानां तनयैः समेताम् । प्रभूतवस्त्राभरणैः समेतां गुणानुरक्तां पतिवल्लभां च ॥७८॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में छठेभाव में शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री मंदतारहित स्त्रियों में प्रधान पुत्रोंसहित बहुत वस्त्र आभूषणों सहित गुणों में तत्पर अपने पति को प्यारी होती है॥७८॥

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम्

सौरोस्तसंस्थोविधवांप्रसूतेविवर्जितांवापतिनासदैव । रोगाधिकांपानपरां कुमित्रांप्रभूतदोषांबहुपापभाजम् ॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में शनैश्चर सप्तस्थान में स्थित होय वह स्त्री विधवा होती है अथवा पति करके रहित हमेशा रहे अधिक रोगवती मद्यपान में तत्पर दुष्ट मित्रोंवाली बहुत दोषोंसहित अनेक पापों की भागी होती है॥७९॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम्

स्थानेऽष्टमे सूर्य्यसुतः प्रसूते स्निग्धां च नारीं निजकर्मदोषाम् । दुष्टस्वभावां गतकर्मसत्यां-मलिम्लुचां वंचनतत्परां च ॥८०॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में अष्टम स्थान में शनैश्चर स्थित होय वह नारी चिकने शरीरवाली अपकर्मों के दोषोंसहित दुष्टस्वभाववाली नाश करे हैं कर्म और सत्यता जिसने मलिनस्वभाव निंदा करने में तत्पर होती है॥८०॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम्

धर्माश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते कुकर्मरक्तां वनितां सदैव ।

व्ययाधिकांलुब्ध सुहृत्समेतांनिसर्ग दुष्टांधनवर्जितांच ।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में नवम भाव में शनैश्चर स्थित होय वह नारी खोटे कर्मों में आसक्त हमेशा होती है ज्यादे खर्च करनेवाली अपने मित्रों सहित कृपण विद्याहीन बहुत दुःखभागी होती है।।८१।।

अथ दशमभावस्थितशनिफलम्

कर्माश्रितः सूर्यसुतः प्रसूतेकुकर्मरक्तां विकृतानुकाराम् ।
कुशास्त्रसंगव्यसनाभिभूतां निसर्गदुष्टां धनवर्जितांच ।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में दशम भाव में शनैश्चर बैठा होय वह स्त्री खोटे कर्मों में तत्पर विरूपदेह खोटे शास्त्रों का संग करनेवाली व्यसनों में तत्पर स्वाभाविक दुष्ट धनकरके रहित होती है।।८२।।

अथ लाभभावस्थितशनिफलम्

लाभाश्रितो भास्करजः प्रसूते रक्ताधिकां वात-कफप्रगल्भाम् । विवेकहीनां कुटिलस्वभावां-सदा निरस्तां व्यसनाकुलां च ।।८३।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लाभस्थान में शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री खून के फिसादसहित ज्यादे वात कफ प्रकृतिवाली प्रगल्भा चतुरताहीन कुटिलस्वभाव हमेशा निरादर करी हुई व्यसनो करके आकुल होती है।।८३।।

अथ व्ययभावस्थितशनिफलम्

व्ययाश्रितोभास्करजःप्रसूते व्ययेनयुक्तांकृपणस्वभावाम् ।।
असद्व्ययांपापरतांनिरस्तांनिसर्गदुष्टांधनवर्जितांच ।।८४।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में बारहवें स्थान में शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री बहुत खर्च करनेवाली कृपण स्वभाव की खोटे कर्म में धन खर्च करनेवाली पापकर्म में तत्पर निरादर करी हुई स्वाभाविक दुष्ट

धनरहित होती है॥८४॥

अथ लग्नभावस्थितराहुफलम्

उक्तंच श्यामदैवज्ञेन

करोति राहुर्यदिलग्नसंस्थो विरूपदेहां वनितां विशीलाम् । रोगाधिकां मानविवर्जिताङ्गीं क्रोधान्वितां सर्वजनैर्निरस्ताम् ॥८५॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में राहु लग्नभाव में स्थित होय वह स्त्री बुरी देहवाली शीलरहित अधिक रोगसहित मान करके हीन शरीर जिसका क्रोधसहित सम्पूर्ण मनुष्यों करके तिरस्कार करी जाती है॥८५॥

अथ द्वितीयभावस्थितराहुफलम्

द्वितीयभावे यदि राहुसंस्थितिर्वित्तैर्विहीनां कुरुते कुकान्ताम् ॥ सौख्यैर्विहीनां विधवां सरोगां दारिद्र्यदु:खान्वितपापभाजम् ॥८६॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में दूसरे घर में राहु स्थित होय वह नारी धनहीन खोटी औरत होती है सौख्यरहित विधवा रोगसहित दरिद्र दु:खयुक्त पापों की भागी होती है॥८६॥

अथ तृतीयभावस्थितराहुफलम्

तमस्तृतीये वनितां प्रसूते विहीनबन्धुं भगिनीविहीनाम् । सुपुष्टदेहां विजितारिवृन्दां क्षमान्वितां रोगविवर्जितां च ॥८७॥

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में तीसरे भाव में राहु स्थित होय वह

स्त्री भाइयों करके हीन तथा बहिनों करके रहित बलवान् देहवाली जीते हैं शत्रुदल जिसने क्षमासहित रोगविहीन होती है।।८७।।

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम्

करोति राहुः सुखगोऽल्पवित्तां जनैर्विहीनां प्रमदां कृतघ्नाम् । चतुष्पदप्रीतिसरोगदेहां विवर्जितां मातृसुखैर्नितांतम् ।।८८।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में चतुर्थस्थान में राहु स्थित होय वह नारी थोड़ी धनवाली और मनुष्यों करके हीन अहसान न माननेवाली चतुष्पद सवारी वगैरह से प्रीति करे रोगसहित शरीर माता के सुख करके रहित निरंतर होती है।।८८।।

अथ पंचमस्थितराहुफलम्

सुताभिधाने भवने तमो वै नारीं प्रमत्तां प्रभुताविहीनाम् । स्थूलास्यदंतां गणिकानुकारां-प्रभाविहीनां स्वजनैर्विमुक्ताम् ।।८९।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में पंचम घर में राहु स्थित होय वह स्त्री मदमाती ऐश्वर्यहीन मोटे दांत और मुख जिसका वेश्या के समान कांतिरहित अपने जन बंधु पुत्रादिकों से त्याग करी भई होती है।।८९।।

अथ षष्ठभावस्थितराहुफलम्

तमोरिसंस्थः कुरुते प्रगल्भां दयान्वितां सर्वजितारिपक्षाम् । प्रभूतविद्यां धनधान्ययुक्तां सदा सुभाषीं पतिवल्लभां च ।।९०।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में छठे घर में राहु स्थित होय वह नारी प्रगल्भा दया सहित समस्त जीते हैं शत्रुदल जिसने बहुत विद्या

और धनधान्यसहित हमेशा मीठी वाणी बोलनेवाली पति को प्यारी होती है।।९०।।

अथ सप्तमस्थितराहुफलम्

तमः कलत्रे पतिभावहीनां नारी प्रसूते कुरुते कुरूपाम् । सुदुष्टचित्तां कृपणां कृतघ्नां सदानिरस्तां निजबंधुवर्गैः ।।९१।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में राहु सप्तम स्थित होय वह स्त्री पतिहीन कुरूपा होती है सो दुष्टचित्त कृपण और कृतघ्न हमेशा अपने बंधुवर्गों से त्याग करी हुई होती है।।९१।।

अथाष्टमस्थितराहुफलम्

यदाष्टमस्थो दिननाथशत्रुः सरोगदेहां विधवां कुरूपाम् । कठोरचित्तां व्यभिचारशीलां महागदैः पीडितलोकहीनाम् ।।९२।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में आठवें स्थान में राहु स्थित होय वह स्त्री रोगसहित देहवाली विधवारूप सहित कठोर चित्त व्यभिचार में शील जिसका बड़े रोग करके पीडित मनुष्यों करके हीन होती है।।९२।।

अथ नवमस्थितराहुफलम्

यदा तपस्थो रजनीशशत्रुर्नारीं विधर्मां परधर्मपक्षाम् । प्रियामिषांपानपरां नृशंसां वृथाटनांकीर्तिविवर्जितांच ।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में नवम स्थान में राह स्थित होय वह स्त्री धर्म रहित पराये धर्म का पक्ष करनेवाली मांस प्रिय जिसको, मद्य में तत्पर निर्भय वृथा घूमनेवाली यश रहित होती है।।९३।।

अथ दशमस्थितराहुफलम्

सिंहीसुतश्चेद्दशमें स्थितः स्यान्नारीं प्रसूते पितृमातृहीनाम् । पत्या निरस्तां स्वजनैर्विरुद्धां क्रोधान्वितां सर्वहतारिपक्षाम् ।।९४।।

अर्थ–जिस स्त्री के जन्मकाल में दशमस्थान में राहु स्थित होय वह नारी मातापिता करके हीन पति करके निरादरकरी भई अपने मित्रजनों से विरोध करनेवाली क्रोधसहित सब नाश करे हैं शत्रुपक्ष जिसने ऐसी होती है।।९४।।

अथ लाभस्थितराहुफलम्

लाभे तमोऽतीवसुरूपयुक्तां सदा विनीतां पतिवल्लभां च । तुरंगनागैः सहितां प्रसन्नां सुभृत्यपुत्रैर्वनितां समेताम् ।।९५।।

अर्थ–जिस नारी के जन्मकाल में लाभस्थान में राहु स्थित होय वह स्त्री रूपसहित हमेशा नम्रतासहित पति को प्यारी घोड़े हाथियोंसहित प्रसन्नचित्त श्रेष्ठ नौकर और पुत्रों करके युक्त होती है।।९५।।

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम्

राहुर्व्ययस्थः कुरुते कुकर्मासद्व्ययां दुःखदरिद्रभाजम् । जनैर्निरस्तां पतिपुत्रहीनां व्ययाधिकां नेत्ररुजा समेताम् ।।९६।। वसिष्ठगर्गादिमुनिप्रणीतान्वराहकल्याणकृतान्निरीक्ष्य । सज्जातके खेटफलं क्रमेण सुयोषितां सद्यशसे कृतं हि ।।९७।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके ग्रहभावफलवर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मकाल में बारहवें स्थान में राहु स्थित होय वह नारी खोटे कर्म्मों में तत्पर बुरे कामों में खर्च करनेवाली दुःख दरिद्र भोगनेवाली मनुष्यों करके त्यागी हुई पति और पुत्रों करके हीन खर्च ज्यादे करनेवाली नेत्रों के रोग सहित होती है॥९६॥ वसिष्ठ गर्गादि मुनीश्वरों करके प्रणीत और वराह कल्याण आचार्य्यों करके कहे हुए ग्रंथों को देखकर ग्रहों के फल क्रम से उत्तम स्त्रियों के हितार्थ और यशोर्थ यह नवीन ग्रंथ संग्रह किया है॥९७॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
हिन्दीटीकायां रव्यादिग्रहभावफलवर्णनो नाम
चतुर्दशोऽध्याय: ॥१४॥

अथ मूलजन्माध्याय:

तत्राभुक्तमूललक्षणमाह–नारद:

यो ज्येष्ठामूलयोरंतरालप्रहरज: शिशु:
अभुक्तमूलयो: सार्पमघानक्षत्रयोरपि ॥१॥

अर्थ–जो लड़का लड़की ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र के बीच के एक प्रहर में उत्पन्न हुआ तथा आश्लेषा और मघा नक्षत्र के एक प्रहर बीच में पैदा हुआ वो अभुक्तमूल कहता है अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की ३॥। पौने चार घड़ी और मूल नक्षत्र के आदि की ३॥। पौने चार घड़ी यह एक प्रहर हुआ उसको अभुक्त मूल कहते हैं इसी प्रकार आश्लेषा नक्षत्र के अंत की ३॥। और मघा नक्षत्र के आदिकी ३॥। घड़ी इसको भी अभुक्तमूल कहते हैं परन्तु गणितागत में प्रहरार्ध का प्रमाण जरूर देख

लेना चाहिये पहिले नक्षत्र का सर्वर्क्ष बनाले उस सर्वर्क्ष को सोलह हिस्सा नक्षत्र के आदि अंत का अभुक्त मूल कहाता है।।१।।

तत्राभुक्तमूलकालमाह—वसिष्ठः

भुजंगपौरंदरपौष्णभानां तदग्रभानां च यदंतरालम् ।
अभुक्तमूलं प्रहरप्रमाणं त्यजेत्सुतां तत्रभवांसदैव ।।२।।

अर्थ—आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, इन नक्षत्रों के अगाड़ी के अर्थात् आश्लेषा—मघा और ज्येष्ठा—मूल, रेवती—अश्विनी इन नक्षत्रों के अंत और आदि का जो अंतराल है उस एक प्रहर का नाम अभुक्तमूल है इस प्रहर में पैदा हुई जो कन्या उसको निरंतर त्याग करना चाहिये।।२।।

तथा च अभुक्तमूलसंज्ञामाह—शौनकः

सार्पंचपैत्र्यंत्वथशाक्रमूलपौष्णाश्विनीनांच यदंतरालम्
अभुक्तमूलंप्रहरप्रमाणंतदुत्थकन्यांनविलोकयेत्पिता।।३।।

अर्थ—आश्लेषा—मघा का और ज्येष्ठा—मूल का, रेवती—अश्विनी का जो अंतराल है वह अभुक्त प्रहर प्रमाण है उस प्रहर में पैदा हुई कन्या को पिता न देखे।।३।।

अभुक्तमूलोत्पन्नबालस्य त्यागः

अभुक्तमूलजं पुत्रं पुत्रीमपि परित्यजेत् ।।

अर्थ—अभुक्तमूल में पैदा हुआ—लड़का व लड़की को परित्याग करना चाहिये।

अथ त्यागाशक्तौ शांतिः

अथ वाब्दाष्टकं तातस्तन्मुखं नावलोकयेत् ।।४।।

अर्थ—जो त्याग करने की शक्ति न होय तो आठ वर्ष पीछे शांति करके बालक का मुख देखना चाहिये।।४।।

अथ मूलजातस्य चरणवशेन फलम्

मूलाद्यंशे पितुनाशो द्वितीये मातुरेव च ॥
तृतीये धनधान्यानां नाशस्तुर्य्य धनागमः ॥५॥

अर्थ–जो बालक मूल के पहिले चरण में पैदा होय तो पिता का नाश करे दूसरे चरण में उत्पन्न माता का नाश करे तीसरे चरण में उत्पन्न धनधान्य का नाश करे चौथे चरण में उत्पन्न धन का आगम कराता है॥५॥

अथाश्लेषाजातस्य चरणवशेन फलम्

फलं तदेव सार्प्पर्क्षे प्रतीपं चान्त्यपादतः ॥६॥

अर्थ–जो कन्या या पुत्र आश्लेषा नक्षत्र के पहिले चरण में पैदा होय तो धनागम होय दूसरे चरण में धनधान्य का नाश करे तीसरे चरण में उत्पन्न माता का नाश करे और चौथे चरण में उत्पन्न पिता का नाश करै॥६॥

अथ कन्याजन्मनिमूलजातचरणफलमाह

मूलस्य प्रथमे पादे पशुपीडा प्रजायते ।
द्वितीये चरणे जाता सर्वसौख्यप्रदा भवेत् ॥७॥
तृतीयांघ्रौ च मूलस्य पितृपक्षविनाशिनी ॥
चतुर्थांघ्रिप्रजाता स्त्री मातृपक्षक्षयंकरी ॥८॥

अर्थ–जो कन्या मूल के पहिले चरण में पैदा भई सो पशुओं को पीड़ा करती है और दूसरे चरण में पैदा भई सम्पूर्ण सौख्यदायिनी होती है॥७॥ और तीसरे चरण में पैदा भई पिता पक्ष का नाश करती है और चौथे चरण में पैदा भई माता पक्ष का नाश करती है॥८॥

अथ मूलाश्लेषाजातफलमाह–नारदः

सुतः सुता च नियतं श्वशुरं हंति मूलजा ।

अर्थ–जो लड़का लड़की निश्चय करके मूलनक्षत्र वा आश्लेषा नक्षत्र में पैदा होय तो वह श्वशुर का नाश करती है।

अथास्यापवादः

तदंत्यपादयोर्नैव तथाश्लेषाद्यपादजा ।।९।।

अर्थ–जो लड़का, लड़की मूलनक्षत्र के अंतिम चरण में पैदा होय और आश्लेषा नक्षत्र के पहिले चरण में पैदा होय तो मूलजात दोष नहीं है श्वशुर को शुभ है।।९।।

अथ श्वशुरादिहंत्रीयोगः

मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा तु तदंगनाम् ।
ऐंद्री तदग्रजं हंति देवरं तु द्विदैवजा ।।१०।।

अर्थ–जो कन्या मूल नक्षत्र में पैदा होती है वह श्वसुर का नाश करती है जो कन्या आश्लेषा नक्षत्र में पैदा भई वह सास का नाश करती है जो कन्या ज्येष्ठा नक्षत्र में पैदा भई वह पति के बड़े भाई का नाश करती है जो कन्या विशाखा नक्षत्र में पैदा भई वह देवर का नाश करती है।।१०।।

तथा च मूलजातफलं–श्रीपतिः

जननीं जनकं हंति भर्तुर्मूलाहिधिष्ण्यजा ।
द्वीशान्त्यपादजौ दुष्टौ तद्वज्ज्येष्ठान्त्यपादजा ।।११।।

अर्थ–जो कन्या मूलनक्षत्र में पैदा भई वह कन्या भर्ता के माता पिता का नाश करती है और विशाका नक्षत्र के अंतिम चरण में पैदा भई कन्या या पुत्र भर्ता के माता पिता को दुष्ट फल देते हैं तिस प्रकार ज्येष्ठानक्षत्र के अंतिमचरण में उत्पन्न कन्या पूर्वोक्त दुष्ट फल देती है।।११।।

तथा च मूलाऽऽश्लेषाजातफलं—गणपतिः

आश्लेषाख्यसमुत्पन्नौ श्वश्रूं कन्यासुतौ हतः ।
मूलजौ श्वशुरं हंति ज्येष्ठोत्था स्वधवाग्रजम् ।।१२।।

अर्थ—आश्लेषानक्षत्र में पैदा भई कन्या तथा पुत्र सास का नाश करते हैं और मूलनक्षत्र में उत्पन्न श्वशुर का नाश करते हैं और ज्येष्ठा नक्षत्र में पैदा भई कन्या स्वामी के बड़े भ्राता का नाश करे और लड़का बड़ी साली को नाश करे।।१२।।

अस्यापवादः

आश्लेषाप्रथमः पाद पादो मूलांतिमस्तथा ।
विशाखाज्येष्ठयोराद्यास्त्रयः पादाःशुभावहाः ।।१३।।

अर्थ—आश्लेषा नक्षत्र के पहिले चरण और मूलनक्षत्र का अंतिम चरण और विशाखा ज्येष्ठानक्षत्र के आदि का चरण इनमें पैदा हुआ बालक शुभ होता है और बाकी के तीन चरण नक्षत्र के नेष्ट हैं।।१३।।

अथ त्रिविधगण्डांतमाह—श्रीपतिः

पौष्णाऽश्विन्योः सार्पपित्रर्क्षयोश्च यत्र ज्येष्ठा-
मूलयोरंतरालम् । तद्गण्डं स्याच्चतुर्नाडिकं
हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ।।१४।।

अर्थ—रेवती अश्विनी आश्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इन नक्षत्रों के अंत आदि की चार चार घटी गण्डान्त कहाती हैं सो यात्रा जन्मकाल विवाह यज्ञोपवीत में नेष्ट फल देती हैं रे०आश्ले० ज्ये० इनकी अन्त की ४ घटी अश्वि०म०मू० आदि की ४ घटी नेष्ट हैं।।१४।।

अथ तिथिगण्डांतमाह—नारदः

पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडीद्वयं तथा ।

गंडांतं मृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥१५॥

अर्थ–पौर्णमासी प्रतिपदा पंचमी षष्ठी दशमी एकादशी इन तिथियों की दो दो घटी गण्डान्त कहाती हैं अर्थात् १५।५।१० इन तिथियों के अंत की एक एक घटी, १।६।११ इन तिथियों के आदि की एक एक घटी का नाम गण्डान्त है ये मृत्यु की देनेवाली हैं इनमें जन्म, यात्रा, विवाह, यज्ञोपवीतादि नेष्ट हैं॥१५॥

अथ लग्नगण्डांतमाह

कुलीरसिंहयोः कौर्प्यचापयोर्मीनमेषयोः
गण्डांतमंतरालंस्याद्धटिकार्द्धं मृतिप्रदम् ॥१६॥

अर्थ–कर्क–सिंह, वृश्चिक–धन, मीन–मेष, इन लग्नों की संधि की आधी घटी गण्डान्त कहाती हैं ४।८।१२ इन लग्नों के अंत की घटी के १५ पल और ५।९।१ इन लग्नों के आदि के १५ पल गण्डान्त कहाते हैं इनमें यात्रा विवाह जन्म यज्ञोपवीत करने से मृत्यु होती है॥१६॥

अथ गण्डान्तकालमाह

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ च जननीं तथा ।
संध्ययोर्हंति चात्मानं नास्ति गण्डे निरामयः ॥१७॥

अर्थ–दिन में उत्पन्न बालक गण्डान्त में होय तो पिता का नाश करै और रात्रि के समय गण्डान्त में उत्पन्न होय तो माता का नाश करै और दिनरात्रि की संधि के समय गण्डान्त में उत्पन्न होय तो अपनी आत्मा का नाश करता है गण्डान्त में उत्पन्न बालक निर्दोष नहीं होता है॥१७॥

अथ गण्डांतजाते दोषावधिज्ञानमाह–यवनः

वत्सरात्पितरं हंति मातरं तु त्रिवर्षतः ।
स्वात्मानं मासमेकं तु हंति गण्डो बुधैःस्मृतः ॥१८॥

अर्थ–गण्डान्त काल में उत्पन्न बालक पिता को एक वर्ष के भीतर नष्ट करता है और माता को तीन वर्ष के भीतर नष्ट करता है और अपनी आत्मा को एक मास में नाश करता है ये विद्वानों ने कहा है॥१८॥

अथ गण्डान्तजातानां त्यागमाह

सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते ।

अर्थ–जो बालक सम्पूर्ण कहे हुए गंडकाल में पैदा होय उसका परित्याग करना ही विधान है॥

अथ त्यागाशक्ताववधिज्ञानम्

वर्ज्जयेद्दर्शनं तावद्यावत्षाण्मासिको भवेत् ॥१९॥

अर्थ–जो गण्डान्त काल में उत्पन्न बालक होय उसका दर्शन तब तक वर्जित है जब तक छः महीने का न होय॥१९॥

अथ गडांतजातानां परिहारः

मूलसार्पादिजं पौष्णं स्यादपश्यति लग्नपे ।
सक्रूरेब्जे च विबले सुभदृष्टिविवर्जिते ॥
तदागण्डांतजातानां न दोषो मुनिभिः स्मृतः ॥२०॥

अर्थ–मूल आश्लेषा रेवती इन नक्षत्रों में पैदा हुआ बालक होय और चंद्रमा लग्नपति न देखता होय और पापग्रहोंसहित निर्बल चंद्रमा, शुभग्रहों की दृष्टिरहित होय तो उस गण्डांत में उत्पन्न बालक निर्दोषी होता है ऐसा मुनीश्वरों ने कहा है॥२०॥

अन्यच्च गडांतदोषापवादः

मूलाद्यपादौयदिरात्रिभागेतदात्मजान्नास्ति पितुर्विनाशः । द्वितीयपादो दिनगो यदि स्यान्न मातुरल्पोपि तदास्ति दोषः ॥२१॥

अर्थ–जो बालक मूलनक्षत्र के पहिले चरण में रात्रि के समय उत्पन्न होय तो वह बालक पिता का नाश नहीं करता है और मूलनक्षत्र के दूसरे चरण में दिन के समय पैदा होय तो वह बालक माता को दोष नहीं करता है।।२१।।

तथा च पितामहः

नक्षत्रतिथिगण्डांतं नास्तींदौ बलभाजिनि ।
तथैव लग्नगण्डांतं नास्ति जीवे बलान्विते ।।२२।।

अर्थ–जो बालक नक्षत्र और तिथि गंडान्त में पैदा होय और चंद्रमा बली होय तो निर्दोष जानो और लग्नगंडांत में बालक पैदा होय और बृहस्पति बली होय तो निर्दोष जानना चाहिये।।२२।।

अथान्यच्च परिहारः–वसिष्ठः

गण्डांतदोषमखिलं मुहूर्तोभिजिदाह्वयः ।
हंति तद्वन्मृगं व्याधः पक्षिसंघमिवाखिले ।।२३।।

अर्थ–जो बालक अखिल गंडांत दोष में उत्पन्न हो और जन्मसमय में अभिजित मुहूर्त होय तो जैसे व्याध मृगपक्षियों के समूह को नाश करे तिसी तरह अभिजित् सब गंडांत दोष नष्ट करै।।२३।।

अथ मूलवृक्षविचारः–नरपतिः

मूलं[७] स्तम्भ[८]स्त्वचा[१०] शाखा[११] पत्रं[१२] पुष्पं[५] फलं[४] शिखा[३] ।।
मुनयो[७]ष्टौ[८] दिशो[१०] रुद्राः[११] सूर्याः[११] पंचा[१२]ब्धयो[४]ग्नयः[३] ।।२४।।

अर्थ–मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए बालक का मूल वृक्ष में विचार करना चाहिये एक वृक्षाकार बनाकर उसकी जड़ में ७ घटिका और स्तंभ में ८ छाल में १० टहनियों में ११ पत्रों में १२ फलों में ४ और वृक्ष के शिरपै ३ इसी प्रकार नक्षत्र के ६० घड़ियों का नाश करे।।२४।।

अथास्यफलमाह–जपाणवे

मूले तु मूलनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम् ।
त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायामखिलस्य च ॥२५॥
पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मंत्रिपदं स्मृतम् ।
फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवनम् ॥२६॥

अर्थ–जिस बालक के जन्मकाल में नक्षत्र की घटी जड़ में आवे तो वह बालक मूल का नाश करे और थंभे में आनकर पड़े तो वंश का नाश करे और छाल में पड़े तो माता को क्लेश करे और शाखाओं में पड़े तो सब सौख्य प्राप्त करे॥२५॥ और पत्र में पड़े तो राज्यफल देवे फूल में पड़े तो वजीर करे और फलों में पड़े तो बहुत लक्ष्मी प्राप्त करे और शिखा में पड़े तो अल्पजीवी करे ये मूलनक्षत्र की ६० घड़ियों का फल विचार कर कहना नक्षत्र की जिन घड़ियों में पैदा होय उसी का विचार करना चाहिये॥२६॥

अथ जन्मनि मूलचक्रन्यासः–पितामहः

मूलस्य घटिकान्यासो मूर्ध्नि पंच नृपो भवेत् ।
मुखे सप्त मृतिः पित्रोः स्कंधे वेदा महाबलः ॥२७॥
बाह्वोरष्टौ बलीः कण्ठे तिस्रो हर्म्यान्वितो भवेत् ।
हृदि खेटा भूपमंत्री नाभौ द्वौ बलविद्भवेत् ॥२८॥
गुह्ये दशातिकामी स्याज्जानुनोः षण्महामतिः ।
पादयोः षण्मृतिस्तस्य चैतदुक्तं स्वयंभुवा ॥२९॥

अर्थ–कन्याओं के जन्मकाल में स्त्रियाकार स्वरूप बना कर उसकी चोटी में पांच घटी स्थापन करे वोह घटी में उत्पन्न लड़का लड़की राजा रानी होते हैं मुख में सात घटी मृत्युदायक पिता की होती है और कंधे में ४ घटी महाबली करती है॥२७॥ बाहों में ८ घटी बलदाता जानों

और कण्ठ में तीन घटी स्थानलाभ करती है हृदय में ९ घटी राजा का मंत्री करती है और टूडी में २ दो घटी बलदायक होती है।।२८।। कमर की दश १० घटी अतिकामी करती है और जंघाओं की ६ छः घटी बुद्धिमान् करती है और पैरों में ६ छः घटी मृत्युदायक होती है ये ब्रह्माजी ने कहा है।।२९।।

अथ मूलजनने कुलक्षयमाह

कृष्णेतृतीयादशमीवलक्षेभूतोमहीजार्किबुधैः समेतः ।
चेज्जन्मकालेकिलतत्रमूलमुन्मूलनंतत्कुरुतेकुलस्य।।३०।।

अर्थ–जिस कन्या का जन्म कृष्णपक्ष तीज तिथि मंगलवार आश्लेषा नक्षत्र में होय एको योगः कृष्णपक्ष की दशमीतिथि शनैश्चरवार ज्येष्ठानक्षत्र द्वितीयो योगः और चतुर्दशीतिथि बुधवार मूलनक्षत्र तृतीयो योगः इन तीनों योग में जो लड़का लड़की पैदा होय वह अपने कुल को जड़ से नाश करते हैं।।३०।।

अथ मूलजनने वेलाफलम्

दिवा सायं निशि प्रातः तातस्य मातुलस्य च ।
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ।।३१।।

अर्थ–जो बालक दिन में मूल नक्षत्र में पैदा होय वह पिता का नाश करे और सांयकाल के समय मूल में पैदा होय तो मामा का नाश करे और रात्रि के समय मूल में पैदा होय तो पशुओं का नाश करे और प्रातः काल के समय मूल में पैदा हो तो मित्रवर्गों को नेष्टफल देता है ये क्रम करके फल कहना चाहिये।।३१।।

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलम्

मूर्ध्नि पंच ५ मुखे पंच स्कंधयोर्घटिका ८ ष्टकम् । गजा
८ भ्वी २ भुजयोर्युग्मं २ हस्तयोर्हृदयेष्टकम् ८।३२

युग्मं नाभौ २ दिशो १० गुह्योषड्जान्वोः षट्च ६ पादयोः विन्यस्य पुरुषाकारे सार्पस्य फलमादिशेत् ॥३३॥

अर्थ–जो बालक आश्लेषा नक्षत्र में पैदा होय तो पुरुषाकार बनाकर नक्षत्र ६० घटियों का उस काल पुरुष के शरीर पर न्यास करे शिर ५ मुख ५ कंध ८ भुजा ८ हाथ २ हृदय ८ नाभि २ कमर १० जंघा ५ पैरों पर ६ इस प्रकार साठ घड़ियों का न्यास करना चाहिये॥३२॥ और इसी प्रकार पुरुषाकारपै मूलनक्षत्र की भी ६० घटियों का न्यास करना चाहिये॥३२॥३३॥

अथास्यफलम्

छत्रलाभः शिरो देशे वदने पितृकांतकम् ।
स्कंधयोर्द्धनहृत्त्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत ॥३४॥
हत्याकरं करद्वंद्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ।
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥३५॥
जंघायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीविताल्पता ।
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥३६॥
विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्प्ये तच्च विपर्ययात् ॥३७॥

अर्थ–जो बालक शिर की घड़ियों में उत्पन्न होय तो छत्र लाभ १ मुख की घड़ियों में पैदा होय तो पिता का नाश २ कंधे की घटी में धननाश ३ और दोनों बाहुकी घड़ियों में खोटे कर्म करनेवाला ४॥३४॥ दोनों हाथ की घड़ियों में उत्पन्न हत्या करे ५ हृदय की घड़ियों में राज्यप्राप्ति करावे ६ नाभि की घड़ियों में अल्पायु करै ७ कमर की घड़ियों में अद्भुत सुख करावे ८॥३५॥ जंघा की घड़ियों में उत्पन्न

भ्रमण करे ९ पैर की घड़ियों में उत्पन्न थोड़े दिन जीवे १० ये मूल नक्षत्र घड़ियों का फल निश्चय करके श्रेष्ठ मुनियों ने कहा है।।३६।। और आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न होय तो पहिले के समान उत्पन्न फल सम्पूर्ण पंडित जानकर कहै अर्थात् शिर की घड़ियों में उत्पन्न थोड़े दिन जीवे १ और मुँह की घड़ियों में उत्पन्न भ्रमण करे २ कंधे की घड़ियों में उत्पन्न अद्भुत सुख करे ३ और दोनों बाहों की घड़ियों में उत्पन्न थोड़े दिन जीवे ४ दोनों हाथों की घड़ियों में उत्पन्न राज्य प्राप्ति करे ५ हृदय की घड़ियों में उत्पन्न हत्या करे ६ नाभि के घड़ियों में उत्पन्न खोटे कर्म करे ७ कमर की घड़ियों में उत्पन्न धननाश करे ८ जंघाओं की घड़ियों में उत्पन्न पिता को अंत करै ९ पैरों की घड़ियों में उत्पन्न राज्य लाभ करे १० इस तरह आश्लेषाजात घड़ियों का फल कहना चाहिये।।३७।।

अथ मासवशान्मूलवासज्ञानमाह

मार्गफाल्गुनवैशाखे ज्येष्ठे मूलं रसातले ।
श्रावणे कार्तिके चैत्रे पौषे मूलं च भूतले ।।३८।।
आषाढ़े चाश्विने भाद्रे माघे मूलं दिवि स्थितम् ।

अर्थ–मार्गशिर फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ इन मासों में मूल पाताल लोक में वास करते हैं और श्रावण कार्तिक चैत्र पौष मास में मूल मृत्युलोक में वास करते हैं।।३८।। आषाढ़ आश्विन भाद्रपद माघ मास में मूल स्वर्ग में वास करते हैं।।

अथास्य फलमाह

स्वर्गे मूलं भवेद्राज्यं पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा मूलं तदा विघ्नं विनिर्दिशेत् ।।३९।।

इतिश्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डित-श्यामलालविरचितेस्त्रीजातके अभुक्तमूलजन्मवर्णनो नामपञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

अर्थ–जो बालक मूल में पैदा होय और मूल का वास स्वर्ग में होय तो राज्यदाता है और मूल का वास पाताललोक में होय तो धन का आगम करे और मृत्युलोक में मूल का वास तो विघ्न कहना चाहिये।।३९।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज
राजज्यौतिपिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी
हिन्दीटीकायामभुक्तमलफलवर्णनो नाम
पञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

अथ मूलजननशांतिरध्यायो निरूप्यते

तत्र शान्तिकालत्रयमाह–वशिष्ठः

शास्त्रोक्तरीत्या खलु सूतकांते
मासे तृतीयेप्यथ वत्सरांते ।।१।।

अर्थ–मूल नक्षत्र में पैदा हुए बालक की मूलशांति शास्त्रोक्त रीत्यनुसार सूतक के अंत में करना चाहिये या तीसरे महीने में करना चाहिये या वर्ष के अंत में करना उचित है।।१।।

अन्यच्च शांतिकालमाह–गर्गः

मातृगण्डे सुते जाते सूतकांते विचक्षणः ।
कुर्य्याच्छांतिं तदृक्षे वा तद्दोषस्यापनुत्तये ।।२।।

अर्थ–मातृगण्ड में उत्पन्न हुआ लड़का वा लड़की उसकी शांति सूतक निवृत्त होने पर करना चाहिये अथवा जिस नक्षत्र में बालक पैदा होय उस नक्षत्र में गण्डदोष निवृत्ति के अर्थ शांति करना उचित है।।२।।

अथ मूलजातिकालं कथयति–शौनकः

अथातः संप्रवक्ष्यामि मूलजातहिताय च ।
मातापित्रोर्धनस्यापि कुले शांतिहिताय च ॥३॥
जातस्य द्वादशाहे तु जन्मर्क्षे वा शुभे दिने ।
समाष्टके वा मतिमान्कुर्य्याद्वाऽतिविचक्षणः ॥४॥

अर्थ–इसके बाद शौनकजी कहते हैं मूलनक्षत्र में उत्पन्न हुए लड़का लड़की के हित के लिये माता और पिता धन और कुल के शान्ति के लिये।।३।। बालक के जन्मदिन से बारहवें दिन अथवा जन्मनक्षत्र में अथवा शुभदिन में या आठवें वर्ष में बुद्धिमान् अति आदर से शांति करे।।४।।

अथ कर्तव्यकालव्यवस्थानमाह–वसिष्ठः

सुसमे पुण्यदेशे च मंडपं कारयेद्बुधः ।
ऐशान्यामथवाप्राच्यामुदीच्यांदिशिकल्पयेत् ॥५॥
मंडपं चाष्टभिर्हस्तैश्चतुर्भिर्वा समंततः ।
चतुर्द्वारसमायुक्तं तोरणाद्यैरलंकृतम् ॥६॥
कुण्डं च तद्वहिः कुर्याद्ग्रहयज्ञोक्तमार्गतः ॥

अर्थ–अच्छे काल में पुण्यस्थान में पंडितजन मंडप बनावे मकान के ईशान कोण में अथवा पूर्व में या उत्तरदिशा में मण्डप बनावे।।५।। वह मण्डप आठ हाथ का अथवा चार हाथ का चौरस चार दरवाजासहित वंदनवार से अलंकृत करके।।६।। तिस मण्डप के वाहर ग्रहों के यज्ञरीति के माफिक कुण्ड बनावे।।

अथ कुण्डनिर्माणप्रकारः

कुण्डवत्तद्वहिर्भागे कारयेच्चतुरस्रकम् ।
वितस्तिद्वयखातंयत्सकुंडं चतुरङ्गुलम् ॥७॥

विप्राणां क्षत्रियाणांच चाङ्गुलत्रयसंयुतम् ।
वैश्यानां द्व्यंगुलाधिक्यं शूद्राणां हस्तमात्रकम् ॥८॥
प्रथमा मेखला तत्र द्वादशाङ्गुलविस्तृता ।
चतुरर्भिरंगुलैस्तस्याश्चोन्नतत्वं समंततः ॥९॥
तस्याश्चोपरि वप्रः स्याच्चतुरङ्गुलमुन्नतः ॥
अष्टाभिरङ्गुलैः सम्यग्विस्तीर्णश्च समंततः ॥१०॥
तस्योपरि पुनः कार्यो वप्रः सोपितृतीयकः ।
चतुरङ्गुलविस्तीर्णश्चोन्नतश्च तथाविधः ॥११॥
योनिश्च पश्चिमे भागे प्राङ्मुखी मध्यसंस्थिता ।
षडंगुलश्च विस्तीर्णा चायता द्वादशांगुलैः ॥१२॥
पृष्ठोन्नता गजस्येव सच्छिद्रा मध्यमोन्नता ॥
एवं लक्षणसंयुक्तं कुण्डमिष्टार्थसिद्धये ॥१३॥
अनेकदोषदं कुण्डं यत्र न्यूनाधिको भवेत् ॥१४॥

अर्थ–कुण्ड की तरह मण्डप के बाहर एक चौखुंटा कुण्ड बनावे दोविलस्त लंबा और दो विलस्त चौड़ा चार अंगुल गहरा है खात जिसका ऐसा कुण्ड बनावे॥७॥ परंतु ब्राह्मणों का कुण्ड एक हाथ चार अंगुल लंबा चौड़ा बनाना चाहिये क्षत्रियों के वास्ते एक हाथ तीन अंगुल लंबा चौड़ा बनाना चाहिये और वैश्यों के वास्ते एक हाथ दो अंगुल का कुण्ड बनाना चाहिये शूद्रों के वास्ते केवल एक हाथ लंबा चौड़ा कुण्ड बनाना चाहिये॥८॥ उस कुण्डल के ऊपर पहिले मेखला बारह अंगुल चौड़ी और चार अंगुल ऊंची बनाना चाहिये॥९॥ उस मेखला के ऊपर चार अंगुल ऊंची और आठ अंगुल चौड़ा वप्र बनाना चाहिये॥१०॥ तिसके ऊपर फिर तीसरा वप्र बनावे चार अंगुल लंबा और चार अंगुल ऊंचा वप्र बनाना चाहिये॥११॥ कुण्ड के पश्चिम की तरफ पूर्व को है

मुख जिसका कुण्ड के वप्र में छः अंगुल चौड़ी बारह अंगुल लंबी योनि बनावे अर्थात् भगाकार स्वरूप बनाना चाहिये।।१२।। वह योनि पीठ की तरफ से ऊंची बीच में छेद जिसके और बीच में ऊंचाई लिये होना चाहिये इन लक्षणों से सहित जो कुण्ड है सो इष्ट अर्थात् सब प्रकार के मनोरथ सिद्धिदायक होते हैं।।१३।। और जो पहिले कहा हुआ कुण्ड जो कमती बढ़ती होय तो अनेक प्रकार के दोष देता है।।१४।।

कुण्डस्वरूपम्
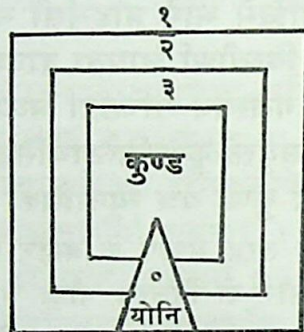
अथ पञ्चामृतमाह

पंचामृतं पंचगव्यं पंच त्वक्पल्लवानि च ।।
उदुंबरवटाश्वत्थप्लक्षाम्रत्वक्सपल्लवाः ।।१५।।
रोचनं कुंकुमं शंखं गजदंतं च गुग्गुलम् ।।
शतौषधीमूलशंखं नवरत्नानि मृत्तिका ।।१६।।

अर्थ—पंचामृत—पंचगव्य—पांचछाल—पंचपल्लव—एकत्रित करना चाहिये गौ का दूध—घृत—दधि—सहत—खाण्ड—इन चीजों को मिला देने

से पंचामृत बनता है।

अथ पंचगव्यमाह–गौ के दूध–घी–दधि गोबर गोमूत्र इन चीजों को इकट्ठा करने से पंचगव्य कहाता है।

अथ पञ्चत्वचा तथा पंचपल्लवान्याह–गूलर–बरगद–पीपल पाकड़–आम्र इन वृक्षों की छाल को पंचत्वक् कहते हैं और इन्हीं पांचों वृक्षों के पत्ती को इकट्ठा करने से पंचपल्लव कहा जाता है।।१५।। गोरोचन–रोली–शंख–हाथीदांत गूगल सौ औषधियों की जड़–शंख नवरत्न अष्टमृत्तिका इनको एकत्रित करना चाहिये परंतु "स्योनापृथिवि" इस मंत्र करके अष्टमृत्तिका एकत्रित करे।।१६।।

अथाष्टमृत्तिकामाह

गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमस्थानसंभवाः ।।
ह्रदगोराजनगरद्वारतश्चाष्टमृत्तिकाः ।।१७।।

अर्थ–गजशाला–अश्वशाला मार्ग–बांबी–नदियों के मेल की जगह वा दो रास्ते जहां मिले होंय तालाब गोशाला राजा के दर्वाजे की नगर के द्वार की ये मृत्तिका आठ कही हैं।।१७।।

अथ शतौषधीमूलमाह–वसिष्ठः

श्रीवृक्षो बिल्वखदिरविष्णुक्रांता पुनर्नवा ।
देवदारु जटामांसी सहदेवी मुरा शिवा ।।१८।।
फलिनी बकुला जाती कला मांजिष्ठसंज्ञकाः ।
वटप्लक्षाऽश्वनीवारखदिरामल्लिकार्जुनाः ।।१९।।
मदयन्ती महाजाती निंबोशीरहरिद्रकाः ।
सर्पाक्षी तुलसी रौद्रा कुटा दाडिमचंपकाः ।।२०।।
मातुलिङ्गं जयो रक्ता कर्णिका ऐणकांचनाः ।
सेवंती पनसो द्राक्षा विश्वाक्षी श्वेतसर्षपाः ।।२१।।

राजीवकुंदमुकुलनीलोत्पलकरंजका: ।
पुन्नागं चंदनं द्रोणमदारौ हेमदुग्धिका ।।२२।।
रक्तचंदनजंबीरयूथिकागृहमल्लिका: ।
शम्यर्कसिंदुवारेंद्ररक्तधत्तूरशाडिमा: ।।२३।।
अपामार्गं च पालाशं बृहती करवीरक: ।
नंद्यावर्तकुबेराक्षीपाटलाहेमपुष्पिका: ।।२४।।
शिरीषामलकाशोकरक्तागस्तिकपित्थका: ।
बंधूकभृंगराजाख्यकृष्णा वै माधवी लता ।।२५।।
चातुर्जातो बर्हिशिखा कुटजो मेघबिम्बक: ।
तमालमरुपुष्पेंद्रपुष्पाख्या: शुक्रमर्दिनी ।।२६।।
बाकुचीशाल्मलीमौडीराल्लाखर्वपटोलिका: ।
महाखर्जूरिकानारीकेलाख्यास्ते शतद्रुमा: ।।२७।।

अर्थ–सरीफा १ बेल २ खैर ३ विष्णुक्रांता ४ पुनर्नवा ५ देवदारु ६ जटामांसी ७ सहदेई ८ वालछड़ ९ हरड़ १०।।१८।। मालकांगनी ११ मौलसिरी १२ जायफल १३ मजीठ १४ वरगद १५ पाकड १६ आम १७ समा १८ खदिर अन्य वृक्षभेद १९ चमेली २० अर्जुन २१ ।।१९।। वनचमेली २२ वासंती २३ नीम २४ खस २५ हलदी २६ नागफली २७ तुलसी २८ रौद्रा वृक्षभेद २९ कुडा ३० दाड़मी ३१ चंपा ३२ ।।२०।। विजौरा ३३ गुलदुपहरिया ३४ गूघची ३५ करनैल ३६ अडौआ ३७ धतूरा ३८ सेवती ३९ कटहर ४० मुनक्का ४१ शतावर ४२ सफेदसर्सो ४३ ।।२१।। कमल ४४ कुंद ४५ मुकुल ४६ नीलकमल ४७ कंजा ४८ नागकेसर ४९ चंदन ५० द्रोणवृक्ष ५१ मंदार वृक्ष ५२ पीलाथोह ५३ ।।२२।। लालचंदन ५४ जंभीरी ५५ जूही ५६ बागचमेली ५७ जण्ड ५८ आक ५९ निर्गुण्डी ६० इलायची ६१ लालधतूरा ६२ शाडिमा वृक्षभेद

६३ ॥२३॥ अंदाझाडा ६४ ढाक ६५ कटैया ६६ करनेल ६७ बंदावर्त वृक्षविशेष ६८ कुबेराशी वृक्षविशेष ६९ पाटल ७० पीली चमेली ७१ ॥२४॥ सिरस ७२ आँवला ७३ अशोक ७४ लालअगस्त ७५ कैथ ७६ विजयसार ७७ भाँगरा ७८ पीपल ७९ माधवीलता ८० ॥२५॥ चातुर्जात अर्थात् केसर ८१ दालचीनी ८२ तेजपात ८३ लाल इलायची ८४ मोरशिखा ८५ ॥२६॥ इंद्रजौ ८६ मुलहटी ८७ इंद्रायण ८८ तमाल ८९ मरुपुष्पा वृक्षविशेष ९० ऐंद्रपुष्पाकलियारी ९१ शुक्रमर्दिनी अर्थात् चित्रक ९२ बाकुची ९३ सेमर ९४ मुण्डी ९५ राल ९६ खर्व अर्थात् कुब्जक ९७ परवल ९८ बड़ी खजूर ९९ नारियल १०० ॥२७॥ ये सौ वृक्षों के नाम कहे अब विद्वानों को चाहिये कि जिस वृक्ष का नाम न मालूम हो सके उस नाम को कोषादि अनेक ग्रंथ अर्थात् शब्दकल्पद्रुम शब्दस्तोममहोदधि वाचस्पत्यबृहदभिधान शब्दार्थचिंतामणि इन कोषों में ढुंढ़वा लेवे॥

अथ ग्रंथांतरे शतौषधीराह

एषां मूलानि सर्वाणि गृहीत्वैनो नुदंति यत् ।
शांतिकर्मणि सर्वत्र निक्षिपेत्कलशोदके ॥२८॥

अर्थ–पाषाणभेद १ सहदेई २ विष्णुक्रांता ३ गईहसठ ४ शंखाहूली ५ मोरशिखा ६ चिकसी ७ लक्ष्मणा ८ नीलकंठी ९ चोरा १० घीकुवार ११ पाढ़र १२ इश्वरलिंगी १३ परवल १४ घुसरायिन १५ चक्रांगी १६ मालकांगनी १७ रुद्रवंती १८ अंदाझाड़ा १९ श्वेतवीर्या २० स्यामरवासन २१ हसलीश्वेत २२ फरफेटुआ २३ शतावर २४ अंधाहूली २५ सेमर की जड़ २६ असगंध २७ मिउड़ी २८ देवदारू २९ पाकड़ ३० वड़ ३१ गूलर ३२ पीपल ३३ आम्र ३४ पियावांसा ३५ विशोटा ३६ झाड़ु ३७ छिड़कर ३८ सिंहमुखी ३९ भाँगरा ४० जमनी ४१ बेत ४२

नदीवृक्ष ४३ नागकेसर ४४ अर्जुनवृक्ष ४५ पाढ ४६ बिवरेली ४७ चमेली ४८ केतकी ४९ चांदनी ५० केरा ५१ बिजौरा ५२ जयंती ५३ जवासा ५४ अनार ५६ गूमा ५६ बांसके पत्ते ५७ कायफल ५८ खस ५९ चंपा ६० पदमाख ६१ सूर्यमुखी ६२ अशोक ६३ माधवीलता ६४ कुंद ६५ मौलसिरी ६६ गुड़हर ६७ केरा ६८ गोमती ६९ आँवला ७० ब्रह्मी ७१ धत्तूरा ७२ कचनार ७३ कफही ७४ कसौधी ७५ अजमाइन ७६ भारंगी ७७ गिलोय ७८ कमलंगट्टा ७९ अपराजिता ८० कैत ८१ जिमीकंद ८२ बेहू ८३ वड़हर ८४ कुक्ष ८५ काश ८६ कटहर ८७ बैर की जड़ ८८ दारुहलदी ८९ हिरनी ९० हड़ ९१ अगर ९२ बालछड़ ९३ तुलसी ९४ शिरस ९५ हुलहुला ९६ नीम ९७ बकाइन ९८ चीता ९९ पिंडगिलोय १०० इन एक सौ औषधियों को प्रेरणा करके ग्रहण करके सब जगह शांतिकर्म में जलपूरित कुम्भ में डालना चाहिये।।२८।।

अथ शतौषधीनामभावे दशौषधीराह

कुलमांसी हरिद्रे दे मुराशैलेयचन्दनम् ।
वचाचंपकहस्ताश्च सर्वौषध्यो दशैव हि ।।२९।।
एषामभावे तु दश सर्वौषध्यो दशैव हि ।।३०।।

अर्थ- मौलसिरी १ जटामांसी २ हलदी ३ आमाहलदी ४ बालछड़ ५ पाषाणभेद ६ चंदन ७ वच ८ चंपा ९ हस्ता १० ये दशौषधी ही सर्वौषधी कहाती हैं।।२९।। जो एक सौ औषधी कही है ये न मिलें तो यही सर्वौषधी कहाती हैं।।३०।।

अथ दशौषधीनामभावे चतुरौषधीराह

विष्णुक्रांता सहदेवी तुलसी च शतावरी ।
मूलानीमानि गृह्णीयाद्दशालाभे विशेषतः ।।३१।।

अर्थ–विष्णुक्रांता सहदेई तुलसी शतावर ४ इन चारों औषधियों के

मूल को ग्रहण करे जो दशौषधी का अभाव होय तो इनको ही सर्वौषधी जाने।।३१।।

अथ सप्तबीजान्याह

तिलमाषयवव्रीहिगोधूमाश्चप्रियंगवः ।
चणकैः सहितानीति सप्तबीजानि सर्वदा ।।३२।।

अर्थ–तिल १ उड़द २ जौ ३ कुकनी ४ गेहूं ५ प्रियंगुराले चावल ६ चना ७ ये सात बीज श्रेष्ठ कहे हैं।।३२।।

अथ नवरत्नमाह

माणिक्यविद्रुमं मुक्ताफलं वैडूर्यनीलकम् ।
वज्रं गारुत्मतं पुष्परागं गोमेदसंज्ञकम् ।।३३।।

अर्थ–मानक १ मूँगा २ मोती ३ वैडूर्यमणि ४ नीलम ५ हीरा ६ गारुत्मत ७ पुष्पराज ८ गोमेद ९ ये सब रत्न कहे हैं इनको कुम्भ में डाले।।३३।।

अथ पंचरत्नमाह

वज्रमौक्तिकवैडूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् ।
पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मंत्रैः कुंभेषु निक्षिपेत् ।।३४।।

अर्थ–हीरा १ मोती २ वैडूर्य ३ पुष्पराज ४ नीलम ५ ये पंचरत्न कहे जाते हैं जो नवरत्न न मिले तो मंत्रों करके कुंभ में पंचरत्न ही डालना चाहिये।।३४।।

अथ मूर्तिप्रमाणम्

सुवर्णेन प्रमाणेन तदर्धार्धेन वा पुनः ।
निर्ऋतिप्रतिमां कुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः ।।३५।।

अर्थ–तोले भर की छः मासे की वा तीन मासे की सुवर्ण की देवता की प्रतिमा बनावे परन्तु अपनी शक्ति के माफिक प्रतिमा बनावे कम

ज्यादे न बनाना चाहिये।।३५।।

ग्रंथांतरेण मूर्तिमानमाह–शौनकः

पलमानेन चार्द्धेन पादेनाथ स्वशक्तितः ।
नक्षत्रदेवतारूपं कारयित्वा विचक्षणः ।।३६।।

अर्थ–सोलह मासे वा आठ मासे की वा चारमासे की या अपनी शक्त्यनुसार नक्षत्र देवता का रूप बनाना चाहिये।।३६।।

अथ मूर्त्यभावे मूल्यमाह

मूल्यं सुवर्णस्य पुनः स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।
सुवर्णं सर्वदैवत्यं सर्वदेवात्मकोनलः ।।३७।।
सर्वदेवात्मको विप्रः सर्वदेवमयो हरिः ।।

अर्थ–जो सुवर्ण की मूर्ति बनाने में श्रद्धा न होय तो उसका मूल्य प्रतिमा की जगे स्थापित करके पूजा करे क्योंकि सब देवता सुवर्ण में वास करते हैं और अग्नि भी सर्वदेवमय है।।३७।। और ब्राह्मण भी सर्वदेवमय है और विष्णुभगवान् भी सर्वदेवमय जानो।।

अथ पूजनविधिः

वस्त्राणि षोडशाष्टौ च शुक्लसूक्ष्माण्यतंद्रितः ।।३८।।
ब्राह्मणान्वरयेत्पश्चात्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।
श्रोत्रियांश्चतुरोष्टौ च द्वादश त्वथ षोडश ।।३९।।
प्रधानाचार्यमेतेषां श्रेष्ठं तत्प्रतिमार्चनम् ।
ईशानादिचतुष्कोणेष्वव्रणाञ्जलपूरितान् ।।४०।।
पूर्वोक्तद्रव्यसंयुक्तान्स्थापयेद्रक्तवर्णकान् ।
विप्रान्पृथक्पृथग्वापि मधुपर्कादिनार्चयेत् ।।४१।।

अर्थ–सोलह वा आठ वस्त्र सफेद बारीक विना आलस्य के देके।।३८।। पीछे से ब्राह्मणों को स्वस्तिवाचन सहित वरण करै यज्ञ के

करनेवाले चार वा आठ वा बारह षोडश ।।३९।। इतने प्रधान आचार्य श्रेष्ठ प्रतिमा का पूजन करैं ईशान दिशा को आदि लेकर आग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य जलपूरित घट स्थापित करैं।।४०।। पहिले कही हुई औषधियोंसहित लालवर्ण के घट स्थापित करैं अलग अलग ब्राह्मणों को पाद्य अर्घ्य आचमन मधुपर्कादि रीति से पूजन करैं।।४१।।

द्वारेषु जापकानष्टौ द्वौ द्वौ च वरयेत्पुनः ।
आप्यैर्वा वारुणैर्मंत्रैः शुक्लपुष्पाक्षतादिभिः ।।४२।।
तत्कुम्भस्थजलं स्पृष्ट्वा कुशकूर्चैर्जपेदिति। ।
रुद्रसूक्तं च भद्राग्नेरानो भद्रा इति क्रमात् ।।४३।।
पुरुषसूक्तं च तन्मन्त्रैर्देवान्ध्यात्वा प्रयत्नतः ।
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।।४४।।
पंचगव्यमिदं कुम्भे क्षिपेद्गजमदान्वितम् ।
रजतं कांचनं ताम्रं विद्रुमं तीर्थवारि च ।।४५।।

अर्थ–मंडपद्वारों में आठ जप करनेवाले अर्थात् एक द्वार में दो जप करनेवाले (आप्यैरिति) या वरुण मंत्र करके सफेद पुष्प अक्षतों करके वरण करै।।४२।। तिस कुम्भ के विषे जल को स्पर्श कर (कुशकूर्चे) इस मंत्र का जप करे (रुद्रसूक्त) और (भद्राग्ने आनोभद्रा) मंत्रों से क्रम करके ।।४३।। और पुरुषसूक्त और पूर्वोक्तमंत्रों करके यत्न करके देवताओं का ध्यान करके गोमूत्र गोबर गोदधि गोघृत और कुशजल।।४४।। ये पंचगव्य उस घट में डालना हाथी के मदसहित चांदी, सोना, ताँवा, मूँगा, तीर्थों का जल।।४५।।

निक्षिपेद्धेमसूलं च दशाष्टयवनिर्मितम् ।
देवदारुं च शैलेयपद्मनीलोत्पलं तथा ।।४६।।
वचालोध्रप्रियंगुं च शतच्छिद्रे घटे क्षिपेत् ।

वंशपात्रोपरि न्यस्तं शतच्छिद्रे घटे स्थितम् ।।४७।।
ततश्च निर्ऋतिं देवमर्चयेत्पश्चिमामुखम् ।
मोषुणस्त्विवतिमंत्रेण शुक्लवस्त्राक्षतादिभिः ।।४८।।

अर्थ–अठारह यवपरिमित हेममूल और देवदारु, छलीरा, कमल, नीलकमल।।४६।। वच, लोध, कुकनी ये सम्पूर्ण चीजें सौ छिद्र के घट* के विषे स्थित करे।।४७।। तिसके बाद नक्षत्र देवता को पश्चिममुख होकर पूजन करै (मोषुणस्त्विवति) मंत्र करके सफेद फूल और वस्त्र अक्षतादिकों करके पूजन करना चाहिये।।४८।।

अथ मूलस्वरूपमाह

मूलरूपं विधातव्यं श्यामं कुणपवाहनम् ।
खड्गखेटधरं चोग्रं द्विमुखं च वृकाननम् ।।४९।।
चरुं च श्रपयेत्तत्र नैर्ऋतिं दुष्कृतापहम् ।
स्थापयेत्तु ग्रहांश्चैव वस्त्रगंधादिभिर्यजेत् ।।५०।।

अर्थ–फिर मूल नक्षत्र के रूप का विधान करे–काला है वर्ण. मुरदा है वाहन, तलवार और खेट को धारण करे दो हैं मुख बैलकासा है आनन जिसका।।४९।। चरु करके नक्षत्रदेवता को पाप नाश करने के लिये और ग्रहों को स्थापन करे तथा वस्त्र गंधादिकों करके पूजन करना चाहिये।।५०।।

---

* चार घट चारो दिशा में स्थापन करे एक घट अलग रुद्रस्थापनके अर्थ स्थित करे एक सौ छेद के घड़े में देवदारु शैलेय इत्यादि औषधी सुवर्णमूल अठारह यवपरिमित डालकर बांस की डलिये में रखकर उसके ऊपर कपड़ा बाधकर नक्षत्र देवता की प्रतिमा रुद्रप्रतिमा जलप्रतिमा सहित स्थापन करै और उसका षोडशोपचार पूजन करना।

उक्तं च शौनकेन

पुण्यादिमंत्रितैस्तोयैः प्रोक्षितायां क्षितौ ततः ।
तत्रोदकुम्भंसुश्लक्ष्णं रक्तं व्रणविवर्जितम् ॥५१॥
आकृष्णमूलनिर्णीतं पूरयेन्निर्मलाम्भसा ।
आकलशेष्वित्यनया कलशस्थापनं शुभम् ॥५२॥

अर्थ–पुण्यादि मंत्रों करके जल करके जल के कुम्भ को देखकर घट और जल सुन्दर टूटा न होय कोई छेद न होय॥५१॥ आकृष्ण मूल जो कहा है उस करके निर्मल जल से घट पूरणकर (आकलशेति) मंत्र करके कलश का स्थापन करना शुभ है॥५२॥

इमं मे इति मंत्रेण पूरयेत्तीर्थवारिणा ।
कुर्वन्हेमसमायुक्तं कृतपल्लवसंयुतम् ॥५३॥
स्वस्तिकोपरि विन्यस्य क्षीरद्रुमसपल्लवैः ।
द्रोणव्रीहिश्चनिक्षिप्य ईशाने च निधापयेत् ॥५४॥
पंचरत्नानि निक्षिप्य सर्वौषधिसमन्वितम् ।
अर्चितं गंधपुष्पाद्यैः श्रीरुद्रं तत्र पूजयेत् ॥५५॥
तत्र प्रतिरथं सूक्तं शतरुद्रानुवाचकम् ।
रक्षामंत्रं तथा पुण्यै रक्षोघ्नं च स्पृशञ्जपेत् ॥५६॥

अर्थ–(इमं मे) इस मंत्र करके तीर्थों के जल से पूरण करे हेममूल सहित करके पंचपल्लवसहित॥५२॥ स्वस्तिवाचन करके दूध वृक्ष पल्लव सहित घट के ऊपर न्यास करे व तीसशेर धान की ढेरी करके उस पर ईशानादि दिशा में घट को स्थापन करना॥५४॥ पंचरत्न डालकर सम्पूर्ण औषधियोंसहित घट को गंध पुष्पाक्षतादिकों करके पूजन करे और श्रीरुद्रमंत्र को जप करे॥५५॥ तिसके प्रति वेदोक्त सूक्त और शतरुद्रीपाठ रक्षामंत्र तथा पुण्याह वाचन (रक्षोघ्नं) इस मंत्र

करके स्पर्श कर जप करे॥५६॥

त्र्यंबकं च जपेत्सम्यगष्टोत्तरसहस्रकम् ।
एकवारं तथा जाप्यं पावमानीपृशञ्ज्जपेत् ॥५७॥
जपार्थं पंच कुम्भांश्च पुत्रपित्रोर्द्वयं यथा ।
प्रस्रवंतोऽभितस्ते च च्छन्ना वस्त्रैश्च पंचभिः ॥५८॥
वस्त्रावगुंठितान्कुंभान्पूरयेत्तीर्थवारिणा ।
पंचरत्नसमायुक्तानाम्रपल्लवशोभितान् ॥५९॥

अर्थ–(त्र्यंबकं) मंत्र को अष्टोत्तर सहस्र १००८ भले प्रकार जप करे एक समय तैसे ही जप करके (पाव मानी) इस मंत्र से स्पर्श कर जप करे॥५७॥ जप के पाँच कुम्भ और दो पिता पुत्र के चारों तरफ से झरते होयँ पाँच वस्त्रों करके आच्छादित करे॥५८॥ कपड़े से बांधकर तीर्थों के जल से पूर्ण कर पंचरत्नसहित आम्रपल्लव करके शोभायमान करना चाहिये॥५९॥

तेषामुपरि पात्राणि हेममृद्रौप्यजानि च ।
शुद्धवस्त्रैश्च संछाद्य शतमूलानि निक्षिपेत् ॥६०॥
कुम्भोपरि न्यसेद्विद्वान्मूलनक्षत्रदेवताम् ।
अधिप्रत्यधिदेवौ च दक्षिणोत्तरदेशतः ॥६१॥
अधिदेवं जपेदादौ ज्येष्ठानक्षत्रदेवताम् ।
एवं प्रत्यधिदेवं च पूर्वाषाढर्क्षदैवतम् ॥६२॥

अर्थ–उन घटों के ऊपर सोना व चांदी या मृत्तिका का पात्र धरे साफ कपड़े से आच्छादित करके सौ वृक्षों की जड़ डालकर॥६०॥ घट के ऊपर पंडितजन मूल नक्षत्र के देवता स्थापित करै इसी प्रकार प्रत्यधिदेवता के घट को दक्षिणोत्तर देश में स्थापन करे॥६१॥ पहिले अधिदेवता का जप करे ज्येष्ठानक्षत्र के देवता का नाम अधिदेवता है

इसी प्रकार प्रत्यधिदेवता का घट और जप करे पूर्वाषाढ़नक्षत्र के देवता का नाम प्रत्यधिदेवता है।।६२।।

अथाधिदेवतास्वरूपम्

महाकायो वज्रधरो ग्रहेंद्रो गजवाहनः ।
द्विभुजश्च जलं पद्मं गृह्णंश्चन्दनचर्चितः ।।६३।।

अर्थ–बड़ा है शरीर जिनका; वज्र को धारण किये ग्रहों के राजा, हाथी है वाहन, जलसम, दो हैं भुजा, कमल हाथ में चंदन लेपित शरीर जिसका ऐसा प्रत्यधिदेवता का स्वरूप जानो।।६३।।

अथ पूजाप्रकारः

स्वलिङ्गोक्तैश्च मंत्रैश्च प्रधानादीन्प्रपूजयेत् ।
पंचामृतेन संस्नाप्य ह्यावाह्याथ समर्चयेत् ।।६४।।
उपचारैः षोडशभिर्यद्वा पंचोपचारकैः ।
रक्तचंदनगंधाद्यैः पुष्पैः कृष्णसितादिभिः ।।६५।।
मेषशृंगादिधूपैश्च घृतदीपैस्तथैव च ।
सुरापोलिकमांसाद्यैर्नैवेद्यैर्भोजनादिभिः ।।६६।।

अर्थ–स्वलिङ्गोक्त मंत्रों करके प्रधानादिकों का पूजन करे पंचामृत से स्नान करावे आवाहन करके पूजन करे।।६४।। षोडशोपचार करके अथवा पंचोपचार करके लालचंदन गंध पुष्प श्याम श्वेत करके पूजन करे।।६५।। मेषशृंगादिधूप करके घृतदीप शराब पोलिक मांस को आदि लेकर नैवेद्य करके भोजनादिक से पूजन करना चाहिये।।६६।।

अथ द्विजातीनां मत्स्यमांसनिषेधः

मत्स्यमांससुरादीनि ब्राह्मणानां विवर्जयेत् ।
सुरास्थाने प्रदातव्यं क्षीरं सैंधवमिश्रितम् ।।६७।।
पायसं लवणोपेतं मांसस्थाने प्रकल्पयेत् ।
उक्तगंधाद्यभावे तु यथालाभं समर्चयेत् ।।६८।।

अर्थ—मछली का मांस और शराब ब्राह्मणों को भोजन में नहीं देना चाहिये जहां शराब चढ़ाने की जगह हो वहां दूध में सैंधव नमक मिलाकर चढ़ाना चाहिये।।६७।। और खीर में नमक मिलाकर मांस की जगह स्थापन कर चढ़ाना चाहिये और जो उक्त गंधादि चीजें कही हैं वे न मिलें तो जो वस्तु मिले उसीसे पूजन करना चाहिये।।६८।।

पुष्पांतं तु समभ्यर्च्य होमं कुर्याद्यथाविधि ।
निर्वापप्रोक्षणादीनि चाग्नेै कुर्य्याद्यथाविधि ।।६९।।
हव्यं गृहीत्वा विधिवन्नैर्ऋत्येति ऋचा हुनेत् ।।७०।।

अर्थ—अन्त में पुष्पों को समर्पण करके यथाविधि हवन करना प्रोक्षणादि पात्रों को निर्वाप करके यथाविधि अग्नि में करे।।६९।। उनको विधिवत् ग्रहण कर नैऋत्येति इस ऋचा करके हवन करना चाहिये।।७०।।

अथ हवनविधिमाह—वसिष्ठः

पालाशसमिदाज्येन चरुणाष्टसहस्रकम् ।
अथवाष्टोत्तरशतं प्रत्येकं जुहुयात्ततः ।।७१।।
मूलं प्रजामित्यष्टाभिर्वाक्यैर्मंत्रद्वयेन च ।
सावित्रसोमनैर्ऋत्यैर्मंत्रैरश्वत्थसंभवैः ।।७२।।

अर्थ—ढाक की समिधों में घी के चरु करके आठ हजार (८०००) अथवा अष्टोत्तर सहस्र (१००८) हर एक हवन करे।।७१।। (मूलप्रजामिति) आठ वाक्यों करके दोनों मंत्रों से मूलाय स्वाहा प्रजापतये स्वाहा सावित्र सोमनैर्ऋत्यैः मंत्रों करके पीपल की।।७२।।

समिद्भिश्च तिलव्रीहीन् हुत्वा व्याहृतिमंत्रतः ।
मूलं प्रजाभिरित्यष्टौ वाक्यानि नव वै जपेत् ।।७३।।

अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा नियतात्मवान् ।
अयं होमप्रकारस्तु शाखांतरविशोधितः ॥७४॥
मोषुणः परापरेति यत्तेदेवेति वा पुनः ॥
पायसं घृतमिश्रं च हुनेदष्टोत्तरं शतम् ॥७५॥

अर्थ–समिधों करके तिल और धान साठी के हवन करे व्याहृतियों के मन्त्र करके (मूलं प्रजाभिः) इन आठ वाक्यों करके नौ बार जप करना॥७३॥ अष्टोत्तर सहस्र (१००८) वा एक सौ आठ वार (१०८) नियत करके जप करे ये होम का प्रकार कहा अपनी शाखाओं करके जप करे॥७४॥ (मोषुणः परापरेति) इस मंत्र करके (यत्ते देवेति) मंत्र करके करना चाहिये ॥७५॥

समिधाज्यचरूनात्मशक्तितः संख्यया हुनेत् ॥
अधिदैवतयोश्चैव जुहुयात्स्वमंत्रकैः ॥७६॥
नक्षत्रदेवताभ्यश्च पायसेन तु होमयेत् ॥
कृणुष्वेति पंचदशभिर्जुहुयात्कृसरं ततः ॥७७॥

अर्थ–समिधें, घृत, अन्यचरुके अपनी शक्त्यनुसार हवन करे अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताओं के मंत्र से हवन करना चाहिये॥७६॥ नक्षत्र देवता के अर्थ खीर से हवन करे (कृणुष्वेति) मंत्र करके पंद्रह बार चंडीका हवन करना चाहिये॥७७॥

गायत्र्या जातवेदेति अष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥
साशपुंजतितामग्निवास्तोष्पतिमेवच ॥७८॥
क्षेत्रस्य पतिनेत्येवमग्निंदूतं तथैव च ॥
श्रीसूक्तेन तथा विद्वान् समिदाज्यं चरून्क्रमात् ॥७९॥
अष्टोत्तरशतैर्वाथ ह्यष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥
अष्टाष्टसंख्यया वापि जुहुयाच्छक्तितो बुधः ॥८०॥

अर्थ–(गायत्र्या जातवेदसं) इस मंत्र करके २८ अट्ठाईस बार क्रम करके निरंतर अग्नि में देना चाहिये और वास्तोष्पति इस मंत्र करके॥७८॥ और क्षेत्रपतिना० अग्निंदूतं इसी प्रकार (श्रीसूक्त करके) पंडित जन समिधों में घृत और चरु करके क्रम से॥७९॥ अष्टोत्तरशत १०८ वा अष्टाविंशति क्रम करके अथवा आठ आठ संख्या करके शक्त्यनुसार पंडित हवन करे॥८०॥

त्वं सोमेन पायसञ्च जुहुयात्तु त्रयोदश ॥
चतुर्गृहीतमाज्यं च यातेरुद्रेति मंत्रतः ॥८१॥
स्रुवेण जुहुयादाज्यं महाव्याहृतिभिः क्रमात् ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं पश्चात्प्रायश्चित्ताहुतीर्हुनेत् ॥८२॥
आचार्य्यो यजमानो वा चाग्नौ पूर्णाहुतिं हुनेत् ॥
होमशेषं समाप्याथ वह्निमारोपयेत्ततः ॥८३॥

अर्थ–(त्वं सोमेन) इस मंत्र करके तेरह मरतबे आहुति देना और (याते रुद्रेति) मंत्र करके ४ आहुति घृत की देय॥८१॥ वेदोक्त व्याहृतियों करके घृत का हवन करे हवन करने के बाद स्विष्टकृत् हवन करके प्रायश्चित्त की आहुति देय॥८२॥ आचार्य्य और यजमान अग्नि में पूर्णाहुति देय अशेष हवन की शांति के लिये अग्नि को आरोपण करै॥८३॥

कुम्भाभिमंत्रणं कुर्य्याद्दक्षिणेनाभिमंत्रयेत् ॥
मृत्युप्रशमनार्थं च जपेत्त्रयंबकमंत्रकम् ॥८४॥
रुद्रकुम्भोक्तमार्गेण रुद्रमंत्रं स्पृशन्क्षिपेत् ॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं कुंभेषु विनिवेदयेत् ॥८५॥
प्रसादयेत्ततो देवमभिषेकार्थमादरात् ॥
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजः ॥८६॥

दारापुत्रसमेतस्य कुर्युः सर्वेऽभिषेचनम् ।।
अक्षीभ्यामिति सूक्तेन पावमानीभिरेव ।।८७।।

अर्थ–कुम्भ को दाहिनी तरफ से अभिमंत्रण करके मृत्यु के दूर करने के निमित्त (त्र्यंबकं) मंत्र जप करना चाहिये।।८४।। रुद्र कुम्भ को कहे हुए मार्ग करके रुद्रमन्त्र करे स्पर्श करै धूप दीप नैवेद्य कुंभ के विषै निवेदन करै।।८५।। प्रसन्नतापूर्वक तिसके बाद देवता का आदरते अभिषेक करे कल्याण करनेवाले आसन में बैठे हुए यजमान और यज्ञ करानेवाला।।८६।। स्त्री पुत्र सहित का अभिषेक सब करैं (अक्षीभ्यां) इस सूक्त करके (पावमानी) मंत्र करके।।८७।।

आपोहिष्ठेति नवभिरापइद्वाद्वयेन च ।
सहस्राक्षेत्यृचा वापि देवस्यत्वेति मंत्रकैः ।।८८।।
शिवसंकल्पमात्रेण वक्ष्यमाणैश्च मंत्रकैः ।

अर्थ–(आपोहिष्ठेति) नौ मंत्रों करके (आपइद्वा) इन दो मंत्रों करके (सहस्राक्ष) इस ऋचा करके (देवस्य) इस मंत्र करके।।८८।। (शिवसंकल्प) मंत्र करके और जो कहे हुए मंत्र हैं जिन करके अभिषेक करना चाहिये।।

अथाभिषेकमंत्रमाह

योसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः ।
मूलजातशिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ।।८९।।
योसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः ।।
यः सप्तजिह्वो देवोग्निर्मूलदोषं व्यपोहतु ।।९०।।
योसौ दंडधरो देवो धर्म्मो महिषवाहनः ।।
मूलजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो महान् ।।९१।।
योसौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः ।

प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डांतसंभवम् ॥९२॥
योसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ।
नक्रवाहः प्रचेताह्वो मूलोत्थाघं व्यपोहतु ॥९३॥
योसौ देवो जगत्प्राणो मरुतो मृगवाहनः ।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शांतिदः ॥९४॥
योऽसौ निधिपतिर्देवो खड्गभृन्नरवाहनः ।
मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ॥९५॥
योसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ।
आश्लेषामूलगण्डान्तदोषमाशु व्यपोहतु ॥९६॥
विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः ।
सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वंतु शांतिदाः ॥९७॥
त्रैलोक्ये यानि भूतानि चराणि स्थावराणि च ।
ब्रह्मार्कविष्णुयुक्तानि तानि दोषं व्यपोहतु ॥९८॥
तद्द्वयोरभिषेकं तु सर्वदोषोपशांतये ।
सर्वकामप्रदं दिव्यं मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥९९॥

अर्थ–इन मंत्रों करके अभिषेक करना चाहिये।।८९–९९॥

अथ स्नानम्

वस्त्रांतरितकुम्भाभ्यां पश्चात्तु स्नापयेद् बुधः ।
ततः शुक्लांबरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनः ॥१००॥

अर्थ–वस्त्र करके ढके हुए घड़ों करके पीछे से पंडित जन स्नान करावे पीछे से सफेद कपड़े धारण कराय सफेद माला पहिराय श्रेष्ठ गंधादिकों करके लेपन करना चाहिये।।१००॥

अथ दानमाह

यजमानो दक्षिणाभिस्तोषयेदृत्विजादिकान् ।

धेनुं पयस्विनीं दद्यादाचार्य्याय सवत्सकाम् ॥१०१॥
निर्ऋतिप्रतिमां कुम्भं वस्त्रं हेमं च दापयेत् ।
ग्रहार्थं वस्त्रप्रतिमां तस्मै दद्यात्प्रयत्नतः ॥१०२॥

अर्थ—तिसके बाद यजमान दक्षिणा करके ऋत्विजों को संतोष करै और दूध देनेवाली बछड़ा सहित गौ आचार्य को दान करके देय॥१०१॥ नक्षत्रदेवता की प्रतिमा और घट सुवर्ण आचार्य को दान करके देय ग्रहों के लिये जो वस्त्र और प्रतिमा बनाई है वह भी यत्नपूर्वक आचार्य को देय॥१०२॥

श्रीरुद्रजापिने देयः कृष्णोऽनड्वान्प्रयत्नतः ।
तत्कुम्भं वस्त्रप्रतिमां तस्मै दद्यात्प्रयत्नतः ॥१०३॥
उक्तालाभे ततो दद्यादाचार्यब्रह्मऋत्विजाम् ।
तत्तन्मूल्यं प्रदातव्यं शक्त्या वाथ प्रदापयेत् ॥१०४॥
अवशिष्टं ब्राह्मणेभ्यो यावच्छक्त्या च दक्षिणाम् ।
दीनांधकृपणादिभ्यः किंचित्किंचित्प्रदापयेत् ॥१०५॥

अर्थ—श्रीरुद्र के मंत्र जपनेवाले को यत्न करके काला बैल देय और श्रीरुद्र का कुम्भ और वस्त्र प्रतिमा तिसी जपकरनेवाले को देना चाहिये॥१०३॥ जो श्रीरुद्र के मंत्र का जप करनेवाला न होय तो आचार्य या अन्य ऋत्विज ब्राह्मणों को देय अथवा तिस तिसका मोल देय या अपनी शक्त्यनुसार देय॥१०४॥ और बाकी के बचे जो ब्राह्मणों के अर्थ अपनी शक्ति के लायक दक्षिणा देय दीन पुरुष अंधे लूले लंगड़ों को भी थोड़ा धन देय॥१०५॥

अथ घृतावलोकनार्थं मंत्रः

वंदे सर्वरसश्रेष्ठं त्वामहं भगवानजः ।
अग्र आज्यसुधारूपं सर्वश्रेष्ठं कुरुष्व माम् ॥१०६॥

याऽलक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वगात्रेष्ववस्थितम् ।
तत्सर्वंभक्षयाज्य त्वं लक्ष्मीं पुष्टिं विवर्धय ॥१०७॥

अर्थ–इन दोनों मंत्रों करके घृत में शरीर देखकर छाया पात्र दान करै॥१०६–१०७॥

विसर्जनम्

उद्वासयेत्ततो वह्निग्रहान्देवान्द्विजान्क्रमात् ।
दद्यादन्नंपायसादिब्राह्मणान्भोजयेच्छतम् ॥१०८॥
अलाभे सति पंचाशद्दशकं तदलाभतः ।
सर्वशांतेश्चपठनमाशिषां ग्रहणं तथा ॥१०९॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसा-
दात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविर-
चिते स्त्रीजातके मूलशांतिवर्णनं नाम
षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

अर्थ–फिर अग्नि का विसर्जन कर ग्रहों का, देवताओं का, ब्राह्मणों का क्रम से विसर्जन करै और एक सौ ब्राह्मणों को खीर को आदि ले लेकै पक्वान्नों का भोजन देय॥१०८॥ और जो सौ ब्राह्मण न मिलैं तौ पचास ब्राह्मण जो पचास न मिलैं तो दश ब्राह्मणों को भोजन देय और सब ब्राह्मण शांति पाठ कर और ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण करे॥१०९॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसु-
न्दरीहिन्दीटीकायां मूलशांतिवर्णनं नाम
षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

अथाऽऽश्लेषाशांतेरध्यायो निरूप्यते

आश्लेषायां तु जातानां शांतिं वक्ष्याम्यतः परम् ।
जातस्य द्वादशाहे तु शांति होमं समाचरेत् ।।१।।
अलाभे भे तु जन्मस्थे कुर्याच्छांतिं शुभे दिने ।
स्नातोऽभ्यंगादिभिस्त्वस्मिन्वरयेत्तु द्विजोत्तमान् ।।२।।

अर्थ—आश्लेषानक्षत्र में पैदा हुआ लड़का वा लड़की उनकी शांति कहता हूँ जिस दिन बालक पैदा होय उससे बारहवें दिन शांति होम करना चाहिये।।१।। जो बारहवें दिन न करे तो जन्म के नक्षत्र के दिन उत्तम दिन में शांति करे उवटन करके स्नान करे फिर उत्तम ब्राह्मणों को वरण करना चाहिये।।२।।

विभवे पंच कुम्भांश्च द्वयं वा तदभावतः ।
देवतास्थापने चैक एकोरुद्राभिमंत्रणे ।।३।।
मूलशांतिप्रकारेण कुंभं निक्षिप्य पूजयेत् ।
गोमयालेपिते देशे धान्यादौ परिशोभने ।।४।।
पंकजं कारयेत्तत्र भूपांगुलमितं तथा ।।
तंदुलैः कारयेत्पद्मं रक्तपीतसितासितैः ।।५।।
कर्णिकायां न्यसेच्छ्रीं ह्रीं स्थापयेत्तेषु कुंभकम् ।।
आकलशेष्वित्यनया कलशस्थापनं शुभम् ।।६।।

अर्थ—धनवान् होय तो पांच कुम्भ स्थापित करे और पांच कुम्भ की श्रद्धा न होय तो दो कुम्भ स्थापित करे एक घट नक्षत्र देवता का स्थापन करे और घट रुद्रदेव का अभिमंत्रण करने को स्थापित करना चाहिये।।३।। मूलशांति प्रकार करके कुम्भ के बीच में औषधी डालकर पूजन करे गोबर से धरती लीपकर धान्य की राशि पर घट स्थापित करे।।४।। तहां अन्न का कमल बनावे चौवीस अंगुल का अथवा चावल

का कमल बनावे लाल पीले सफेद श्याम चावल का बनावे।।५।। और कमल की दलों पर श्रीं ह्रीं क्रमते बनावे तिसके बीच में घट स्थापित करे (आकलशे) इस मंत्र करके कलश स्थापन करना शुभ है।।६।।

इमं मे इतिमंत्रेण पूरयेत्तीर्थवारिणा ।
कुम्भं च वस्त्रगंधाद्यैस्तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ।।७।।
याः फलानीरित्यनेन दक्षिणोत्तरयोर्यजेत् ।
ऐंद्यादीशानपर्य्यंतमितरर्क्षाणि पूजयेत् ।।८।।

अर्थ–(इमंमे) इस मंत्र करके घट में तीर्थों का जल भरना चाहिये घट को गंध पुष्पाक्षतादिकों करके तीन मंत्रों से पूजन करना चाहिये।।७।। (याः फलिनी) इस मंत्र करके दक्षिण उत्तर दिशा में यजन करे पूर्व दिशा से लेकर ईशानपर्यंत, इंद्र, अग्नि, पितृ, निर्ऋति, वरुण, मरुत्, कुबेर, ईश इन देवताओं का पूजन करना चाहिये और ग्रहों का भी पूजन प्रत्येक दिशाओं में करै।। वराहः–प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमः शौरेंदुवित्सूरयः ।।८।।

मूलोक्तविधिनानेन कुम्भयोरभिमंत्रणम् ।
रुद्रार्चा रुद्रकुम्भेषु पूर्ववच्छेषमाचरेत् ।।९।।

अर्थ–और सब विधि मूल नक्षत्र में कही है तिस माफिक कुम्भ का अभिमंत्रण करके और रुद्र कुम्भ को रुद्र के मंत्रकरके पहिले कही हुई विधि के अनुसार सब कार्य करै।।९।। अर्थात् मूल नक्षत्र के माफिक आश्लेषा नक्षत्र की शांति करनी चाहिये सम्पूर्ण सामग्रीसहित पांच कुम्भ स्थापित करै और पांच की श्रद्धा न होय तो दो कुम्भ स्थापित करै और एक कुम्भ रुद्र का दूसरे कुम्भ पर आश्लेषा नक्षत्र की प्रतिमा स्थापित करे पूर्वोक्तरीत्यनुसार दोनों कुम्भों का अभिमंत्रण करे तहाँ आश्लेषा

नक्षत्र की प्रतिमा सर्पाकार बनावे और उसका अधिदेवता बृहस्पति को प्रतिमा और प्रत्यधिदेवता पित्रीश्वरों की प्रतिमा स्थापन कर (नमोस्तु सर्पेभ्यः) इस मंत्र करके पूजन करे॥

अथाश्लेषानक्षत्रध्यानमाह

सर्प्पो रक्ताश्विनेत्रश्च द्विभुजः पीतवस्त्रकः ।
फलकाधिधरस्तीक्ष्णो दिव्याभरणभूषितः ॥१०॥

अर्थ–आश्लेषा नक्षत्र का ध्यान करना चाहिये॥१०॥

अथ कर्मविधानमाह

कर्तुः शाखोक्तमार्गेण आचार्यस्याथ वा चरेत् ।
मखांतं कर्म्म निर्माय हविरादाय शास्त्रतः ॥११॥
इदं सर्पेभ्यो जुहुयात्साधिप्रत्यधिदैवतम् ।
अष्टोत्तरशतं वाथ अष्टाविंशतिरेव च ॥१२॥
मूलनक्षत्रतच्छेषं होमकर्म समापयेत् ।
पूर्णाहुत्यंतकर्म्माणि कृत्वा संपातकं तथा ॥१३॥

अर्थ–अपनी शाखामार्ग करके पूजन हवन आचार्य वा यजमान करे यज्ञ के अंत में कर्मनिवारण करके शास्त्रानुसार हविष्य लायकर॥११॥ (इदंसर्प्पेभ्यो) इस मंत्र करके हवन करे अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता का अष्टोत्तर शत (१०८) अथवा अष्टाविंशति (२८) संख्या करके ॥१२॥ बाकी का सम्पूर्ण कर्म मूलनक्षत्र के तुल्य करके हवनकर्म समाप्ति कर अंत में पूर्णाहुति कर्म करके फिर प्रायश्चित्त निवारण करना चाहिये॥१३॥

अथांजल्याभिषेकः

कुम्भाञ्जलिं तु प्रक्षिप्य अभिषेकं समाचरेत् ।
पुत्रदारसमेतस्य यजमानस्य पूर्ववत् ॥१४॥

अर्थ–जिस घट को अंजलि देकर पुत्र स्त्री सहित जो यजमान है तिसका अभिषेक करना चाहिये पहिले की तरह।।१४।। और घटे के जल से पुत्र स्त्री यजमान का अभिषेक करना अर्थात् घट के जल से छींटा देना चाहिये।

अथाभिषेकमंत्रमाह

आश्लेषाऋक्षजातस्यः मातापित्रोर्धनस्य च ।
भ्रातृजातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु ।।१५।।

अर्थ–आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुए बालक के माता, पिता और धन, भ्रातृगण, बंधु लोगों के सम्पूर्ण दोषों को नाश करै हैं।।१५।।

अथ रक्षामंत्रः

पितरः सर्वभूतानां रक्षंतु पितरः सदा ।
सर्वनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबांधवान् ।।१६।।
सर्पाधीश नमस्तुभ्यं नागानां च गणाधिप ।।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वारिष्टप्रशांतये ।।१७।।
मूलनक्षत्रवत्कुर्यात्सर्वदोषे स्वनामतः ।।१८।।

अर्थ–इस मंत्र करके रक्षा करना तथा अर्घ्य देना चाहिये।।१६।।१७।। मूलनक्षत्र के तुल्य आश्लेषा नक्षत्र के नाम करके सब कर्म करना चाहिये।।१८।।

अथ मूलदोषमाह–नारदः

मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा तु तदंगजान् ।
ऐंद्री तदग्रजं हंति देवरं तु द्विदैवजा ।।१९।।
शांतिर्वा पुष्कला चेत्स्यात्तर्हि दोषो न कश्चन ।
इति सर्पर्क्षजाता च सुताशांतिमगाच्छुभम् ।।२०।।

अर्थ–मूल नक्षत्र में पैदा भई कन्या श्वशुर का नाश करती है और

आश्लेषा नक्षत्र में पैदा भई पति के बहिन का नाश करे और ज्येष्ठा नक्षत्र में पैदा भई बड़े भाई का नाश करे और विशाखा में पैदा भई देवर का नाश करती है॥१९॥ पूरी पूरी शांति करने से सर्वदोष दूर करते हैं, मूल ज्येष्ठा आश्लेषा विशाखा इन नक्षत्रों में पैदा भई कन्या की शांति जन्मसमय अथवा विवाह समय करना चाहिये क्योंकि मूल दोष में उत्पन्न जो बालक है सो उत्पत्तिकाल में अपने कुल को दोष करते हैं और विवाह के बाद श्वशुर कुल को दोषी होते हैं आश्लेषा नक्षत्र मे पैदा भई कन्या की शांति पूर्ण कही है॥२०॥

अथ त्रिविधगण्डांतशांतिर्निरूप्यते

गण्डशांतिं प्रवक्ष्यामि सोममंत्रेण भक्तिमान् ।
कांस्यापात्रं प्रकुर्वीत पलैः षोडषभिर्नवम् ॥२१॥
अष्टाभिश्च चतुर्भिर्वा द्वाभ्यां वा शोभनं तथा ॥
तन्मध्ये पायसं शंखे नवनीतेन पूरिते ॥२२॥
राजतं चंद्रमभ्यर्च्य सितपुष्पसहस्रकैः ।
दैवज्ञः शुक्लवासास्तु शुक्लमाल्यांबरार्चितः ॥२३॥

अर्थ–अब गंडदोषशांति कहता हूं–चंद्रमा के (इमंदेवा) इस मंत्र करके भक्तिसहित त्रेपन ५३ तोले चार मासे का कांस्य का पात्र बनावे अथवा तीस तोले का कांसे का पात्र बनावे॥२१॥ अथवा २६ छव्वीस तोला आठ ८ मासेका या १३ तोले चार मासे वा छः तोले आठ मासे का शोभायमान पात्र बनावे, उसके बीच में खीर भरे और खीर के बीच में मक्खन शंख में भरकर॥२२॥ चांदी का चंद्रमा उसमें रखकर एक हजार सफेद पुष्पों करके पूजन करना और ज्योतिषी का सफेद वस्त्रों करके सफेद पुष्पों की माला बनाकर पूजन करना चाहिये॥२३॥

सोमोहमिति संचिंत्य पूजां कुर्यादतंद्रितः ।
जपेत्सहस्रकं मंत्रं श्रद्दधानः समाहितः ॥२४॥
आप्यायस्वेति मंत्रेण पूजां कुर्यात्समाहितः ॥
दद्याद्वै दक्षिणामिष्टां गण्डदोषप्रशांतये ॥२५॥

अर्थ–(सोमोहं) इस मंत्र करके आलस्य छोड़ करके पूजा करे श्रद्धासहित एक हजार मंत्र जपे॥२४॥ (आप्याय) इस मंत्र करके निश्चय करके पूजा करे गण्डदोष की शांति के लिये इष्ट दक्षिणा देय॥२५॥

शुक्लं वागीश्वरं चैव ताम्रपात्रसमन्वितम् ।
गण्डदोषोपशांत्यर्थं दद्याद्वेदविदे शुचिः ॥२६॥
अभुक्तेतरजातानां सूतिकांते दिने तथा ॥
शांतिं शुभेह्नि वा कुर्य्यात्तावत्पुत्रं न लोकयेत् ॥२७॥

अर्थ–शुक्लवर्ण वागीश्वर की मूर्ति ताम्रपात्र में घृतसहित स्थिति करके गंडदोष की शांति के अर्थ वेद के जाननेवाले ब्राह्मण को देय॥२६॥ अभुक्त मूलों से इतर दोषों में पैदा हुए बालक की शांति सूतक के अंत में अथवा शुभदिन में करे जब तक शांति न करे तब तक कन्या पुत्र का मुख न देखना चाहिये॥२७॥

अथ विशेषगण्डमाह

मूलाश्विपित्र्यचरणे प्रथमे च नूनं पौष्णेंद्रयोश्च फणिनश्च तुरीयपादे । मातुः पितुः स्ववपुषः प्रकरोति नाशं जातो यदा निशि दिनेप्यथ संध्ययोश्च ॥२८॥

अर्थ–मूल अश्विनी मघा इन नक्षत्रों के पहिले चरण में जो बालक पैदा होय और रेवती ज्येष्ठा आश्लेषा नक्षत्र के चौथे चरण में जो उत्पन्न

होय तो वह बालक माता पिता और अपने शरीर को नाश करता है और जो बालक रात्रि और दिन की संधि में उत्पन्न होय तो भी पूर्ववत् अशुभ फल करता है।।२८।। इन गंडदोषों में उत्पन्न बालकों की भी पूर्ववत् प्रतिमा कलश अभिषेक हवनादि कर्म करके शांति करना चाहिये।।

अन्यच्च गण्डदोषमाह—श्रीपतिः

उत्तरातिष्यचित्रासु पूर्वाषाढोद्भवस्य च ।
कुर्य्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां बुधः ।।२९।।

अर्थ—उत्तरा पुष्य चित्रा पूर्वाषाढ़ में उत्पन्न हुए बालकों को भी नक्षत्र के अनुसार यत्न करके शांति करना चाहिये।।२९।।

अथ पादभेदेन गण्डदोषमाह—वसिष्ठः

चित्राद्यर्धे पुष्यपादे द्वितीये पूर्वाषाढाधिष्ण्य-पादे तृतीये । पूर्वाफाल्गुन्युत्तरार्द्धे विघाती मातापित्रोर्भ्रातुरेवात्मनश्च ।।३०।।

अर्थ—चित्रानक्षत्र का अर्द्धभाग में पुष्य नक्षत्र के दूसरे चरण में और पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के तीसरे चरण में और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चौथे चरण में जो बालक उत्पन्न होय वह माता पिता भ्राता और अपनी आत्मा का क्रम से घाती होता है।।३०।।

अथ नक्षत्रजातवशाद्बालकस्य दर्शना-
वधिमाहः—गर्गः

द्विमासस्योत्तरादोषः पुष्यश्चैव त्रिमासकः ।
पूर्वाषाढाष्टमे मासे चित्रायामाष्टमासिकम् ।।३१।।
नवमांस तथाश्लेषामूलौ चाष्टसमाः स्मृताः ।
ज्येष्ठा पंचदशे मासे पुत्रदर्शनवर्जिता ।।३२।।

अर्थ–उत्तरा नक्षत्र में उत्पन्न बालक को दो मास तक न देखना चाहिये पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न को तीन मास तक, पूर्वाषाढ़ में उत्पन्न को आठ मास तक, चित्रा में पैदा हुए को छः महीने तक।।३१।। आश्लेषा में उत्पन्न को नौ मास तक और मूलनक्षत्र में उत्पन्न बालक को आठ वर्ष तक और ज्येष्ठा में पैदा हुए पंद्रह महीने तक नहीं देखना चाहिये।।३२।।

अथ नक्षत्रजाते दानमाह

उत्तरे तिलपात्रं स्यात्तिष्ये गोदानमिष्यते ।।
अजां चित्रासु वै दद्यात्पूर्वाषाढ़े तु कांचनम् ।।३३।।
यवान्व्रीहींश्च माषांश्च तिलमुद्गांश्च दापयेत् ।
यथावित्तानुसारेण कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।।३४।।
पितुरायुष्यवृद्ध्यर्थं शांतिरत्र विधीयते ।।३५।।

अर्थ–उत्तरानक्षत्र में उत्पन्न के शांत्यर्थ तिलपात्र दान करे पुष्य में पैदा हुए को गोदान करना चाहिये चित्राजातको बकरा दान करना चाहिये पूर्वाषाढ़ में पैदा हुए को सुवर्ण दान करना चाहिये।।३३।। जौ, धान, उर्द, तिल, मूंग दान करना चाहिये और अपनी शक्त्यनुसार ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये।।३४।। पिता की आयुष्य बढ़ाने को ये शांति विधान करी है।।३५।।

सर्वनक्षत्रेषु जाते शांतिं विना दानमाह–
वसिष्ठासंहितायाम्

विप्रेभ्यो गोत्रयं दद्यात्तद्दोषशमनाय वै ।
अशक्तो गोद्वयं दद्याद्गामेकां वापि भक्तितः ।।३६।।

अर्थ–पूर्वोक्त नक्षत्र में जो बालक की शांति कराने की शक्ति न होय तो

ब्राह्मण तीन गोदान करके देय तिस दोषशांति के लिये जो तीन गोदान की शक्ति न होय तो दो गोदान करे अपनी भक्तिसहित एक गोदान करै।।३६।।

अथ ज्येष्ठाशांतिर्निरूप्यते–भरद्वाजः

अथ ज्येष्ठाजाते प्रत्येकषड्घटिकाफलमाह

ज्येष्ठादौ मातृजननीं मातामहद्वितीयके ।
तृतीये मातुलं हंति चतुर्थे जननीं तथा ।।३७।।
आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।
सप्तमे कुलनाशः स्यादष्टमे ज्येष्ठसोदरम् ।।३८।।
नवमे श्वशुरं हंति सर्वस्वं दशमे तथा ।
प्रत्येकं घटिका षट् स्यात्फलमुक्तं द्विजोत्तमैः ।।३९।।

अर्थ–ज्येष्ठा नक्षत्र की ६० घटीके दश भाग करै प्रत्येक भाग छः छः घटी का हुआ उसका फल क्रम करके कहते हैं प्रथम भाग में उत्पन्न बालक नानी का नाश करे, दूसरे भाग में नाना का नाश करे, तीसरे भाग में मामा का नाश करे चतुर्थ भाग में माता का नाश करै।।३७।। पंचम भाग में अपनी आत्मा का नाश करे छठे भाग में गोत्र का नाश करे सातवें भाग में कुल का नाश करे आठवें भाग में बड़े भाई का नाश करे।।३८।। नवम भाग में श्वशुर का नाश करे और दशम भाग में सर्वस्व नाश करे हर एक छः घटी का फल पंडितोंकरके कहा गया है।।३९।।

अथ ज्येष्ठारेवतीगण्डान्तमाह

घटिकैकाचक्रमैत्रांते ज्येष्ठादौ घटिकाद्वयम् ।
तयोः संधिरिति ज्ञेयं शिशिगण्डान्तमीरितम् ।।४०।।

अर्थ–अनुराधा नक्षत्र के अंत का एक घटी ज्येष्ठा के आदि की दो घटी इनकी संधि को गंडान्त कहते हैं।।४०।।

अथ ज्येष्ठापादफलम्

प्रथमे च द्वितीये च ज्येष्ठर्क्षे च तृतीयके ।
पादत्रयेपि यो जातः स च श्रेष्ठः प्रकीर्तितः ।।४१।।
ज्येष्ठांतपादजातस्तु पितु स्वस्य विनाशकः ।
ज्येष्ठर्क्षे कन्यका जाता हंति शीघ्रं धवाग्रजम् ।।४२।।

अर्थ–ज्येष्ठानक्षत्रका पहिला दूसरा तीसरा इन तीनों चरणमें उत्पन्न हुए बालक श्रेष्ठ होते हैं।।४१।। ज्येष्ठा के अंतिम चरण में उत्पन्न बालक पिता का और अपना नाश करता है और ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न भई कन्या स्वामीं के बड़े भ्राता का नाश करती है।।४२।।

अथ ज्येष्ठागण्डान्तशांतिः

शांतिं तस्य प्रवक्ष्यामि गण्डदोषप्रशांतये ।

अर्थ–अब ज्येष्ठा नक्षत्रजात की शान्ति कहता हूं गण्ड दोष की शांति के अर्थ शांतिविधान कहते हैं

अथ ज्येष्ठानक्षत्रध्यानम्

वज्रांकुशधरं देवमैरावतगजान्वितम् ।।४३।।
कुर्य्याच्छचीपतिं रम्यं देवेन्द्रसुरनायकम् ।
शालितंडुलसंयुक्तं कुम्भस्योपरि पूजयेत् ।।४४।।

अर्थ–वज्र और अंकुश धारण किये ऐरावत हाथी सहित।।४३।। शोभायमान शचीपति देवेंद्र सुरों के नायक साठी चावलों के ऊपर कुंभ के ऊपर इंद्र का पूजन करना चाहिये।।४४।।

अथ जपसंख्याविधिमाह

अष्टसहस्रसंयुक्तं लक्षं कुर्य्याज्जपेत्तथा ।

महाइंद्रेति मंत्रेण तदर्द्धार्द्धेन वा जपः ।।४५।।
होमो दशांशतः कार्य्यो तर्पणं मार्ज्जनं तथा ।
इन्द्रोपेन्द्रमरुत्वंतमिति मंत्रेण वाग्यतः ।।४६।।
पूजयेद्विधिना सम्यक् लोकपालगणान्वितम् ।
रक्तवस्त्रं हयोपेतं देवराजं शचीपतिम् ।।४७।।
पूजयेद्वारुणैर्मंत्रैः कुम्भान्धीमान्प्रयत्नतः ।
त्वन्नो अग्नेजपेदादौ सत्वन्नोऽपि द्वितीयकम् ।।४८।।

अर्थ–एक लाख आठ हजार जप करना चाहिये अथवा चौपन हजार ५४००० जप करवावे वा अट्ठाईस हजार २८००० जप करवाना चाहिये (महाइंद्रेति) मंत्र करके।।४५।। उसका दशांश हवन करवाना तर्प्पणमार्जन करना चाहिये (इंद्रोपेंद्रमरुत्वंतं) इस मंत्र करके।।४६।। इस विधि करके भले प्रकार लोकपालादि गणसहित पूजन करै और इंद्र इंद्राणी को लाल वस्त्रों करके।।४७।। वरुण मंत्र करके पूजन करना। कुंभों को बुद्धिमान् यत्न करके (त्वन्नो अग्ने) इस मंत्र आदिमें जपे (सत्वन्नो) इस दूसरे मंत्र को भी।।४८।।

समुद्रज्येष्ठा इति च इमं मंत्रे चतुर्थकम् ।
पूजयेद्वस्त्रगंधाद्यैश्चतुरः कलशानपि ।।४९।।
आनोभद्रा जपेदादौ भद्राअग्ने द्वितीयकम् ।
इंद्रसूक्तं रुद्रजपं जपं मृत्युंजयं तथा ।।५०।।
समिद्भिर्ब्रह्मवृक्षस्य शतमष्टोत्तरं हुतः ।
सर्पिषा चरुणा चैव मूलमंत्रेण वाग्यतः ।।५१।।

अर्थ–(समुद्रज्येष्ठा इति) मंत्र करके (इमं देवाः) इस चौथे मंत्र से पूजन करे वस्त्र गंधादिकों करके चारों कलशों का।।४९।। (आनोभद्रा) इस मंत्र को आदि में जपे (भद्राअग्ने) द्वितीय मंत्र को इंद्रसूक्त रुद्रजप

मृत्युंजय का जप करना।।५०।। पीपल के वृक्ष की समिधों में अष्टोत्तरशत आहुति देवे। घृत के चरु से मूल मंत्र करके करना चाहिये।।५१।।

हुनेज्जाप्यं च तेनैव यत इंद्रभयेति वा ।
तिलान्व्याहृतिभिर्हुत्वा शतमष्टोत्तरं पृथक् ।।५२।।

अर्थ–(यत इन्द्रभयेति) मन्त्र का जप करके हवन करे वेद की व्याहृतियों करके तिलों का हवन अष्टोत्तरशत करे।।५२।।

अथ अर्घ्यम्

नमोस्तु सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गण्डदोषप्रशांतये ।।५३।।

अर्थ–इस मंत्र करके अर्घ्य देना चाहिये।।५३।।इति ज्येष्ठाशांतिः ।।

अथ दुष्टयोगजनने शांतिः

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ।
शूले गण्डे च परिघे वज्रे च यमघंटके ।।५४।।
कालदंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे ।
तस्मिन्गण्डे दिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ।।५५।।
अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुते सति ।
विचार्य तत्र दैवज्ञः शांतिं कुर्याद्यथाविधि ।।५६।।

अर्थ–जिस कन्या के जन्मसमय में दिनक्षय अर्थात् तिथि क्षय होय व्यतीपातयोग होय, व्याघातनाम योग होय वा भद्रा होय वा वैधृतिनाम योग होय शूलयोग होय गंधयोग होय वा परिघनाम योग होय वा यमघंटनाम योग होय अर्थात् सूर्यवार को मघा, चन्द्रवार को विशाखा, भौमवारको, आर्द्रा, बुधवार को मूल, बृहस्पति को कृत्तिका, शुक्र को रोहिणी, शनैश्चर को हस्त नक्षत्र होने से यमघंट योग होता है।।५४।।

वा कालदंड योग होय अर्थात् रविवार को आर्द्रा मंगल को भरणी चंद्रवार को मघा, बुध को चित्रा; बृहस्पति को ज्येष्ठा, शुक्र को अभिजित्, शनैश्चर को पूर्वाभाद्रपद होने से कालदंड योग होता है वा मृत्युयोग, रविवार को अनुराधा, चंद्रवार को उत्तरा ३, मंगल को शतभिषा, बुध को अश्विनी, बृहस्पति को मृगशिर, शुक्र को आश्लेषा, शनैश्चर वार हस्त नक्षत्र होने से मृत्युनाम योग होता है दग्धयोग अर्थात् रविवार को द्वादशी, चंद्र को प्रतिपदा, मंगल को पंचमी, बुध को तीज, बृहस्पति को पड़वा, शुक्र को अष्टमी, शनैश्चर, नवमी तथा रविवार को भरणी, चंद्रवार को चित्रा, मंगल को उत्तराषाढ़, बुध को धनिष्ठा, बृहस्पति को उत्तरा फाल्गुनी, शुक्र को ज्येष्ठा, शनैश्चर को रेवती होने से दग्धयोग होता है वा दारुणनाम योग होय अथवा उस दिन गंड होय अर्थात् नक्षत्रगंडांत तिथिगंडातं लग्नगंडांत ये तीन प्रकार के गंडांत होते हैं, नवमी तिथि के अंत की २ घड़ी पंचमी के अंत की १ घड़ी चौथ की अन्त की आधी घडी गंडांत कहाती है ज्येष्ठानक्षत्र के अन्त की २ घड़ी अश्विनी की आदि की २ घड़ी आश्लेषा के अंत की २ घड़ी मघा के आदि की दो घड़ी गंडांत कहाती है। कर्क, मीन, वृश्चिक उनके आदि की २ घड़ी, सिंह मेष धन इन लग्नों के आदि की आधी घड़ी गंडांत कहाती है ऐसे समय में जन्म होने से।।५५।। अत्यंत दोषकारी है और उन्हीं लग्नों में पापग्रह युक्त होय तो ज्योतिषीलोग विचार करके यथाविधि शांति करै।।५६।।

तस्य शांतिः

यजनं देवतानां च ग्रहाणां चैव पूजनम् ।
दीपं शिवालये भक्त्या गोघृतेन प्रदापयेत् ।।५७।।
अभिषेक शंकराय तथाश्वत्थप्रदक्षिणाम् ।

अभीष्टफलसिद्ध्यर्थं कारयेद्ब्रह्मभोजनम् ॥५८॥
गाणपत्यं पुरुषसूक्तं सौरं मृत्युंजयं तथा ।
शांत्यै जाप्यं पुनश्चैव कृत्वा मृत्युंजयी भवेत् ॥५९॥

अर्थ–देवताओं के अर्थ यज्ञ करे, ग्रहों का पूजन करे, शिव के मंदिर में गौ के घी का दीपक बाले॥५७॥ और शिव का अभिषेक करके पीपल की प्रदक्षिणा करे, अभीष्ट फल की सिद्धि के अर्थ ब्राह्मणों को भोजन करावे॥५८॥ गाणपत्यसूक्त पुरुषसूक्त सौरमंत्र और मृत्युंजय के मंत्र का जप शांति करने से मनुष्य मृत्युंजयी होता है॥५९॥

अथ व्यतीपातवैधृतिसंक्रांतिजातफलम्

कुमारीजन्मकाले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः ॥
संक्रांतिश्च रवेस्तत्र जाता दारिद्र्यदुःखिता ॥६०॥

अर्थ–कन्या के जन्मकाल में व्यतीपात वैधृति सूर्यसंक्रांति होने से दरिद्रता कारक होता है "व्यतीपातवैधृती गणितागतौ महापातसंज्ञौ ज्ञेयौ संक्रांतेरुभयत्र षोडशघटी मितौ ज्ञेयौ ॥"६०॥

तस्य शांतिः

नवग्रहमखं कुर्यात्तस्य दोषस्य शांतये ।
प्रथमे गोयुखाज्जन्म ततः शांतिं समाचरेत् ॥६१॥
गृहस्य पूर्वदिग्भागे गोमयेनानुलिप्य च ।
अलंकृतं स्वदेशे तु व्रीहिराशिं प्रकल्पयेत् ॥६२॥

अर्थ–नवग्रहों का यज्ञ करे तिस दोष की शांति के लिये जो पहिले गोमुखते जन्म होय तिसकी शांति करे॥६१॥ घर के पूर्वभाग में गोबर से लीपकर तिस स्थान को अलंकृत करके धान्य की ढेरी कल्पना करे॥६२॥

पंचद्रोणमितं धान्यं तदर्धं तंदुलेन च ।
तदर्धं तु तिलैः कुर्यादन्योन्यं परिकल्पयेत् ।।६३।।
द्रव्यत्रितयराशौतु अष्टपत्रं लिखेद् बुधः ।
पुण्याहं वाचयित्वा तु आचार्यं कारयेत्पुरा: ।।६४।।
राशौ प्रतिष्ठितं कुम्भमव्रणं सुमनोहरम् ।
तीर्थोदकेन संमृज्य समृदौषधिपल्लवम् ।।६५।।

अर्थ–चार मन जौ दो मन चावल एक मन तिल इनकी अन्य ढेरियें कल्पना करे।।६३।। धान्य की तीनों ढेरियों पर अष्टकमल पत्र लिखे पीछे पुण्याहवाचन आचार्य पहिले करे उन तीनों धान्य की ढेरियों पर सुन्दर बिना टूटा घट स्थापन कर घटों में तीर्थोदक डालकर सप्त मृतिका शतौषधी पंच पल्लव डालै।।६४।६५।।

पचगव्यं पंचरत्नं वस्त्रयुग्मेन वेष्टितम् ।
तस्योपरि न्यसेत्पात्रं सूक्ष्मवस्त्रेण वेष्टितम् ।।६६।।
प्रतिमां स्थापयेत्पश्चात्साधिप्रत्यधिदैवतम् ।
चंद्रादित्याकृती पार्श्वे मध्ये वैधृतिमर्चयेत् ।।६७।।

अर्थ–पंचगव्य पंचरत्न घट में डालकर दो वस्त्रों करके वेष्टन करे तिसके ऊपर पात्र रखकर महीन कपड़े से युक्त करे।।६६।। फिर घट के ऊपर प्रतिमा स्थापन करे अधिदेवता और प्रत्यधि देवता की चंद्रमा और सूर्य घट के पार्श्ववर्ती कर वीच में वैधृतिका पूजन करे।।६७।।

एकमेव व्यतीपाते शांते संक्रमणस्य च ।
अधिदैवं भवेत्सूर्ये चंद्रे प्रत्यधिदैवतम् ।।६८।।
तत्तद्व्याहृतिपूर्वैश्च तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ।
त्रैयंबकेन मंत्रेण प्रधानप्रतिमां यजेत् ।।६९।।

उत्सूर्य इति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ।।७०।।
आप्यायस्वेति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ।
तत्राष्टोत्तरसाहस्रमष्टोत्तरशतं च वा ।
अष्टाविंशतिसंख्याकं जपं सर्वत्र सौरजम् ।।७१।।

अर्थ–इस प्रकार व्यतीपात की और संक्रातिजनन की शांति करना चाहिये सूर्य्य को अधिदैव चंद्रमा को प्रत्यधिदैव करके।।६८।। तिन तिन पूर्वक ही व्याहृतियों करके तिन्हीं के मंत्रों से पूजन करै, त्र्यंबक मंत्र करके प्रधान देवता की प्रतिमा का यजन करे।।६९।। (उत्सूर्य) इस मन्त्र करके सूर्य्य की पूजा करै (आप्यायस्वेति) मंत्र करके चंद्रमा का पूजन करे।।७०।। तिसके वाद एक हजार आठ मंत्र अथवा एक सौ आठ वा अट्ठाईस मंत्र का जप, सब जगह सौरज रीति करनी चाहिये।।७१।।

अथ कुहूसिनीवालीदर्शप्रकार:

अर्थ–तहां अमावास्या के प्रथम प्रहर में जिस बालक का जन्म होय तो सिनीवाली शांति करनी चाहिये और अमावास्याके २।३।४।५।६ इन प्रहरों में जन्म होय तो दर्शशांति करनी चाहिये और अमावास्याके ७।८। प्रहर में जो बालक उत्पन्न होय तो कुहूशांति करनी चाहिये, यहां अमावास्या के तीन भेद शांतिनिमित्त कहे हैं किसी २ आचार्य्य के मत में सिनीवाली कुहू ऐसे दो भेद कहे हैं।।

अथ सिनीवालीजननफलम्

सिनीवालीप्रसूता स्याद्यस्य भार्य्या पशुस्तथा ।
गौरश्वी महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ।।७२।।

अर्थ–जिस मनुष्य की औरत वा पशु गौ घोड़ी भैंस सिनीवाली

अमावास्यामें प्रसूता होय तो उसके घर में इंद्र की लक्ष्मी होय तो भी हरण हो जाय।।७२।।

अथ सिनीवालीपशुजनने भेदमाह

ये च संति द्विजाश्चान्ये स्वप्रसादोपजीविनः ।
वर्जयेत्तानशेषांस्तु पशुपक्षिमृगादिकान् ।।७३।।

अर्थ–जो घर में पशु पाले जाते हैं ये सिनीवाली में प्रसूता होय तो दोषी होते हैं, जो पक्षी वा पशु अपने बलते उपजीवन करते हैं अर्थात् जंगली मृगादिक पक्षी वगैरह हैं इनको छोड़ करके अन्य कोई प्रसूता होय तो उसकी शांति जरूर करना चाहिये।।७३।।

अथ कुहूप्रसूतीफलम्

कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरी मता ।
यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशिनी ।।७४।।

अर्थ–जिस मनुष्य के घर में कुहू में बालक पैदा होय वह सर्वप्रकार के दोष करनेवाली होती है और वह बालक माता पिता की आयु और धन का नाश करता है।।७४।।

अथ कुहूसिनीवालीदर्शशांतिमाह

नारीं विना विशेषेण परित्यागो विधीयते ।
त्यागाशक्तः परां शांतिं कुर्य्याद्भक्त्या विचक्षणः ।।७५।।
प्रतिमां कारयेच्छंभोश्चतुर्भुजसमन्विताम् ।
त्रिशूलखड्गवरदाभयहस्तां यथाक्रमात् ।।७६।।
श्वेतवर्णां श्वेतपुष्पां श्वेतांबरवृषस्थिताम् ।
त्रैयंबकेन मंत्रेण पूजां कुर्य्याद्यथाविधि ।।७७।

अर्थ–जो नारी कुहू सिनीवाली दर्श में प्रसूता होय उसका परित्याग करना मुख्य है और जो परित्याग करने की शक्ति न होय तो विचक्षण

भक्ति करके शांति करे।।७५।। शिवजी की प्रतिमा बनावे उसको चारभुजाओं करके युक्त करे त्रिशूल खड्ग वरद अभय ये हैं हाथों में जिनके।।७६।। श्वेत है वर्ण जिनका श्वेत पुष्पों की माला धारण किये, सफेद वस्त्र बैल पर सवार त्र्यंबक मंत्र करके सर्वशास्त्रानुसार विधि करके शिव का पूजन करै।।७७।।

अथ इंद्रपूजनमाह

इंद्रश्चतुर्भुजो वज्रांकुशपाशससायकः ।
रक्तवर्णो गजारूढो यतइंद्रेति मंत्रतः ।।७८।।

अर्थ–चार भुजाओं को धारण किये अंकुश पाश बाण हैं हाथ में जिसके रक्त वर्ण हाथी पर सवार इस प्रकार के स्वरूपवान् इंद्र का (यत इंद्रेति) मंत्र करके पूजन करना चाहिये।।७८।।

अथ पितृपूजनमाह

पितरः कृष्णवर्णाश्च चतुर्हस्ता विमानगाः ।
षडक्षिसूत्रकमंडलवभयानां च धारिणः ।।७९।।

अर्थ–श्यामवर्ण चार हाथ विमान पर सवार छः नेत्र सूत्र कमंडलु धारण किये इस प्रकार के पितर देवताओं का पूजन करना चाहिये।।७९।।

अथ पूजनप्रकारमाह

ये सत्या इति मंत्रेण पूजां कुर्य्यादनंतरम् ।
कलशस्थापनं होमं कृत्वा पूजादिपूर्ववत् ।।८०।।
समिदाज्यचरोर्होमं तिलमाषैश्च सर्षपैः ।
अश्वत्थप्लक्षपालाशसमिद्भिः खादिरैः शुभैः ।।८१।।
अष्टोत्तरशतं मुख्यं प्रत्येकजुहुयाद् बुधः ।
त्रैयंबकेन मंत्रेण तिलान्व्याहृतिभिर्हुनेत् ।।८२।।

शंकरस्याभिषेकं च कुर्य्यात्पूर्वानुसारतः ।
अन्यत्सर्वाभिषेकं तु कुर्य्यादाज्यावलोकनम् ॥८३॥

अर्थ–(ये सत्या) इस मंत्र से पूजनकर तिसके बाद कलश का स्थापन कर हवन करे पहिले की तरह पूजन कर॥८०॥ समिध घृत चरु करके तिल उर्द सरसों करके हवन करे पीपल, पाकड़, ढाक की समिध करके खैर की शुभ समिध करके॥८१॥ एक सौ आठ आहुति हर एक का हवन पंडित करे (त्र्यंबक) मंत्र करके तिलों का वेद की व्याहृतियों करके हवन करे॥८२॥ पहिलेमाफिक शिवजी का अभिषेक कर और सबों का अभिषेक कर फिर घृतावलोकन करे॥८३॥

अथ दर्शशांतिरुच्यते

अथातो दर्शजातानां मातापित्रोर्दरिद्रता ।
तद्दोषपरिहारार्थं शांतिं वक्ष्यामि नारद ॥८४॥
न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थाः सचूता निंबकास्तथा ।
एतेषां किल मूलानि त्वगादीन्पल्लवांस्तथा ॥८५॥
रत्नानि निक्षिप्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।
सर्वे समुद्रा इति चाऽऽपोहिष्ठादित्र्यृचेन च ॥८६॥

अर्थ–इसके अनंतर दर्शअमा में उत्पन्न हुए मनुष्य माता पिता को दरिद्रता करते हैं तिसके दोष दूर करने के लिये मैं शांति कहता हूं॥८४॥ संकल्पकरके कलशस्थापन कर कलश में वट, पीपल, गूलर, आम्र, पाकड़ इनके पत्ते और जड़ और छाल॥८५॥ पंचरत्न को कलश में डालकर दो कपड़ों से वेष्टन कर (सर्वे समुद्राः) इस ऋचा करके (आपोहिष्ठादि) ऋचाओं करके घट को अभिमंत्रित पूर्वक अग्निकोण में स्थानपन करे॥८६॥

अथ दशदेवतास्वरूपम्

दर्शस्य देवतायाश्च सोमसूर्यस्वरूपजाम् ।
प्रतिमां स्वर्णजां नित्यं राजतीं ताम्रजां तथा ।।८७।।
आप्यायस्वेति मंत्रेण सविता पश्चात्तमेव च ।
उपचारैः समाराध्या ततो होमं समाचरेत् ।।८८।।
समिधश्च चरुं द्रव्यं क्रमेण जुहुयाद्‌गृही ।
हुनेत्सवितृमंत्रेण सोमो धेनुश्च मंत्रतः ।।८९।।

अर्थ–दर्शअमा का देवता चंद्रमा सूर्य के स्वरूप से पैदा हुआ प्रतिमा सोने की बनावे अथवा चांदी या ताँबे की बनावे।।८७।। (आप्यायस्वेति) मंत्र करके सूर्य का पीछे से षोडशोपचार करके पूजनकर पीछे से हवन करे।।८८।। समिध और चरुद्रव्य करके क्रमते यजमान हवन करे (सवितृमंत्र करके) सोमोधेनु मन्त्र से।।८९।।

अष्टोत्तरशतंवापि अष्टाविंशतिसंख्यया ।
अभिषेकादिकं कार्यं पूर्वरीत्या द्विजोत्तमैः ।।९०।।
हिरण्यं राजतं चैव कृष्णा धेनुश्च दक्षिणा ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र कारयेत्स्वस्तिवाचनम् ।।९१।।

अर्थ–एक सौ आठ अथवा अट्ठाईस संख्या करके आहुति देय पहिले माफिक अभिषेकादि कार्य पंडितजन करें।९०।। सोने वा चांदी की श्यामा धेनु दक्षिणासहित देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वस्तिवाचन करे।।९१।।

अथ कृष्णचतुर्दशीजननशांतिः

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलम् ।
चतुर्दशीं च षड्भागां कुर्य्यादादौ शुभं फलम् ।।९२।।
द्वितीये पितरं हंति तृतीये मातरं तथा ।

चतुर्थे मातुलं हंति पंचमे वंशनाशनम् ॥९३॥
षष्ठे तु धनहानिः स्यादात्मनो नाशकारकः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शांतिं कुर्य्याद्विधानतः ॥९४॥

अर्थ–जो बालक कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में उत्पन्न होय उसका छः प्रकार से फल जानना चतुर्दशी तिथि के छः भाग दशदश घटी के आदि के भाग में पैदा भई कन्या शुभ होती है॥९२॥ दूसरे भाग में पिता का नाश करे, तीसरे भाग में माता का नाश करे, चतुर्थ भाग में मातुल का नाश करे, पंचम भाग में वंशनाश करती है॥९३॥ छठे भाग में धनहानि करे और आतमा का नाश करे, ऐसे योग में उत्पन्न बालक निजकुल को फल करते हैं, कन्या श्वशुर कुल को फल करती है तिसते सब यत्नों से शांति विधानते करनी चाहिये॥९४॥

अथ चतुर्दशीशांतिः

प्रतिमां कारयेच्छंभोः कर्षमात्रां सुवर्णिकाम् ।
तदर्धार्धेन वा कुर्य्यात्सर्वलक्षणसंयुताम् ॥९५॥

अर्थ–शिवजी की प्रतिमा कर्षमात्र सोने की वा आधे कर्षकी वा चतुर्थांश कर्षकी सर्वलक्षण संयुक्त बनावे॥९५॥

अथ प्रतिमालक्षणम्

वृषभे च समासीनं वरदाभयपाणिकम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं श्वेतमाल्यांबरान्वितम् ॥९६॥
त्रैयंबकेन मंत्रेण पूजां कुर्य्याद्विधानतः ।
आवाह्य वारुणैर्मंत्रैरनेनैव विधानतः ॥९७॥
इमंमे वरुणेत्यनया तत्त्वायामीत्यृता तथा ।
त्वंनो अग्ने इत्यनया सत्वंनो इति मंत्रतः ॥९८॥

अर्थ–बैल के ऊपर सवार करके देनेवाले अभय हैं हाथ में जिनके,

सफेद स्फटिकमणि के समान सफेद माला और वस्त्र धारण किये।।९६।। (त्र्यम्बकं) मंत्र करके पूजन विधानते करे वारुण मंत्रों करके आवाहन करे इस विधानते।।९७।। (इमंमेवरुणेत्यनया तत्त्वायामि) ऋचा करके (त्वन्नोअग्ने) इस करके (सत्वन्नो) इस मंत्र से पूजन करै।।९८।।

आग्नेयं कुम्भमारभ्य पूजां कुर्य्याद्यथाक्रमात् ।
आनोभद्रेति सूक्तेन भद्राअग्नेश्च सूक्तकम् ।।९९।।
जप्त्वा पुरुषसूक्तं च कद्रुद्रेति क्रमाज्जपेत् ।
ईश्वरस्याभिषेकं च ग्रहपूजां च कारयेत् ।।१००।।
समिदाज्यचरूंश्चैव तिलमाषांश्च सर्षपान् ।।
अश्वत्थप्लक्षपालाशैः समिद्भिः खादिरैः शुभैः ।।१०१।।
अष्टोत्तरसहस्रं वा ह्यष्टोत्तरशतं तु वा ।।
अष्टाविंशतिभिर्वापि होमं कुर्य्यात्पृथक्पृथक्।।१०२।।
त्रैयंबकेन मंत्रेण तिलान्व्याहृतिभिः क्रमात् ।।
ग्रहा एवं च होतव्याश्चास्मदुक्तिविधानतः ।।१०३।।

अर्थ–आग्नेय दिशा में कलश स्थापन करके पूजन करे यथाक्रमते (आनोभद्रा) सूक्त करके (भद्राअग्ने) सूक्त से ।।९९।। पुरुषसूक्त अर्थात् (सहस्रशीर्षा) कद्रुद्रेति मंत्रोंकरके क्रम से जप करै, शिवजी का अभिषेक करै, ग्रहों की पूजा करै।।१००।। समिध घृत चरु तिल उर्द सरसों करके पीपल पाकड़ ढाक खैर की शुभ समिधों करके।।१०१।। एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ अथवा अष्टोत्तरविंशति २८ आहुति देय अलग अलग ।।१०२।। (त्र्यंबकं) मंत्र करके तिलों का हवन करै और व्याहृतियों करके ग्रहों का हवन करे इस विधान से।।१०३।।

अथ एकनक्षत्रजननशांतिः

एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्रात्रोर्वा पितृपुत्रयोः ।

प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युर्भवेदेकस्य निश्चयात् ।।१०४।।

अर्थ–एक नक्षत्र में भ्राता वा पुत्र वा पिता के में जिसकी उत्पत्ति होय तो दोनों की मृत्यु होय जिस नक्षत्र में पैदा होय और नहीं तो जरूर मृत्यु होय।।१०४।।

अथ विशेषमाह–वसिष्ठः

पित्रोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा ।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्यो मृतिप्रदः ।।१०५।।

अर्थ–माता पिता के जन्म नक्षत्र में पैदा हुआ बालक माता पिता का हनन करता है, जन्म की राशि तथा लग्न में पैदा हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु देता है।।१०५।।

अथ मातृपितृभे कन्याजन्मनिषेध–
माह–देवकीर्तिः

यद्येकस्मिन्धिष्ण्ये जाता दुहितरोऽथवा पुत्राः ।।
पित्रोरंतकरा स्युर्यद्यपरे प्रीतिरतुला स्यात् ।।१०६।।

अर्थ–पिता के नक्षत्र में उत्पन्न हुआ पुत्र अथवा कन्या पिता का नाश करते हैं अन्य के नक्षत्र में उत्पन्न होय तो बहुत प्रीति बढ़ाते हैं।।१०६।।

तथा च भगवान् गार्गिः

यस्यैव जन्मनक्षत्रे भ्राता जायेत वा सुतः ।
सजातोवाऽत्मनोभ्रातुःपितुःप्राणान्हरेद्ध्रुवम् ।।१०७।।

अर्थ–जो बालक जिसके नक्षत्र में पैदा होय भाई या बहन होय वह बालक अपना या दूसरे के प्राणों का अवश्य नाश करता है।।१०७।।

अथ शांतिविधानमाह

तत्र शांतिं प्रवक्ष्यामि सर्वाचार्यमतेन तु ।

अग्नेरीशानभागे तु नक्षत्रप्रतिमां ततः ।।१०८।।
तन्नक्षत्रोक्तमार्गेण चार्चयेत्कलशोपरि ।
रक्तवस्त्रेण संछाद्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।।१०९।।
स्वस्वशाखोक्तमार्गेण कुर्य्यादग्निमुखं तथा ।
अनेनैव तु मंत्रेणा हुनेदष्टोतरं शतम् ।।११०।।
प्रत्येकं समिधः साज्यैः प्रायश्चित्तान्तमेव च ।
अभिषेकं ततः पित्रोः कुर्य्यादाचार्य्य एव च ।।१११।।
वस्त्रालंकारगोदानैराचार्य्यं पूजयेत्ततः ।
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यान्माषमात्रं सुवर्णकम् ।।११२।।
देवताप्रतिमादानं धान्यवस्त्रादिभिः सह ।
पानशय्यासनादीनि दद्याद्दोषप्रशांतये ।।११३।।
भोजयेद्ब्राह्मणान्सर्वान्वित्तशाठ्यविवर्जितः ।।११४।।

अर्थ–तिसके वाद शांति कहता हूं। सब आचार्य्यों के मत करके आग्नेय वा ईशान भाग में नक्षत्र की प्रतिमा स्थापन करै।।१०८।। उसी नक्षत्र के अनुसार प्रतिमा को कलश के ऊपर पूजन करे लाल वस्त्र करके आच्छादित कर दो वस्त्रों करके वेष्टन करै।।१०९।। अपनी अपनी शाखा के अनुसार अग्निमुख होकर पूजन करे इन मंत्रों करके अष्टोत्तरशत होम करे।।११०।। हर एक की समिधें घृतसहित हवन करै, प्रायश्चित के अंत में आचार्य्य पिता माता का अभिषेक करै।।११।। वस्त्र अलंकार गोदान कर आचार्य्य का पूजन करे, ऋत्विक् ब्राह्मणों को दक्षिणा तीन तीन मासे सुवर्ण देय।।११२।। नक्षत्रदेवता की प्रतिमा का दान धान्य वस्त्रादिसहित करै पान शय्या आसन आदि दान करै और भोजन का दान दोष की शांति के लिये करै।।११३।। पीछे सब ब्राह्मणों को भोजन करावे वित्त से ज्यादे नहीं।।११४।।

अथ त्रीतरशांतिरुच्यते

सुतत्रये सुता चेत्स्यात्तत्त्रये वा सुतो यदि ।
मातापित्रोः कुलस्यापि तदारिष्टं महद्भवेत् ।।११५।।
जातस्यैकादशाहे वा द्वादशाहे शुभे दिने ।
आचार्य्यमृत्विजोवृत्वा ग्रहयज्ञपुरः सरम् ।।११६।।
ब्रह्मविष्णुमहेशेंद्रप्रतिमाः स्वर्णनिर्मिताः
पूजयेद्धान्यराशिस्थाः कलशोपरि भक्तितः ।।११७।।
पंचमे कलशे रुद्रं जपेत्तद्रुद्रसंख्यया ।
रुद्रशक्तानि चत्वारि शांतिंसूक्तानिसर्वशः ।।११८।।
द्विज एको जपेद्धोमकाले शुचिसमाहितः ।
आचार्य्यो जुहुयादत्र समिदाज्यं तिलांश्चरुम् ।।११९।।
अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा विंशतिस्तु वा ।
देवताभ्यश्चतुर्वक्त्रादिभ्यो ग्रहपुरः सरम् ।
कांस्याज्यवीक्षणं कृत्वां शेषं पूर्ववदाचरेत् ।।१२०।।

अर्थ–जिस मनुष्य के तीन पुत्र होने के वाद चौथी कन्या पैदा होय अथवा तीन कन्याओं की उत्पत्ति के उपरांत चौथा पुत्र होय तो माता पिता और कुल को वहुत रोग करता है।।११५।। जिस दिन वालक उत्पन्न होय उससे ग्यारहवें अथवा बारहवें दिन या किसी शुभ दिन में आचार्य और ऋत्विज ग्रहयज्ञ पहिले करै।।११६।। ब्रह्मा विष्णु महेश इंद्र की सुवर्ण की प्रतिमा बनाकर अन्न की ढेर के ऊपर कलश स्थापन कर उस पर मूर्तिदेवताओं की स्थापना कर अपनी भक्ति करके पूजन करे।।११७।। पांचवें कलश पर शिवजीको स्थापन कर ग्यारह हजार जप करके रुद्रसूक्त करके चारों देवताओं की शांति सूक्त से पूजन

करे॥११८॥ होमकाल में एक ब्राह्मण पवित्र होकर आचार्य्य हवन करे समिध और घृततिल के चरु करके एक हजार और आठ आहुति देय अथवा एक सौ आठ आहुति देय वा अट्ठाईस आहुति देवे ब्रह्मा को आदि लेकर चार देवताओं का पूजन कर ग्रहयज्ञ पहिले करके कांसी के पात्र में घृत भरके उसमें मुख देख कर दान करे और सब पूजन पहिले जो विधि कहि आये उसकी माफिक करे॥११९॥१२०॥

अथ प्रसवविकारमुच्यते

हीनकालेऽधिके काले प्रसवे सति योषिताम् ।
असंख्यदिवसे युग्मे प्रसवे चापि नाशनम् ॥१२१॥
अमानुषाणि चांडानि जायंतेऽन्यांडजानि च ।
हीनांगाश्चाधिकाङ्गाश्च अनंगाः संभवंति वा ।
विशिरोद्वित्रिशिरसो विमुखाः पक्षिसंनिभाः ॥१२२॥

अर्थ–जिस मनुष्य की स्त्री थोड़े काल में अथवा ज्यादे काल में संतान पैदा करे अथवा असंख्य दिनों में संतान उत्पत्ति करे अथवा प्रसव नाश करै॥१२१॥ मनुष्यके विना और कुछ उत्पन्न करे अंडे की वा पक्षियों की उत्पत्ति करै हीनाङ्गः वा अधिकाङ्ग वा अङ्गहीन संतान पैदा करै॥ शिरहीन वा दो तीन शिर की मुख हीन वा पक्षिसदृश संतान उत्पन्न करै॥१२॥

अथ प्रसवविकारफलम्

विनाशं तस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ।
मासत्रयांतरे नूनं परचक्रागमं वदेत् ॥१२३॥

अर्थ–जिस देश में इस प्रकार की संतान उत्पन्न होय तो उस देश का नाश करे और जिस कुल में उत्पन्न होय उस कुल का नाश करे तीन महीने के भीतर पराई फौज का उस देश में आगम होय॥१२३॥

अन्यप्रसवविकारमाह

अप्राप्ते वयसि भ्रूणो द्विचतुष्पात्त्रिपादपि ।
अत्युच्चान्विनतांश्चापि संतानं प्रसवेद्यदि ।।१२४।।
विमुखान्पक्षिसदृशांस्तथार्द्धपुरुषांश्च वा ।
बडवां हस्तिनीं गां वा यदि पुत्रं प्रसूयते ।।
विमुखां विकृतां वापि षड्भिर्मासैस्त्रिपक्षकैः ।।१२५।।

अर्थ–जिस स्त्री की उमर गर्भ लायक न होय और उसके गर्भ स्थित हो जाय, द्विपाद वा चतुष्पाद वा त्रिपाद संतान उत्पन्न करे अत्यन्त ऊंची वा अत्यन्त नीची इस प्रकार की संतान पैदा करे।।१२४।। मुखहीन वा पक्षिसदृश अथवा आधा पुरुष आधा और घोड़ा हस्तिनी गौ के आकार समान अथवा दो संतान पैदा करै इस प्रकार की संतान जहां पैदा होय तो मनुष्यहीन देश छः मास वा तीन पक्ष में कर देती है।।१२५।।

अथ प्रसवविकारशांतिरुच्यते

त्यक्तव्याः परदेशेषु भार्य्यास्ताः स्वहितार्थिना ।
त्यक्त्वा दिवानिशं होमं पूर्वोक्तं कारयेज्जपम् ।।१२६।।
प्राजापत्येन मंत्रेण समिदाज्यं चरुं क्रमात् ।
द्विजान्संतर्पयेदन्नैर्ग्रहशांतिं च कारयेत् ।।१२७।।
हुत्वा च तर्पयेद्विद्वान्बहुस्वर्णसुभोजनैः ।
एवं यः कुरुतेसम्यक् तस्माद्दोषात्प्रमुच्यते ।।१२८।।

अर्थ–बुद्धिमान को चाहिये ऐसी विकृत संतान उत्पन्न करनेवाली स्त्री को परदेश में त्याग दे अर्थात् भेज दे जो अपने हित की चाहना होय तो त्याग करने के उपरांत दिनरात होम करे और पूर्वोक्त जप करवावे।।१२६।। प्राजापत्य मंत्र करके समिध घृत का चरु से क्रम करके

हवन करे, ब्राह्मणों को अच्छे अन्न भोजन कराके तृप्ति करै ग्रहों की शांति करे।।१२७।। हवन करने के बाद पंडितों को बहुतसा सोना और अच्छे भोजन देकर प्रसन्न करे ऐसी विधि से जो भले प्रकार करे तो तिस दोष से छूट जाय फिर स्त्री को ग्रहण करै।।१२८।।

अथ सूर्यचन्द्रग्रहणसमयजननशांतिः

ग्रहणेचंद्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ।
व्याधिपीडा तथा स्त्रीणामादौ तु ऋतुदर्शनात् ।।१२९।।
शांतिं तासां प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया ।
यस्मिन्नृक्षे विशेषेण ग्रहणं संप्रजायते ।।१३०।।
तदृक्षाधिपते रूपं सुवर्णेन प्रकल्पयेत् ।
यथाशक्त्यनुसारेण वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।।१३१।।
सूर्य्यग्रहे सूर्यरूपं सुवर्णेन स्वशक्तितः ।
चांद्रं चंद्रग्रहे धीमान् रजतेन विशेषतः ।।१३२।।

अर्थ–जिस बालकी की उत्पत्ति सूर्य चंद्रग्रहण के समय होय तो व्याधिपीड़ा को करते हैं, अथवा ग्रहणसमय में आदि ऋतु स्त्री का होय तो स्त्री को बड़ी पीड़ादायक जानो।।१२९।। तिसकी शांति मैं कहता हूं, मनुष्यों के हित के लिये जिस नक्षत्र में विशेष करके ग्रहण होय।।१३०।। उस नक्षत्र के अधिपति को मूर्ति सुवर्ण की बनावे अपनी शक्ति के अनुसार वित्त से ज्यादे नहीं बनाना।।१३१।। सूर्यग्रहण में सूर्य का स्वरूप सुवर्ण का बनावे और चंद्रग्रहण में चंद्रमा का स्वरूप चांदी का बनावे विशेष करके।।१३२।।

राहुरूपं प्रकुर्वीत नागेनैव विचक्षणः ।
शुचौ देशे प्रयत्नेन गोमयेन प्रलेपयेत् ।।१३३।।

तस्योपरि न्यसेद्धान्यान्नववस्त्रं सुशोभनम् ।
त्रयाणां चैव रूपाणां स्थानं तत्र तु कारयेत् ।।१३४।।
रक्ताक्षतान् रक्तगंधं रक्तपुष्पांबराणि च ।
सूर्यग्रहे प्रदातव्यं सूर्यप्रीतिकरं च यत् ।।१३५।।
श्वेतवस्त्रं श्वेतमाल्यं श्वेतगंधाक्षतादिकम् ।
चंद्रग्रहे प्रदातव्यं चंद्रप्रीतिकरं च यत् ।।१३६।।

अर्थ--राहु का रूप बनावे सीसे का, नाग बनावे पवित्र जगह यत्न करके गौ के गोबर से लेपन करे।।१३३।। उसके ऊपर अन्नों की ढेर लगावे, नया कपड़ा शोभायमान तीनों रूपों को तीन जगह स्थान में स्थापन करे।।१३४।। लाल अक्षत लाल गंध लाल पुष्पादिकों करके सूर्यग्रह का दान करै सूर्य की प्रीति के लिये।।१३५।। सफेद कपड़ा सफेद पुष्पों की माला सफेद गंध अक्षतों करके चंद्रमा का दान देय चंद्रमा की प्रीति के लिये।।१३६।।

राहवे चैव दातव्यं कृष्णपुष्पांबरादिकम् ।
दद्यान्नक्षत्रनाथाय श्वेतगंधानुलेपनम् ।।१३७।।
सूर्य्यं संपूजयेद्धीमानाकृष्णेनेतिमंत्रतः ।
चंद्रग्रहेर्कपालाशैः समिद्भिर्जुहुयान्नरः ।।१३८।।
दूर्वाभिर्जुहुयाद्धीमान्राहोः संप्रीणनाय च ।
समिद्भिर्ब्रह्मवृक्षोत्थैर्भेशाय जुहुयात्ततः ।।१३९।।
पंचगव्यैः पंचरत्नैः पंचत्वक्पंचपल्लवैः ।
जलैरोषधिकल्कैश्च सहितैः कलशोदकैः ।।१४०।।

अर्थ–राहुग्रह के अर्थ काले पुष्प श्याम वस्त्रादिकों करके पूजन करना चाहिये और जिस नक्षत्र में ग्रहण हो उस नक्षत्र के स्वामी के लिये सफेद गंध लेपन वस्त्रादि करके पूजन करै।।१३७।। सूर्य का पूजन

बुद्धिमान् (आकृष्णेति) मंत्र करके करे। चंद्रमा के लिये आक और ढाक की समिधा करके हवन करै।।१३८।। और राहु ग्रह के अर्थ बुद्धिमान् दूर्वा करके हवन करे और नक्षत्राधिपतिके लिये पीपलकी समिधों करके हवन करै।।१३९।। पंचगव्य पंचरत्न पंचपल्लव तीर्थजल सर्वौषधि कुम्भ में डालकर पूजन करै।।१४०।।

अभिषेकं प्रकुर्वीत यजमाने च यत्नतः ।
मंत्रैर्वारुणदैवत्यैरापोहिष्ठादिभिस्त्रिभिः ।।१४१।।
इमं मे गंगे पितरस्तत्वायामीति मंत्रकैः ।
अभिषेके निवृत्ते तु यजमानः समाहितः ।।१४२।।
आचार्यं पूजयेत्पश्चात्सुशांतो विजितेंद्रियः ।
तस्मै दद्यात्प्रयत्नेन भक्त्या प्रतिकृतित्रयम् ।।१४३।।
दक्षिणाभिश्च संयुक्तमात्मशक्त्यनुसारतः ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा तु प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।।१४४।।

अर्थ–यजमान को यत्न करके अभिषेक करे वरुण देवताओं के मंत्र करके [आपोहिष्ठा] दि तीन मंत्रों करके।।१४१।। [इमंमे गंगे पितरस्तत्वाया] मंत्र करके अभिषेक से निवृत्त होने के बाद यजमान भले प्रकार।।१४२।। आचार्य का पूजन करे शांतस्वभाव जितेंद्रिय हो यजमान आचार्य के अर्थ यत्न करके भक्ति करके तीनों मूर्ति देवे।।१४३।। दक्षिणा करके संयुक्त अपनी शक्त्यनुसार ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर दंडवत् करके विसर्जन करे।।१४४।।

तेभ्यश्च दक्षिणां दद्याद्यजमानः समाहितः ।
अनेन विधिना शांतिं कृत्वा सम्यग्विशेषतः ।।१४५।।
अकालमृत्युशोकं च व्याधिपीडां न चाप्नुयात् ।
सौख्यं सौमनसं नित्यं सौभाग्यं लभते नरः ।।१४६।।

इत्थं ग्रहणजातानां सर्वारिष्टविनाशनम् ।
कथितं भार्गवेनेदं शौनकाय महात्मने ।।१४७।।

इति श्रीभृगुप्रणीते स्त्रीजातके ग्रहणजननशांतिवर्णनं
नाम सप्तदशोऽध्यायः ।।१७।।

अर्थ–तिन ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर यजमान सावधान होकर इस विधि करके भले प्रकार शांति करै।।१४५।। उसको अकालमृत्यु शोक व्याधि पीड़ा नहीं होती हैं उसके मन में सौख्य नित्य ही सौभाग्य लाभ होता है।।१४६।। इस प्रकार ग्रहण में उत्पन्न हुए मनुष्यों का सर्वारिष्ट निवारण करने को शौनक महात्मा के आगे शुक्र जीने वर्णन करा है।।१४७।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-
हिन्दीटीकायां ग्रहणजननशांतिवर्णनं नाम
सप्तदशोऽध्यायः ।।१७।।

अथ वंशाध्यायप्रारंभः

रम्ये वंशवरेलिकाख्यनगरे ज्योतिर्विदामग्रणी-
श्चासीद्रामनदीसदुत्तरतटे गोविंदरामाभिधः ।।
तस्मात्प्रापजनिंमहेशचरणांभोजैकभृंगःशुचिस्तंत्राम्भो-
निधिपारगः खलुघनश्यामाभिधः पंडितः ।।१।।

अर्थ–रमणीकवाँस बरेली नाम नगर में ज्योतिर्विदों में अग्रणीय रामगङ्गा के उत्तर किनारेपै गोविंदराम है नाम जिनका तिन करके प्राप्त हुई है उत्पत्ति जिनकी शिवजी के चरणकमल के भ्रमर अतिपवित्र तंत्रशास्त्र समुद्ररूप के पार जानेवाले निश्चय करके घनश्याम नाम पंडित हुए।।१।।

तत्पुत्रो बलदेव उत्सवरतः सद्भक्तिभावोऽभवत्
सूनुस्तस्य महीपपूजितपदः श्रीश्यामलालाभिधः ।।
दैवज्ञोऽभिमतः सतां रचयिता ग्रंथान्सुटीकायुतान् ।
सोयं स्त्रीप्रणयेन जातकमिदं कर्तुं प्रवृत्तोऽभवत् ।।२।।

अर्थ–तिनके पुत्र बलदेवप्रसाद श्रीकृष्ण के उत्सवों में तत्पर अच्छी भक्ति भाववाले होते हुए पुत्र जिनका राजाओं करके पूजित हैं चरणकमल जिसके श्यामलाल ज्यौतिषिक सत्पुरुषों का प्यारा टीकासहित ग्रंथों का रचनेवाला सो श्यामलाल स्त्री के प्यार करके यह स्त्रीजातक करने को प्रवृत्त होता हुआ।।२।।

स्त्रीजातकमखिलमिदं भूधरभूताङ्कभूमिते वर्षे ।
जातंकृष्णकृपातश्चैत्रेकृष्णे दले द्वितीयायाम् ।।३।।
असमंजसमिह विबुधैर्जातं यन्मन्मतैर्दोषात् ।
रोषात्तन्न विरोध्यं शोध्यं बोध्यं क्षमासारैः ।।४।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौति-
षिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके स्ववंशवर्णनं
नामाष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

अर्थ–यह स्त्रीजातक सम्पूर्ण भूधर ७ भूत ५ अंक ९ भूमिते १ अर्थात् १९५७ के वैक्रमीय संवत् में श्रीकृष्ण की कृपाते पूरा हुआ चैत्रमास कृष्णपक्ष द्वितीया को।।३।। हे विद्वानो! जो मेरी मति करके अशुद्धता होय उस पर क्रोध न करना क्षमा करके शोधना और शिष्यों को समझाना।।४।।

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौति-
षिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीहिन्दीटीकायां वंशवर्णनं
नामाष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.